

पल्लवी प्रकाशन

निर्विकल्प

Thoughtful passages from the literary corpora of Shri Jagdish Prasad Mandal

Compilation by

डॉ. उमेश मण्डल

निर्विकल्प

निर्विकल्प

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

सङ्कलन एवम् सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

NIRVIKALP (निर्विकल्प)

Compilation by Dr. Umesh Mandal of Select Thoughtful passage of Shri. Jagdish Prasad Mandal

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

दाम : 200/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-93135-02-5

पोथीक मादे किछु अप्पन बात

आइ 21 जून 2022 मंगल दिन छी, चारिम दिन अर्थात् 25 जून 2022क शनिदिन, ननौर गामक मध्य विद्यालय परिसरमे 'सगर राति दीप जरय'क 109म कथा गोष्ठी आयोजित अछि, जइमे प्रस्तुत पोथी 'निर्विकल्प'क लोकार्पण सेहो होमए जा रहल अछि। बीचमे बँचल मात्र तीनटा दिन अछि। ई तँ कम्प्यूटरेकेँ धन्यवाद दिऐ जे आब तीनियोँ दिनमे लोक पोथी छपाइ सम्बन्धी काज सम्पन्न कऽ सकैए।

'निर्विकल्प' अर्थात् जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचित रचना संसारसँ सङ्कल्ति विचारोत्तेजक गद्यांश संग्रह। जे मात्र तीन दिनक पेसतर प्रिन्ट सम्बन्धी यात्रा तय केलक अछि। आब अहाँ यएह ने कहीं सोचए लागी जे एहेन कोन लौल भेल जे एते धड़फड़ीमे पोथी प्रकाशित कराएब, तहूमे ओहन पोथी (विधा) जेकर कोनो चर्च नहि। माने गद्यांश सङ्कलन कोन विधा भेल, इतिहासमे एकर की स्थान अछि? आदि-इत्यादि। मुदा हमर मानब अछि, 'रूईसँ तिनका भला', माने जैठाम अहाँ बैसियेकऽ समय बिताबी, किछु करबे ने करी, तैठाम किछु करबकेँ नीक मानब। तहूमे ओहन साहित्यकारक गद्यमे आएल विचारक सङ्कलन जे 'आजुक जीवन आजुक साहित्य'केँ प्रमाणित करैत समयक संग धाराप्रवाह चलैत जा रहल अछि, बढ़ैत जा रहल अछि। जनिका सम्बन्धमे स्थापित ओ वरीय साहित्यकार श्री मन्त्रेश्वर झा (आई.ए.एस.) लिखने छैथ- "जइ गाम घरक कथा सभ मण्डलजी उठाए ओकरा परिणति तक पहुँचओने छथि तइ गाम घरक एतेक सूक्ष्म आ विस्तृत विवरण मैथिली साहित्यमे एहिसँ पूर्व कमे भेल अछि।"

क्रमशः जगदीश प्रसाद मण्डलजीक विषयमे हिनक 'जिनगीक जीत' उपन्यासक आमुखमे मैथिलीक सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. तारानंद 'वियोगी' कहनाम छैन- "जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यमे मिथिलाक ग्रामीण समाजक अद्भुत चित्र आएल अछि। मैथिलीमे एहि वस्तुक खगता सभ दिनसँ

रहल अछि। हमरा लोकनि अक्सरहां चिन्तित होइत रहै छी जे गाम उजरि रहल अछि, गामक सम्बन्धमे जतबे जे किछु लेखन भऽ रहल अछि से निगेटिभ फोर्ससँ भरल अछि, अधिकाधिक हताश करऽ बला अछि। हमरा लगैत अछि जे जीवनकेँ देखबाक जे दृष्टिकोण जगदीशजीक छनि से आम मैथिली साहित्यकारक दृष्टिकोणसँ फराक छनि तेँ ओ एहन चित्र रचि पबैत छथि जे सामान्यसँ हटि कऽ अछि।"

अहिना मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध रचनाकार ओ आलोचक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र सेहो हिनका-दे माने श्री जगदीश प्रसाद मण्डल-दे लिखलैन अछि- "एहेन रचना अगर मैथिली साहित्यमे लगातार हो आ ऐ तरहक रचनाक प्रचार-प्रसार नीकसँ कुनो जाति-पाति, वर्ग, सम्प्रदाय, स्थानीयता आदिक दुर्भावनासँ दूर भऽ कएल जाए तँ मैथिली साहित्य महिमा-मण्डित भऽ एक गौरवशाली परम्पराकेँ प्रारम्भ कऽ सकैत अछि।"

कोनो रचनाक मूल्याङ्कन समय करैत अछि। समयानुकूल रचना छी वा नहि, ई समय आँकि बुझल जा सकैए। मुदा से आंकएबला सबहक काज छिऐन। अपने एकटा अदना आदमी छी, ई किनकोसँ छुपल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। हँ, तखन शोध कार्यसँ सम्बन्धित जे अपना ऊपर जिम्मा अछि तइमे जखन जेना जे कए पेबाक बल पबै छी ओ करबाक चेष्टा जरूर करैत रहल छी।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन रचनाकेँ अपना धारणानुकूल ओहन मूर्त्तरूपमे गढ़ए चाहि रहला अछि जे भूत, वर्तमान ओ भविष्य- तीनू समयमे अपन रूप बना ठाढ़ रहए। कोनौं समस्याक जड़ि वर्तमान रहितो ओ भूत बनि जाइए, तँए भूतोकेँ पकैड़ राखए पड़त, वर्तमान तँ सहजहि प्रत्यक्ष अछिए जे सामाजिक धारा शुद्ध-अशुद्ध करैत चलिते अछि, जैपर भविष्यक भवन ठाढ़ होइत अछि। ओना, मण्डलजीक सोच ईहो छैन जे जिनगी नम्हरो होइए माने महीनो-वर्षबला होइए आ एकदिना सेहो होइत अछि। एकदिना जिनगी भेल एक घटनाक जीवन। ओना, एहेन-एहेन घटना जिनगीक बीच चलिते रहैए, किएक तँ ओहन घटना फेर जीवनमे दोहरा कऽ अबितो अछि आ नहियोँ अबैए। एहेन जे जीवन अछि ओहो ने जीवने भेल। मण्डलजी मूलत: जीवनक

रचनाकार छैथ। ओ बेकतीगत जीवनसँ आगू बढ़ि सामाजिक जीवनकेँ विशेष महत्व दैत रहला अछि, तँए हिनक सभ रचना सामाजिक रूप धारण केने रहै छैन।

उपरोक्त सन्दर्भमे 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (www.videha.co.in) केर सम्पादक साहित्यकार श्री गजेन्द्र ठाकुरक कहब सेहो विचारणीय ओ युक्तिसंगत बुझि पड़त जे निम्नवत अछि-

"जगदीश प्रसाद मण्डलक कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरूद्ध पारम्परिक आजीविकाक गौरव महिमा मण्डित भेटैत अछि। आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर बेकतीगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी; सएह लिखै छी तइ कारणसँ।"

गजेन्द्र ठाकुरजी 2012 इस्वीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक वायोग्राफी लिखि चुकल छैथ। अत: ओ जहिना मण्डलजीक जीवन-शिल्प उपरोक्त वानगीमे प्रस्तुत केलैन तहिना हुनक रचना-शिल्पक सम्बन्धमे कहलैन अछि-

"यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखौल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक समाजिके क्षेत्रटामे नहि वरन आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्ति आनत।"

ओना तँ बहुत विद्वान-मनीषी लोकनिक कलम मण्डलजीपर चलल छैन, सम्प्रति सबहक जिक्र लेल यथोचित अवकाश नहि। तथापि जहिना प्रसिद्धि पाओल विद्वज्जन छैथ तहिना एकान्तवासमे संघर्षरत रचनाकार मण्डलजी नहि छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अत: एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक श्रेष्ठ कविक रूपमे चर्चित श्री राजदेव मण्डल जे कि एकांकी, नाटक, कविता, कथा, पटकथा, उपन्यासादि साहित्यक सभ मौलिक विधामे हिनक कलम चलैत रहलैन अछि, जगदीश प्रसाद मण्डलक 'उत्थान-पतन' उपन्यासक आमुख सेहो

लिखने छैथ। हिनक कहब छैन- “केहनो अकर्मण्य बेकती जँ पूर्ण मनोयोगक संग आर्थिक उन्नतिमे दत्तचित भऽ जाए तँ हुनक प्रगति होएब निश्चित भऽ जाइत अछि। ऐ दर्शनकेँ देखेबाक प्रयत्न लेखक (जगदीश प्रसाद मण्डल) पात्र श्यामानन्द द्वारा केलैन अछि। परिवर्तनशीलता संसारक निअम छी। सामन्तवादसँ पूँजीवाद आ पूँजीवादक गर्भेसँ समाजवादक जन्म सेहो होइत अछि। ई अलग बात जे पूँजीवादसँ साम्राज्यवाद सेहो पनपैत अछि।”

उपरोक्त वानगी सदृश एक आर वानगी जज साहैबक उद्धृत करब आवश्यक बुझै छी। जज साहैबक माने श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र, जे मैथिली साहित्यमे अपन बेछप स्थान बना चुकल छैथ। कथा, कविता, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा वृतान्त, शोध आलेख आदि अनेको विधामे नियमित लिखएबला साहित्यकार छैथ। ओ अपन ब्लॉग ‘भोरसँ साँझ धरि’मे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक ‘लहसन’ उपन्यासक समीक्षा करैत लिखने छैथ-

“श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘लहसन’ उपन्यासकेँ पढ़लासँ पाठक थोड़बे कालमे समाजक निम्नतम पौदानपर ठाढ़ लोकक जिनगीक बारेमे बहुत किछु बुझि सकैत छथि। किछु एहन करबाक प्रेरणा प्राप्त कए सकैत छथि जाहिसँ मेवालाल सन-सन गरीब लोकसभकेँ गाम छोड़ि कलकत्ता सन महानगर पलायन नहि करय पड़नि। एहिसँ प्रेरणा लए समाजक समृद्ध लोकनि किछु करथि जाहिसँ गाम-घरसँ पलायन बन्द होअए आ गाम एकबेर फेर पल्लवित-पुष्पित भए जाए।”

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक रचना संसार सङ्कलित विचारोत्तेजक गद्यांशक ई तेसर पोथी छी। पहिल ‘हेण्डबुक सँ फेसबुक धरि- 2021’, दोसर ‘समस्यासँ समाधान धरि- 2022’ आ तेसर सद्य प्रकाशित ‘निर्विकल्प’, जे अपने सबहक हाथमे अछि। ओना, ‘देवाश्रम’केँ सेहो एतत्सम्बन्धित पोथी मानल जा सकैए, जे कि विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन छी। 2019 इस्वीमे ‘देवाश्रम’क 35 खण्ड-ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि।

प्रत्येक मनुक्खक अपन-अपन स्थिति-परिस्थित होइते अछि। अपनो किछु तेनाहे सन अछि जइ कारणेँ भरि दिन पानिमे रहैत नहाइक सोभाग्यसँ बञ्चित रहए पड़ैए। मुदा जँ अन्तिमो समयमे, माने पानिसँ निकलैयोकाल अर्थात्

जहिना मलाह भरि दिनक काजसँ निचेन भऽ, पोखैरसँ निकैल जखन अपन घर जाइ छैथ, तखनो जँ मनमे आबि जानि- जा.! नहेलौं कहाँ.? आ नहाइक जएह सुविधा-साधन, स्थिति-परिस्थिति रहए, जँ तहूमे नहा ली तँ कोन अधला। बस यएह चीज मनमे आएल आ लागि गेलौं काजमे। समयक आँट-पेटकेँ देखैत पुन: विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलनकेँ प्रकाशित करबैक विचार तँइ केलौं। सोशल मिडियापर माने फेसबुकपर सम्बन्धित काज प्राय: नित्य-नूतन किछु-ने-किछु करिते रहै छी, ओही सभकेँ समेट एकटा सङ्कलित रूपमे ‘निर्विकल्प’ लऽ कऽ उपस्थित भेलौं अछि। बिसवास अछि प्रोत्साहित करबे करब।

प्रोत्साहनक परिपेक्ष्यमे अपन एक गुरु-भाइक चर्च कए रहल छी, ओ छैथ हमर ब्रह्मानन्द भायजी अर्थात् श्री ब्रह्मानन्द प्रसाद जे अखन दिल्लीमे ओकालत कए चैनसँ जीवि रहला अछि, चैनसँ ई जे ओ अनका जकाँ दिल्लियेला नहि माने अपन गाम, अप्पन विचार आ अप्पन समाज (गामक समाज)केँ बिसैर नहि गेला। गामक ब्रह्मानन्द भायजी आइयो बनले छैथ। बेरमाक करीब-करीब सभ गतिविधिमे गामक संग रहैक विचार जे ब्रह्मानन्द भायजीमे शुरूसँ रहलैन ओ अखनो व्याप्त छैन्हे जे उत्तरोत्तर बढ़िते जा रहल छैन। भाय, गप्पेटा सँ काज नहि चलत, गप्पेटाक अर्थ मात्र गप बुझब, काज काज होइ छै, ओ बेवहारसँ जोड़ल रहैत अछि जइमे लोक अवधारित भऽ अपन कल्याणक मार्ग प्रशस्त करैए वा अपन-अपन मनक मनराज बना जीवन-वसर करए चाहैए। राज कोनो रहह, मुदा नीक वएह ने जइ राज्यक लोक वैचारिक संग बेवहारिक सेहो हुअए। खाएर जेतए जे हुअए। हमरा अपन गप कहबाक अछि। ब्रह्मानन्द भायजी जहिना काल्हि डेग-मे-डेग मिलाकऽ चलैत अपन छोट भाए सदृश बुझैत-बुझबैत रहला, तहिना आइयो बुझै छैथ। ओहिना बुझबैत, ओहिना प्रोत्साहित करैत रहै छैथ। ई हमर सौभाग्य अछि जे हमरा जहिया जेतए जे कियो अप्पन बुझि पड़ला ओ आइयो नहि बुझि पड़ि रहला अछि से नहि। बीचमे समय ओ परिस्थिति विशेषक अपन प्रभाव देखले जा सकैए।

श्री ब्रह्मानन्द प्रसाद, मगध विश्वविद्यालय, बोधगयासँ अंग्रेजी विषयमे ऑनर्स केलाह। पछाइत दिल्ली विश्वविद्यालयसँ ओकालतिक अहर्ता प्राप्त कए

दिल्ली उच्च न्यायालयमे ओकालति कऽ रहला हेन। ओ हमर जहिना दोस्त छैथ तहिना गुरु सदृश ज्ञान सेहो देने छैथ तँए ब्रह्मानन्द भायजी-दे गुरु-भाय शब्दक प्रयोग केलौं। अहाँकेँ खुशी होएत जे ऐ पोथीक लोकार्पण हेतु हुनका कहलयैन। जे भायजी निर्विकल्पक लोकार्पण अहीं करबै। तैपर ओ बजला जे 'लोकार्पणक अर्थ साधारण थोड़े अछि।' हम चुप रहि गेलौं। की सोचि बजला से तँ ठीकसँ नहि बुझि पेलौं। हमरा चुप देखि ओ पुन: बजला- '100 प्रति पोथीक केतेक दाम भेल, लोकार्पणक पछाइत पोथी-वितरण हमरा दिससँ हुअए।'

स्पष्ट अछि 'निर्विकल्प'क लोकार्पणक संग वितरण/अर्पण श्री ब्रह्मानन्द प्रसादजीक सौजन्यसँ होएत। ऐ तरहक प्रोत्साहनसँ आह्लादित हएब सोभाविक।

'निर्विकल्प'क आरम्भ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जीवनीसँ कएल गेल अछि। श्री गजेन्द्र ठाकुर द्वारा 'जगदीश प्रसाद मण्डल एकटा वायोग्राफी' 2012 इस्वीमे श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल अछि। पछाइत 'आएल आशा चलि गेल'क संग 'भरि मन काज', 'संचरण', 'जीवनक कर्म जीवनक मर्म', 'नीक ठकान ठकेलौं', 'घरक खर्च', 'अन्तिम परीक्षा', 'गामक सूरत बदैल गेल', 'कर्ताक रंग कर्मक संग', 'रहै जोकर परिवार', 'हारल चेहरा जीतल रूप', 'कृषियोग', 'पसेनाक मोल', 'गामक आशा टुटि गेल', 'भौक', 'समयसँ पहिने चेत किसान', 'गामक जिनगी' आदि कथा संग्रहसँ आ किछु उपन्याससँ सेहो गद्यांश सङ्कलित सामग्रीकेँ दू तरहक फोन्ट-साइजमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। जइमे विचारोत्तेजक वा भावोत्तेजक तथ्यक फोन्ट-साइज किछु नम्हर अछि। संगहि कोन तथ्य केतएसँ अर्थात् कोन पोथीसँ वा रचनासँ आनल, तेकरो विवरण सन्दर्भ-साभारमे अङ्कित करबाक कोशिश कएल अछि। रचनाकारक प्रति सादर आभार व्यक्त करैत अपन बातमे विराम लगा रहल छी। धन्यवाद.! प्रणाम.!!

जय मैथिली.! जय साहित्य.!! आजुक जीवन आजुक साहित्य!!

- उमेश मण्डल

निर्मली (सुपौल)

21 जून 2022

परिचय : उमेश मण्डल

जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार), माता-पिता : श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पत्नी : श्रीमती पूनम मण्डल, सन्तान: पल्लवी मण्डल, तुलसी कुमारी, मानव अनीश मण्डल, शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए. (प्रतिष्ठा) 2001 इस्वीमे, एल. एन. जनता कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ, एम.ए. 2012 इस्वीमे आ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) 2015 इस्वीमे तथा शोध–पीएच.डी.–'मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे परिवर्तनक स्वर', 2021 इस्वीमे, बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुरसँ।

प्रकाशित कृति : (1) निश्‍तुकी (पद्य संग्रह, 2009), (2) संस्कार गीत (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक सङ्कलन, 2010)। (3) 'मिथिलाक जीव-जन्तु', (4) 'मिथिलाक वनस्पति' आ (5) 'मिथिलाक जिनगी' (डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, 2011)। (6) विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह, (7) विदेह मैथिली बीहनि कथा संग्रह, (8) विदेह मैथिली पद्य संग्रह, (9) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना, (10) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव तथा (11) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (संग सम्पादन कार्य, 2012 इस्वीमे)। (12) टुटैत मनक जुड़ाव (कथा संग्रह, 2018), (13) पंचदेव (100 खण्ड-ग्रन्थ, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक सङ्कलन, 2018), (14) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद, 2018, मूल लेखक- श्री गीतेश शर्मा), (15) दुध-पानि फराक-फराक (कथा-पाण्डुलिपि-छाया-संस्करण, 2018), (16) देवाश्रम (35 खण्ड-ग्रन्थ, विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन, 2019), (17) मुक्तपुरुष (शोध आलेखक संग्रह, 2021)। (18) हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि, (19) समस्या

सँ समाधान धरि, (20) निर्विकल्प, (21) अभ्यन्तर आ (22) जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलन, क्रमश: 2021-2022 इस्वी), (23) जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण, 2022)।

संस्थापक : पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल), योगदान : प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 09 दर्जन पोथीक मुद्रण एवम प्रकाशनक अलावे अनेको अन्य रचनाकारक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अक्षर संयोजन अवैतनिक। ‘सगर राति दीप जरय’क 80म, 88म, 100म (शतांक) आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अलावे दर्जनो परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन। ठाम-ठाम दर्जनो मैथिली पोथी-प्रदर्शनी।

सम्मान/पुरस्कार : (1) विदेह युवा पुरस्कार (2013 इस्वीमे, निश्तुकी पद्य संग्रह लेल), (2) सहयोग पुरस्कार (2021 इस्वीमे, शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास- हैदरावादसँ) तथा (3) लोकचिन्तन विशिष्ठ सेवा सम्मान- 2022

स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट- बेरमा, वार्ड नं.: 03,भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, बिहार- 847410, सम्प्रति: तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार- 847452

जहिना पोथी-पतराक दशा भेल तहिना राजनीतिक मंचपर गाँधीवादक दशा भेल। एक्के बात, एक पाँतिक व्याख्या, मुदा जेते-मुँह तेते रंगक हुअ लगल। जरूरत अछि जे ऐ समस्याक समाधान मजगूतीसँ कएल जाए, नहि तँ मूड़न आ सराधक भोजमे कोनो भेद नै रहत।

जगदीश प्रसाद मण्डल बी.ए. पार्ट-1 केलैन आ करिते 1967 ईस्वीक आम चुनाव आएल। जहिना कांग्रेस पार्टी जन-समूहसँ हटि किछु खास जातिक पार्टी बनि रहल छल तहिना आनो-आन पार्टीक स्थिति छेलइ। कम्युनिस्ट पार्टी किछु क्षेत्रमे मजगूत छल मुदा झंझारपुर इलाकामे कमजोर, मुदा तैयो ई एतए जोर-सोरसँ पकैड़ रहल छल। कांग्रेसक प्रति लोकक आक्रोश बढ़ि रहल छल। सरकार विरोधी (कांग्रेस सरकार) हवा बनि रहल छल। कारणो छेलै, स्वतंत्रता आन्दोलनमे स्वतंत्र देशक जे आकांक्षा होइत अछि ओ तँ सबहक मनमे छेलैहे मुदा ओकर पूर्तिक कोनो उपाय नइ भेल। संगे-संग कांग्रेस पार्टी जनसमूहक संग छोड़ि परिवार विशेष वा जाति-विशेषमे समटा चुकल छल। ग्रामीण समाजमे स्वतंत्रताक कोनो लाभ स्पष्ट रूपेँ सोझहा नै आएल। किसान प्रधान मिथिलांचलक स्थिति आजादी पूर्वेक बनल रहल। ओना, देशेमे पंजाबक किसानक स्थिति सुधैर गेल। कारण ओइठामक सरकार कृषिकेँ प्रमुखतासँ पकैड़ पानि-बिजलीक बेवस्था कऽ लेलक। पानि आ बिजली, कृषि लेल प्रमुख साधन छी। से बिहार (मिथिलांचल)मे नै भेल। शिक्षा-बेवस्थामे सेहो जेहेन हेबाक चाही से नै भेल। संग-संग आरो बहुत कारण भेल, जइसँ विद्यार्थीक बीच सेहो आक्रोश बढ़ल। राजनीतिक चेतना बढ़ने जगौनिहारोक संख्या बढ़ल। मुदा अपनेमे लड़ने-झगड़ने सभ विरोधी पार्टीक स्थिति सेहो खरापे। नव चेतनाक संग विरोधी (कांग्रेस विरोधी) सभ राजनीतिक पार्टी एक मंचपर आएल। अंगरेजीए शासन जकाँ कांग्रेसो शासनक विरूद्ध लोक उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओना तँ देशेक, मुदा

बिहारक तँ कहले जेतै जे स्वतंत्रताक उपरान्त ई पहिल जन-जागरण छल।

सभ पार्टीकेँ एक मंचपर एने कोनो निश्चित कार्यक्रम बनब असम्भव छल, कारण एतेक जल्दिबाजीमे भइये की सकैए। तखन तँ आम-चुनाव पीठपर अछि तँए सरकार बदलैक कार्यक्रम बनल।

किसान-बोनिहारक संग बुद्धिजीवी सेहो मैदानमे उतरला। 'कांग्रेस विरोधी' हवा नीक जकाँ बनल।

अपन मधुबनी जिलामे अखन दूटा पार्लियामेन्ट क्षेत्र अछि, मुदा तइ दिनमे दरभंगे जिला छल। दुनू क्षेत्रमे कांग्रेस हारल। हारबे नै कएल, भोँटोक प्रतिशत बहुत निच्चाँ उतरल। एकसूत्री कार्यक्रम, कांग्रेस हटाउ, रहने कोनौं राज्यमे एक पार्टीक सरकार नइ बनि पएल। खिचड़ीए सरकार बिहारो, बंगालो, उत्तरो प्रदेश आ आनो-आन राज्यमे बनल। समस्यासँ ग्रसित राज्य सभ छेलैहे, केमहरसँ समस्या पकड़ल जाए, ई मुख्य समस्या छल। तैबीच चतरल-गछगर भूदानो आन्दोलन उधिआए लगल। मुदा तैयो किछु गोरे भूदानसँ राजनीतिक मंचपर एला। भूदानकेँ आन्दोलनक रूपमे ठाढ़ कएल गेल।

ओना, तेलांगनाक भूमि आन्दोलन चरमपर छल। जमीनक छअम भागक (छअम हिस्सा दान दिअ) हिस्सा मंगैक अभियान शुरू भेल। लोक लाखक-लाख बीघा दान देलैन। सबहक अनुमान भेलैन जे देशक छअम हिस्सा गरीबोक बीच औत। कोनो गामक दू प्रतिशतसँ लऽ कऽ पनरह बीस प्रतिशत तकक जमीन घर-घराड़ीमे लगै छइ। तैठाम छअम हिस्सा सोलह प्रतिशतसँ ऊपर, जमीनक आमद-खर्च दुनू भऽ गेल। भलेँ आइयो, 2012 ई.मे ढेरो परिवार एहेन अछि जेकरा चारि डिसमिल जमीन नै छै जे घरो बना सकत।

जहिना हवामे उधियाइत भूदान आन्दोलन आएल आ गेल तेकर ओते प्रभाव नै पड़ल जेते गामक एकटा गृह-उद्योग समाप्त भेने भऽ गेल। खादी-भण्डारक माध्यमसँ कारोबार चलै छल, तइमे तेना कऽ मुसहैन लागल जे अन्न-माटि दुनू एकबट्ट भऽ गेल। जेहने दाना अन्न तेहने मुसहैनिक माटि, केना बेरौल जाएत। ओना, अखनो किछु गोरे भूदानी जमीन पाबि खुशहालीक जिनगी बनौने छैथ, तहिना कपड़ोक (खादी) कारोबार चलैए, मुदा नगण्य रूपमे।

जहिना ‘लूटमे चरखा नफा’ कहल जाइ छै तहिना चरखोक नफा सठि रहल छल, मुदा अखनो बुनियादी समस्याक भीड़ कियो जाए नै चाहैत अछि। ओहन समाजो नै बनि सकल अछि। ओना, समाजो केना बनत, दुरूस्त केनिहारसँ बेसी भंगठेनिहारे अछि। बेरोजगारोक संख्या कम नै अछि मुदा ओहनो बेरोजगार तँ अछिए जेकरा मोटर साइकिल, होटल, मोबाइल होइत कपड़ा-लत्ता, भोजन-छाजन सहित बीस हजार रूपैआ महिनाक जिनगी बनि गेल अछि।

तैंतीस सूत्री कार्यक्रम लऽ कऽ मिलल-जुलल सरकार बनल। मैट्रिकक परीक्षामे अंगरेजी भाषाकेँ कमजोर कएल गेल, संग-संग हाइ स्कूल तकक शिक्षा फ्री करैक आवाज उठल।

1957 इस्वीक पछाइत अंगरेजी शिक्षा आगू बढ़ल। जइ अंगरेजीक पढ़ाइ आठमा (हाइ स्कूल) सँ शुरू होइ छल ओ मिडिल स्कूलमे प्रवेश कऽ गेल। छठासँ पढ़ाइ शुरू भऽ गेल। घीचतीड़ कऽ अठारह महिना सरकार चलल। फेर मध्यावधि चुनाव भेल। मुदा पहिलुका खिचड़ी सरकार, जे सोलहन्नी घीसँ अलग छल, ऐबेर घी-खिचड़ी सरकार बनल। समस्या-समाधानक प्रति ओते नै भेलै मुदा जन-जागरण जरूर भेलइ।

तैबीच हरित क्रान्ति कृषिमे सेहो भेल। केतौ-केतौ तँ एहेन भेल जे जइ खेतमे पाँच सेर कट्ठा होइ छल ओ खेत क्विन्टल कट्ठा उपजए लगल। मुदा अपना ऐठामक जमीनक ईहो दुर्भाग्य रहल जे खेतबला नोकरी-चाकरी करए शहरसँ विदेश धरि पहुँच गेला, मुदा खेत तँ गामेमे रहि गेलैन। बटाइक एहेन बेवहार जे बटेदारकेँ लाभ नै होइत, पाइ-कौड़ी कमेने संस्कारो तेज भेलैन। अभावमे लोक खेत बेचैए आकि पाइयो-कौड़ी रहने लोक बेचत। से पड़ले रहत। मुदा बेच कऽ बाप-दादाक नाक केना कटाएब!

तैसंग सरकारी कार्यालय कागजी झंझटक अड्डा बनल अछि। मिथिलांचलक एक-एक समस्या मिथिलावासीक छिऐन। अखनो बच्चा सबहक स्कूलमे ऐ ढंगसँ बच्चाकेँ मारल-पीटल जाइ छै जे ओ स्कूल छोड़ि दैत अछि। एक्कैसम शताब्दीमे जौं अठारहम सदीक बेवहार चलत तँ ओइसँ समुचित लाभक आशा नै कएल जा सकैए।

जगदीश प्रसाद मण्डल 1967 इस्वीक चुनावी दौड़मे जनवरी 1967 ई.मे

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य बनला। चुनावो पीठेपर रहै, मधेपुरोसँ कांग्रेस पार्टी हारल।

गाम-समाजसँ लऽ कऽ देशक राजनीति तकमे अराजक स्थिति बनए लगलै। 1957 इस्वीक केरलक वामपंथी सरकार तोड़ैमे सरकारक (कांग्रेस सरकार) साख खसल। स्वतंत्रता सेनानियोँक (आजादीक लड़ाइ लड़निहारोक) संख्यामे बहुत कमी नहियेँ भेल छल। किछु प्रखर नेता जरूर मरि गेल छला। राजनीतिक क्षेत्रमे भाए-भातिज आ जातिवाद, सम्प्रदायवाद, दल-बदल इत्यादि जोर मारलक। नेतृत्वक साख सेहो घटल। जातिवाद रूपमे जेतए जनताक साख नेतृत्वक नजैरमे खसल तेतए कोनो पार्टीक विधायक सांसद कुरता-धोती पहीरि-पहीरि लोकक बीच अबए लगला। बड़का नेताक संग छोटका नेताक बलि चढ़ए लगल, किएक तँ जाति, कुटुम, गौंआँ, पड़ोसीसँ लऽ कऽ लेन-देन तक ओकर आधार बनल। बिहारोक राजनीति जटा-जटिनक नाच जकाँ झिलहोरि खेलए लगल। प्रशासनो लाभ उठौलक। भोँटक पार्टीकेँ बिनु भोँटक पार्टी दबा-दबा शासन पकड़ए लगल। एक तँ ग्राम-पंचायत सिनेमा पोस्टर जकाँ मात्र नाम गाम छल, जेकरा मजगूत करब सभसँ अहम, मुदा देशक ई एहेन संस्था छल जेकरा आरो कमजोर बना सरकारी तंत्रक हाथमे समेट कऽ रखि देल गेल छल।

कोट-कचहरीक चलती आबि गेल, केना नै अबैत? एक दिस हारल मुखिया आ आरो-आरो सत्तासीन हुअ लगला आ दोसर दिस जनताक प्रतिनिधि सड़कपर रहि गेल। जमीन्दार-सामन्त घसाइत-घसाइत घसा गेल, गाम-गामक ओकर जमीन गौंआँक अखड़ाहा बनि गेल। जेकर लाठी, तेकर भैंसक स्थिति बनि गेल।

विचारधाराक बीच राजनीतिक पार्टीमे सेहो उठा-पटक हुअ लगल। मोटा-मोटी सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, राजनीतिक सभ मंचपर वैचारिक संघर्षक संग सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण सेहो हुअ लगल, जेकर परिणाम इन्दिराजीक नेतृत्वकालमे स्पष्ट भऽ गेल। आजादीक पछाइत कांग्रेसक बीच ई पहिल वैचारिक लड़ाइ छल।

गाम-गाममे सेहो पुरोहितवादकेँ धक्का लागल। जतिया आगू पतिया नै लगै छै, ई निर्णायक भेल। मुदा जइ रूपमे आर्थिक शोषण होइ छल तइमे कमी

नइ भेल। वैचारिक किछु बदलाव आएल मुदा बेवहारिक पक्ष ठामक ठामहि रहि गेल। केतबो ठामक-ठामे रहल तैयो बेवस्थाक विरोधमे किछु-ने-किछु लाभ भेबे कएल। कारणो भेल, होहामे काज तँ शुरू भेल मुदा पोथी-पत्राक भाषा तँ संस्कृते रहए। पढ़निहारोक संख्या कम आ बुझनिहार तँ सहजहि नहि। मुदा तैयो किछु-ने-किछु चक-चूक चलिते रहल। केतौ "ॐ" लऽ कऽ मारि-पीटि तँ केतौ किछु।

जहिना पोथी-पतराक दशा भेल तहिना राजनीतिक मंचपर गाँधीवादक दशा भेल। एक्के बात, एक पाँतिक व्याख्या, मुदा जेते-मुँह तेते रंगक हुअ लगल। जरूरत अछि जे ऐ समस्याक समाधान मजगूतीसँ कएल जाए, नहि तँ मूड़न आ सराधक भोजमे कोनो भेद नै रहत।

शिक्षण-संस्थान आरो एकटा अड्डा बनि गेल। कोनो तरहक प्रतिबन्ध नहि। वएह कौलेजमे गाँधीवादी सिद्धान्तो पढ़ौता आ फील्डमे आबि खिल्लियो उड़ौता, आ विधानसभा संसदमे ओ सभ बिकेबो करता। एहेन खेल धरल्लेसँ भेल। मुदा एकटा जरूर भेल जे जहिना 1942 इस्वीमे अंगेज विरोधी हवा पैदा केलक तहिना 1967 इस्वीक हवा सेहो केलक। एक दिस रौदीक मारल किसान, सामन्त-पूजीपतिक बीच विवाद, जाति-जातिक आ वर्ग-जातिक बीचक दूरी, जोतल खेत जकाँ चौकिया कऽ एकबट्ट भऽ गेल, मुदा से सोलहन्नी नै भेल।

❑❑❑

❑❑

❑ **जगदीश प्रसाद मण्डल एकटा वायोग्राफी (2013), गजेन्द्र ठाकुर, पृष्ठ 21-24**

“दादी, समाजे निरलज अछि। जइ समाजमे
विधवाक कोन बात जे कोमल-सुकुमार बाल-बोधक
इज्जतक संग खेलवाड़ भऽ रहल अछि तैठाम कहले की जाए।
मनुक्ख तँ मनुक्खे भेला जे देवियो देवता बिना घूस-पेँच नेने
कोनो काज करैले तैयार नहि छैथ। मुदा इज्जतोक तँ अपन मूल्य
अछिए। तँए ने जे जीवनमे सभ किछु हारि गेल छैथ, पति, बेटा,
परिवार इत्यादि सभ किछु, ओहो अपन इज्जत ले मरै-मिटैले
तैयार छैथ। भाय, मिथिलाक माटि-पानि तँ ओहिना उर्वर
अछि, जैठाम सीता सन देवी शिवजीक धनुष
उठा धरतीमे पवित्र बीज सेहो तँ बाउग
केनहि छैथ, तैठाम बाँकीए कि
बँचल अछि जे कहब।”

कमला दादीक मुहसँ ‘इज्जत लऽ लेलक’ सुनि अपने मन धिरकारए लगल जे समाजमे केकरो कियो इज्जत लूटि रहल अछि आ अपने चुपचाप मुँह देखैत रही, ईहो केहेन हएत।

गंजी पहीर गमछा कन्हापर राखि विदा हुअ लगलौं कि पत्नी टोकि देली- “अनेरे किए मौगी-मेहैरिक भाँजमे पड़ै छी।”

पत्नीक विचारकेँ चुपचाप सुनि विचार केलौं जे जँ किछु उत्तर देबैन तखन ने उत्तर-प्रति-उत्तर हएत जइसँ नीको विचार वा रास्ता चलैसँ बाधित हएत, मुदा किछु नहि बाजब से तँ हएत। पत्नियोँ बुझती जे कमला दादी ऐठाम नहि केतौ दोसरेठाम जाइ छैथ। तैबीच मनमे ईहो उठि रहल छल जे गामो-समाज तँ गामे-समाज छी, ने मजगूत सिंघे छै आ ने कैंतगर (कान्तिगर) नाङैरिये छै, कखन-केमहर सिंघे डोला देत आकि नाङैरिये डोला देत तेकरो ठीक नहियेँ अछि। देखतो छी आ सुनितो तँ छीहे जे ‘जेकरा ले

चोरि करी सएह कहै चोरा।’ केकरो अन्याय देखि ओकरा बोल-भरोस दैत उठा कऽ ठाढ़ करैक कोशिशो करब आ उनटा कऽ वएह कहए लगत जे फल्लाँ, उनटा-पुनटा सिखा कऽ मारि करबए चाहै छल। भाय, जाबे अन्यायक खिलाप न्याय मरै-मिटैले तैयार नहि हएत ताबे अन्याय मरि केना सकैए। एकक मृत्युक पछातिये ने दोसरमे जीवनक जान औत। गारिक जवाब गारि हएत, थापर-मुक्काक जवाब थापर-मुक्का हएत, मुदा जीवनक दासताक उन्मूलन तँ दास्तानक उन्मूलन केनहि ने हएत। ओना, विचारक दौड़मे मन आगू-पाछू जरूर करए लगल मुदा मानवीय मन पाशवीक (पशुवीय) मनकेँ पाछू धकेल एते उत्साह जगाइये देलक जे मने-मन विचारैत चुपचाप मुँह बन्न केने कमला दादी ऐठाम विदा भेलौं।

मारि खेला पछातियो कमला दादीक मुँह बन्न नहि भेल छेलैन। मुदा सुननिहार कियो ने छेलैन। दादी लग पहुँच पुछलयैन- “दादी, की भेल हेन?”

मिसियो भरि मनमे शंका नहि रहल जे कमला दादीक मन जीवनक थपेड़मे थपड़ा वा थोपड़ा गेल छैन।

‘की भेल’ सुनि आकि हमरा आगूमे ठाढ़ देखि कमला दादीकेँ केते हाथीक (हाथक) बल भेट गेलैन से तँ कमले दादी जनती मुदा एते तँ सुनबे केलौं- “सँएखौकी इज्जत लऽ लेलक.!

बेटखौकी इज्जत लऽ लेलक..!!”

ओना, दुनू पड़ोसिनी, जे मारने रहैन, अपन-अपन आँगनक मुँहथैरपर ठाढ़ भऽ सुनि रहल छेली, मुदा कियो आगू बढ़ि किछु कहैक साहस नहि केलैन।

कमला दादी बेतुकार गारि पढ़ि रहल छेली आ अपने चुपचाप सुनि रहल छेलौं। जैठाम दुनू पक्ष रहत तैठाम ने दुनू पक्षक विचार सुनि विचारक योग बनाएब जइसँ योगी बनि दुनू पक्ष भविष्य दिस बढ़त।

कमला दादीक मुहसँ अनेको रंगक गारि सुनि बजलौं-

“दादी, समाजे निरलज अछि। जइ समाजमे विधवाक कोन बात जे कोमल-सुकुमार बाल-बोधक इज्जतक संग खेलवाड़ भऽ रहल अछि तैठाम कहले की जाए। मनुक्ख तँ मनुक्खे भेला जे देवियो देवता बिना घूस-पेँच नेने

कोनो काज करैले तैयार नहि छैथ। मुदा इज्जतोक तँ अपन मूल्य अछिए। तँए ने जे जीवनमे सभ किछु हारि गेल छैथ, पति, बेटा, परिवार इत्यादि सभ किछु, ओहो अपन इज्जत ले मरै-मिटैले तैयार छैथ। भाय, मिथिलाक माटि-पानि तँ ओहिना उर्वर अछि, जैठाम सीता सन देवी शिवजीक धनुष उठा धरतीमे पवित्र बीज सेहो तँ बाउग केनहि छैथ, तैठाम बाँकीए कि बँचल अछि जे कहब।”

❑❑❑

❑❑

❑ आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 82-84

कमला दादी ओहन जातिक परिवारमे छैथ जइ
जातिक परिवारमे विधवा-बिआहक चलैन नै अछि। कमला
दादीकेँ तीनटा सन्तान भेलैन। एकटा बेटा आ दूटा बेटी। कमला
दादीकेँ खेतमे काज करैक लूरि, पतिकेँ देखा-देखी तँ किछु छेलैन,
मुदा भानस-भात करैत आ बाल-बच्चाकेँ सम्हारैत-सम्हारैत कमला
दादीकेँ पलखतिये (पलखति माने समयक काट) ने रहैन जे खेती-
पथारीक काज करितैथ। किछुए दिनक पछाइत बटाइ खेत चलि
गेलैन। कट्ठा भरि घराड़ीमे कमला दादी साधारण तीमन-तरकारीक
खेती कऽ लइ छेली। कुभेला भेने दुनू बेटी मरि गेलैन। मात्र
एकटा बेटाटा कमला दादीकेँ रहलैन। परिस्थितिवश
जीविका चलबैले कमला दादी समाजमे
(गाम-समाजमे) भीख मांगब
शुरू केलैन।

कमला दादीक बिआह कृष्णपुरक ओहन परिवारमे भेलैन, जइ परिवारमे कट्ठा भरि घराड़ीक अतिरिक्त किछु नहि छेलैन। मुदा समाजो तँ समाज छी। गामक बीच सइयो रंगक विचारो गाममे चलिते रहैए आ कुम्हारक चाकक माटिक वर्तन जकाँ किछु फुटितो अछि तँ किछु टिकतो तँ अछिए।

गामक ओहन प्रवुद्ध वर्ग जनिका अपना तँ खेत-पथार कम छेलैन मुदा विचारमे प्रवलता तँ छेलैन्हे। गाममे पाही पट्टी माने बाहरी जमीन्दारक अधिक खेतो आ कचहरी-कामत सेहो छेलैहे। कचहरीक माने मालगुजारी असुलैक जगह आ कामतक माने खेती-पथारीक। दुनूक अपन-अपन काज छेलइ। सालक साल गामबलाक जमीन निलामपर चढ़ने मोटेबो करिते छेलइ। समाजक सहयोगसँ चन्द्रकान्तकेँ ओते खेत बटाइक रूपमे दऽ देल गेलैन, जइमे मेहनत करि चन्द्रकान्त, अनका खेतमे मजूरी (बोइन) करए

नहि जाइथ। चन्द्रकान्तक बिआह कमला दादीसँ भेलैन। बिआहक दू सालक पछाइत माने तेसरा साल दुरागमन सेहो भेलैन। आठ बर्खक पछाइत चन्द्रकान्त रोग ग्रस्त भऽ मरि गेला। तैबीच कमला दादीकेँ तीनटा सन्तान भेलैन। एकटा बेटा आ दूटा बेटी। कमला दादीकेँ खेतमे काज करैक लूरि, पतिकेँ देखा-देखी तँ किछु छेलैन, मुदा भानस-भात करैत आ बाल-बच्चाकेँ सम्हारैत-सम्हारैत कमला दादीकेँ पलखतिये (पलखति माने समयक काट) ने रहैन जे खेती-पथारीक काज करितैथ। किछुए दिनक पछाइत बटाइ खेत चलि गेलैन। कट्ठा भरि घराड़ीमे कमला दादी साधारण तीमन-तरकारीक खेती कऽ लइ छेली। कुभेला भेने दुनू बेटी मरि गेलैन। मात्र एकटा बेटाटा कमला दादीकेँ रहलैन। परिस्थितिवश जीविका चलबैले कमला दादी समाजमे (गाम-समाजमे) भीख मांगब शुरू केलैन।

कुसंयोग एहेन भेलैन जे कमला दादीक बारह बर्खक बेटा शोभितकेँ साँप काटि लेलकै। विषधर साँप दसे मिनटक पछाइत शोभित लटुआ कऽ खसि पड़ल। अनाड़ी कमला दादी, अचेत बेटाकेँ देखि अपनो अचेत भऽ खसि पड़ली। समाजक सहयोग भेटलैन। अड़ोस-पड़ोसक लोक आबि दुनूकेँ, माने माए-बेटा दुनूक, प्रतिकार करैक काज शुरू केलक। झाड़-फूकक युग रहले अछि, शोभित मरि गेल।

प्रतिकारक पछाइत कमला दादी आँखि ताकि जीवि तँ गेली मुदा दिमाग (ब्रेन) प्रभावित भऽ गेलैन। बताहि जकाँ करए लगली। बगए-वानि सेहो बताहि जकाँ बना कमला दादी दिवस गुदस करए लगली। कट्ठा भरिक खेती कमला दादीक आब लत्ती-फत्तीक एक-आध गाछपर चलि एलैन, माने परिस्थितिवश।

घरक आगूमे झिंगुनीक (झुंगनिक) लत्ती लगौने छैथ। अपना उठैसँ पहिने माने सुतिकऽ उठैसँ पहिने पारखी चोर झिंगुनी तोड़ि लेलकैन। पारखी चोर ओ भेला आकि भेली जे तोड़ैसँ पहिने अखिआइस लइ छैथ जे भोरमे माने समयपर, तोड़ै जोकर भऽ जाएत।

झिंगुनी तोड़ए जखन कमला दादी गेली तँ डन्टीसँ टप-टप पानि चुबैत देखलैन, मुदा देखल झिंगुनी निपत्ता भऽ गेल छेलैन। आने स्त्रीगण जकाँ कमला दादी सेहो यत्र-कुत्र गरियाबए लगली। रंग-बिरंगक गारि मुहसँ निकैल

रहल छेलैन। एक तँ ओहुना कमला दादीक बुधि विचलित भेने विवेकहीन भइये गेल छैथ। तैपर अपन मुँहक आहार छिनाएल–चोरीक माध्यमसँ–देखि आरो विचलन विवेकमे आबिये गेलैन। घरक बगलक जे पड़ोसिनी छैन, तिनकर नाम लगा गरियाबए लगली।

ओना, एहेन शंका, झिंगुनी तोड़ैक, कमला दादीक सोल्होअना निराधारे नहि छेलैन। अनरोखमे झिंगनी तोड़ैक दोख बहरबैयाक नहियेँ लगाएल जा सकैए। तहूमे बाहरसँ आएल रास्ताक बीचमे अनेको लोकक घर सेहो अछिए। तहूमे मिथिला छी, सघन आवादी अछिए। ओना, एक्के शब्दकोषक एक्के शब्द एकठाम शुद्ध भऽ जाइए तँ दोसरठाम अशुद्ध सेहो भऽ जाइते अछि। कोट-कचहरी जाइबलाक मामलामे राही-बटोहीकेँ टोकब अधलो भऽ सकैए। किए तँ कियो चुपचाप अपन केशमे जमानत करबए जाइत होथि, मुदा टोकला उत्तर देला पछाइत जँ ओ भेद खुजि जाइ आ जमानतमे विरोध भऽ जाइ, जइसँ बेचारा जहल चलि जाए। ऐठाम तँ अशुभ कहियौ कि अशुद्ध भेबे कएल। मुदा एकर विपरीत एहनो जगह तँ अछिए जे कियो सबेरगर कोनो डॉक्टर ऐठाम जाइत होथि, पाइ-कौड़ी वा संगीक अभाव होनि तैठाम टोकला पछाइत जँ मददगार भेट जाइ छैन तँ ओ शुभ वा शुद्ध भेबे कएल किने।

नाम लऽ कऽ जेकरा कमला दादी गारि पढ़ैत रहैथ ओ झिंगुनी चोरा कऽ नहि तोड़ने रहैन। दोसर बगलेक पड़ोसिनी तोड़ने रहैन। अपन नाम सुनि पड़ोसिनी कमला दादीक लग आबि गारिक उत्तर गारिसँ दिअ लगलैन। जइसँ दुनूक बीच गारि-गरौवलि जोर पकैड़ लेलक। तइ बीचमे एकटा आरो भेल, ओ भेल जे कमला दादीक जे झिंगुनी तोड़ने रहैन ओ पड़ोसिनीकेँ, माने कमला दादीक पड़ोसिनीक, संग पूरए लगली। विचित्र दुश्मनक बीच कमला दादी घेरा गेली।

ओना, कमला दादीक अनुमान सोल्होअना ठीक छेलैन, मुदा गड़बड़ एतबे भेल छैन जे जे पड़ोसिनी झिंगुनी तोड़ने छैन, तिनकर बदला दोसरकेँ गारि पढ़लखिन। ओना, गामक सुबुध लोक कमला दादीक गारिकेँ गारिक माइनसँ निच्चाँ बुझै छैथ, किए तँ सभ जानि रहला अछि जे कमला दादीकेँ प्राण बँचल छैन, बाँकी जिनगीक कोनो हारक हार बाँकी नइ छैन, मुदा से

बुझनिहार कए गोरे छैथ।

दुनू पड़ोसिनी, माने एकटा जे कमला दादीक झिंगुनी तोड़ने छेलैन आ दोसर जे नइ तोड़ने छेलैन, दुनूक बीच एक दल बनि गेल। एकर माने ई नहि जे समाजक बीच अपराधी आ महंथक बीचक दल वा पार्टी बनि गेल। असगर कमला दादी एकभागक एक दल भेली आ दोसर दल दू गोरेक भेलैन। अपन जीवन, ऐठाम जीवनक माने भोजनसँ अछि, देखि कमला दादी पाछू हटैक, माने मुँहक आहार छिनाइत देख, दुस्साहस नहि केली तँए असगरो रणभूमिमे ठाढ़ रहली। मनमे मिसियो भरि एहेन विचार नहि उठि रहल छेलैन जे-

हमरा सन लोक, माने पति विहीन, पुत्र विहीन, परिवार विहीन लोक, आइये नहि सभ दिनसँ ऐ धरतीपर गारि-मारि खाइत रहल अछि, हमहूँ खाएब। एक तँ ओहुना देखै छी जे एकटा शिखरक पुड़िया माने गुटका, खेने नवका तूरकेँ हाथी जकाँ सनसनी आबि जाइ छैन तैठाम दूटा पड़ोसिनीक सामूहिक शक्ति तँ उफनबे करतैन। दुनू आगू बढ़ि कमला दादीकेँ दू थापर लगा देलकैन। चलाकी ईहो दुनू केने रहैथ जे दुनू अपन एक-एक हाथसँ कमला दादीक दुनू हाथ पकैड़ नेने रहैन।

❑❑❑

❑❑

❑ आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 79-82

आजुक परिवेश ओहन मोड़पर आबिये गेल अछि
जैठाम जहिना संयुक्त परिवारक जे सघनता छल ओ
अखन एकाकीपनमे बदैल गेल अछि, तहिना कृषि कार्यक
जे सघनता छल तहूमे एकाकीपन आबिये गेल अछि।
पशुपालन हुअ कि खेती, माछ पोसव हुअ कि छोट-मोट
उद्योग, जे जीवनक एक हिस्सा छल ओ आइ अपन
पूर्णता प्राप्त कऽ लेलक अछि। जइसँ जीवन
जीबाक एहेन सघन वन बनियेँ गेल अछि
जे वनक कोनो कोणमे यापन
कइये सकै छी।

"बुझल अछि कि नहि जे ई धरती ओहन-ओहन पौरुषवान पुरुखक छी जे पत्नीक खातिर माने द्रौपदीक खातिर पाँचो भाँइ पाण्डव महाभारत सन युद्ध केलैन। तहिना तहूसँ पहिने त्रेते युगमे सीताक खातिर राम रावणक लंकाकेँ जरेबेटा नहि केलैन सत्यानासो कऽ देलैन।"

अपना जनैत जइ हिसाबसँ अवधलाल भैया बाजल छला तइ हिसाबसँ देवसुनरि भौजी नहि बुझली। ओ अपन दादीक मुहसँ शिष्टाचारक रूपमे सुनने छेली जे सावित्री केना सत्यवानक संग अपन जीवन बनौलैन, तहिना बुझली। अपन विचार रखैत देवसुनरि बजली-

"हम ओइ वंश आ समाजक बेटी छी जे ने कहियो केकरो आगू हाथ पसाइर भीख मंगलक आ ने माँगत। अपन बाहुबलसँ पतिव्रता बनि पतिव्रत जीवनक पालन करैत आएल अछि आ आगूओ करैत रहत।"

अपना-अपनी दुनू परानी अवधलाल भैया आ देवसुनरि भौजी एक-दोसराक आगूमे जीवनक अपन-अपन विचार रखलैन। ओना, दुनू अनभुआर छथिए, माने जीवनक अनभुआर, किए तँ समाजक जइ समुदायक दुनू बेकती छैथ

ओ समुदाय अखन ओइ सीमापर नहि पहुँचल अछि जइ सीमापर सँ मनुज मन आगू बढ़ैए। अखन ओ पेने पकड़ने अछि, माने जीवनक जे माप-तौलक पैमाना राखल अछि तइमे जीवन अखन पेने पकड़ने छै। ऐठाम हरवाही पेना नहि, पानिक वर्तनक पेन बुझब। मुदा किछु अछि, एते तँ अछिए जे बिआहक उमकी हर पुरुख-नारीमे जागिये जाइए। तहूमे जैठाम माए-बापक सिरे जीबैबला बाल-बच्चा, जे जीवनक बिना चोट खेने अपन शब्दवाणक पाग निच्चाँ किए करत।

ओना, जीवनक जइ मोड़पर पति-पत्नीक भेँट होइए आ जीवनमे ताजगीपन अबैए, जँ ओकरा ओहीठाम जीवनक चुट्टासँ पकैड़ जीवनक बन्धनमे बान्हि कर्म-धर्मक संकल्प बोध करौल जाए तँ जीवनमे गाढ़पन एबे करत। रावणक दरबारमे जहिना हनुमानकेँ दुनू हाथ बान्हि उपस्थित कएल गेलैन आ जहिना हनुमान अप्पन नाङैरिक आसन बना, रावणक आसनसँ ऊँचगर आसनपर बैस जवाब दइले तैयार भेला, तेना दुनू परानी अवधलाल भैयाकेँ नहि भेलैन। केतबो बलवीर वा बलशाली हनुमान किए ने छला, मुदा छला तँ परिवार विहीन। ने आगू कोनो नाथ छेलैन आ ने पाछू कोनो पगहे।

मनुक्खक जीवनक सीमा जहिना ऊपर सात लोक अछि माने धरती-सँ-अकास धरिक बीच, तहिना निच्चोँ ने सात लोक अछिए जे तल-अतलसँ निच्चाँ होइत पताल तक पहुँचैए। पारिवारिके मनुक्खक जीवन ने समूहपन क पहिल सीढ़ी छी। जेतए एक-सँ-अनेक रंगक मनुक्खक, माने बच्चासँ वृद्ध धरिक समावेश एक पद्धतिमे होइए। जैठाम पाँच-पाँच, सात-सात पुस्त धरिक मनुक्खक समावेश होइए, ओहन संयुक्त परिवार मिथिलांचलक एक्के समुदायक बीच नहि, बहुजन समाजक बीच छेलैहो आ पतराएल रूपमे अछियो। जेकर हजारो ज्वलन्त इतिहास समाजक बीच अखनो विद्यमान अछिए। अखनो ओहन परिवार जीवित अछि जे छेहा सर्वहारा छी। जेकरा देह छोड़ि किछु ने छै, मुदा ओकरो परिवारमे परबाबासँ लऽ कऽ पर-पोता धरिक बास सिनेहसँ जीवन-धारण केनहि अछि। खाएर जे अछि, ऐठाम अवधलाल भैया आ देवसुनरि भौजीक अपन जीवनक लीला छिऐन।

पहिल दिनक मिलन दुनू परानी अवधलाल भैयाक छेलैन तँए किए कियो अपनाकेँ लंकाक राक्षस जकाँ जे एकावन हाथ भलेँ नहि हुअ मुदा उनचास

हाथक नहि मानितैथ। संगी पेब दुनूक मनमे खुशीक लहरिक जुआइर उठले रहैन तँए अवधलाल भैयाक मनसँ परिवारक रूप उड़िया गेलैन। मनमे रहबे ने केलैन जे पिताक देल मात्र बीघा भरि खेत अछि। ओहीमे कट्ठा भरिक बास आ बाँकी दू कट्ठामे गाछी-कलम अछि, जइमे सरही-कलमी मिला पाँचटा आमक गाछ अछि आ हत्तापर तीनटा शीशो, दूटा गमहाइर आ सातटा खएरक गाछ सेहो अछि। अवधलाल भैयाक मनमे किए उठितैन जे एकटा बरद आ एकटा दुधारू महींसो अछि।

आजुक परिवेश ओहन मोड़पर आबिये गेल अछि जैठाम जहिना संयुक्त परिवारक जे सघनता छल ओ अखन एकाकीपनमे बदैल गेल अछि, तहिना कृषि कार्यक जे सघनता छल तहूमे एकाकीपन आबिये गेल अछि। पशुपालन हुअ कि खेती, माछ पोसव हुअ कि छोट-मोट उद्योग, जे जीवनक एक हिस्सा छल ओ आइ अपन पूर्णता प्राप्त कऽ लेलक अछि। जइसँ जीवन जीबाक एहेन सघन वन बनियेँ गेल अछि जे वनक कोनो कोणमे यापन कइये सकै छी।

❑❑❑

❑❑

❑ आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 51-53

शीलानन्द बाबूमे मानवीयताक ओहन शील-सोभाव रहलैन जे मनुक्खक आगूमे धन-सम्पतिक महत्व कम अछि। अही सोभावक चलैत शीलानन्द बाबू समाजमे विरोधी रूपमे मानल गेला, जेकरा तोड़-जोड़ करैत समाजक विरोधी बना देल गेलैन।

ललितपुर गामक सभसँ श्रेष्ठ परिवारक रूपमे हरेकृष्ण बाबूक परिवार आइये नहि, केता पीढ़ीसँ चलैत आबि रहल छैन। परिवारमे प्रतिष्ठा पबैले परिवारक नीक बेवहारक संग नीक विचारक संस्कार आनए पड़ैए। देखिते छी जे समाज समुद्रोसँ अथाह गहींर अछिए, चाहे ओ काजक रूपमे हुअए आकि शील-गुण-विचारक रूपमे हुअए। समाजमे जहिना एक दिस भागवत-पुराणक पाठ होइते अछि, जेकर पाठकर्ता सेहो छथिए, तहिना दोसर दिस बैंकक डकैती, गाड़ीक छिना-झपटी आदि-आदिक पाठ नहि होइए, माने सिखौल नहि जाइए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो सिखौल कि बनौले जाइए। समाजमे ऋषि, मुनि, योगीक संग चोर, डकैत, लुच्चा-लम्पट सभ अछिए, माने सबहक पाठ नहि पढ़ौल जाइए, से नहि। एहेन जे हरनमा समाज अछि तैठाम सीता सन पतिव्रताकेँ ताकि लेब ओ एकटा रामक कोन बात जे सातोटा राम बुते नहि हेतैन। खाएर जे हेतैन, ई तँ शास्त्र-पुराणक बात भेल, मुदा हरेकृष्ण बाबूक परिवारक अप्पन शील-सोभाव रहलैन अछि।

हरेकृष्ण बाबूक पिता शीलानन्द बाबूमे मानवीयताक ओहन शील-सोभाव रहलैन जे मनुक्खक आगूमे धन-सम्पतिक महत्वकेँ कम बुझै छला। अही सोभावक चलैत शीलानन्द बाबू समाजमे विरोधी रूपमे मानल गेला, जेकरा तोड़-जोड़ करैत समाजक विरोधी बना देल गेलैन, मुदा तेकर परवाह नहि करैत शीलानन्द बाबूमे तीनटा देखार रूपमे समाजसँ हटल गुण रहबे करैन। पहिल, चालीस-पचास बीघा जमीन रहने, केतबो पछुआएल गृहस्थी माने खेती किए ने हुअए मुदा चारि-पाँच बखारी धान शीलानन्द बाबूकेँ भइये

जाइन। गामक जीवनक कि दशा छल सभ जनिते छी। एक बखारी धान रखि सभ धान सवाइपर माने एक मन धानक सवा मन, लगाबैथ। समयानुकूल धानक असुली हेबो करैन आ नहियोँ होइन। शीलानन्द बाबू अपन जीवन चलबैले अपन जीवन सूत्र गढ़ने छला। जँ कोनो कारणेँ धानक असुली पछुआ जाइ छेलैन तँ मूड़क-मूड़ वा विकट स्थिति देखि ऋण मुक्तो कऽ दइ छेलखिन।

❑❑❑

❑❑

❑ **आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 72-73**

केतबो बलवीर वा बलशाली हनुमान किए ने छला, मुदा छला तँ परिवार विहीन। ने आगू कोनो नाथ छेलैन आ ने पाछू कोनो पगहे।

दुरागमनक पछाइत अवधलाल भैया आ देवसुनरि भौजीक पहिल भेँट रहैन। नव पीढ़ीक मनमे शंका हेबे करतैन जे वर्तमान परिवेश ओहन अछि जे 'दुरागमन' शब्दकेँ, जे पहिने डिक्शनरीए टामे नहि समाजोमे बेवहारक रूपमे चलैत आबि रहल छल, आब म्यूजियम-घरमे सजा देबा चाही। किएक तँ आब दुरागमनक सीमे मेटा गेल, माने ई जे दुरागमनसँ पहिने बिआह होइ छल, जइमे दुनू पद्धतिक चलैन बेवहार रूपमे छल। छल ई जे बहुसंख्य जातिमे दुरागमनसँ पूर्व बर-कनियाँक बीच गप-सप्प नहि होइ छल। अनुकूल परिस्थितियो छेलइ। माने ई जे बाल-बिआहक चलैन रहने बर-कनियाँ मात्र अपन बाप-माइक बेटा-बेटी बुझै छल। मुदा किछु जातिक बीच बर-कनियाँमे गपो-सप्प आ जीवन लीलाक क्रीड़ा सेहो चलै छल। दुनूमे अन्तरक कारण छल बाल-बिआह आ चेष्टगरक बीच बिआह। आजुक परिवेशक रूप एहेन पकैड़िये लेलक अछि जे बिआह-दुरागमनक कोन बात जे तइसँ पूर्वेसँ वैचारिक सम्बन्धक संग जीवन-क्रीड़ाक रूप सेहो बनियेँ गेल अछि। खाएर जे अछि से समाज आ समाजक लोक बुझौथ, तइसँ अवधेलाल भैया आकि देवसुनरिये भौजीकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन आ अप्पन पारिवारिक जीवन क्रीड़ासँ जे दुरागमनक पछाइत शुरू भेलैन।

पनरह-सोलह सालसँ ऊपरक दुनू बेकती, माने अवधोलाल भैया आ देवसुनरियो भौजी, भइये गेल छैथ। दुनूक अपन मन-संसारमे अपन-अपन परिवारो आ समाजोक मान-मर्यादाक प्रश्न छैन्हे। जीवन शुरू होइसँ पहिने हरदा तँ कामचोर, देहचोर आ मनचोर ने बाजिकऽ मानि लेत मुदा देहगर, कमगर, मनगर लोक तँ से नहि मानत। तहूमे गीता-भागवत इत्यादिक व्याख्यान समाजमे सदिकाल चलिते रहैत अछि।

अवधलाल भैया अपन पुरुषार्थ पत्नीकेँ सुनबैत बजला-

"बुझल अछि कि नहि जे ई धरती ओहन-ओहन पौरुषवान पुरुखक छी जे

पत्नीक खातिर माने द्रौपदीक खातिर पाँचो भाँइ पाण्डव महाभारत सन युद्ध केलैन। तहिना तहूसँ पहिने त्रेते युगमे सीताक खातिर राम रावणक लंकाकेँ जरेबेटा नहि केलैन सत्यानासो कऽ देलैन।"

अपना जनैत जइ हिसाबसँ अवधलाल भैया बाजल छला तइ हिसाबसँ देवसुनरि भौजी नहि बुझली। ओ अपन दादीक मुहसँ शिष्टाचारक रूपमे सुनने छेली जे सावित्री केना सत्यवानक संग अपन जीवन बनौलैन, तहिना बुझली। अपन विचार रखैत देवसुनरि बजली-

"हम ओइ वंश आ समाजक बेटी छी जे ने कहियो केकरो आगू हाथ पसाइर भीख मंगलक आ ने माँगत। अपन बाहुबलसँ पतिव्रता बनि पतिव्रत जीवनक पालन करैत आएल अछि आ आगूओ करैत रहत।"

अपना-अपनी दुनू परानी अवधलाल भैया आ देवसुनरि भौजी एक-दोसराक आगूमे जीवनक अपन-अपन विचार रखलैन। ओना, दुनू अनभुआर छथिए, माने जीवनक अनभुआर, किए तँ समाजक जइ समुदायक दुनू बेकती छैथ ओ समुदाय अखन ओइ सीमापर नहि पहुँचल अछि जइ सीमापर सँ मनुज मन आगू बढ़ैए। अखन ओ पेने पकड़ने अछि, माने जीवनक जे माप-तौलक पैमाना राखल अछि तइमे जीवन अखन पेने पकड़ने छै। ऐठाम हरवाही पेना नहि, पानिक वर्तनक पेन बुझब। मुदा किछु अछि, एते तँ अछिए जे बिआहक उमकी हर पुरुख-नारीमे जागिये जाइए। तहूमे जैठाम माए-बापक सिरे जीबैबला बाल-बच्चा, जे जीवनक बिना चोट खेने अपन शब्दवाणक पाग निच्चाँ किए करत।

ओना, जीवनक जइ मोड़पर पति-पत्नीक भेँट होइए आ जीवनमे ताजगीपन अबैए, जँ ओकरा ओहीठाम जीवनक चुट्टासँ पकैड़ जीवनक बन्धनमे बान्हि कर्म-धर्मक संकल्प बोध करौल जाए तँ जीवनमे गाढ़पन एबे करत। रावणक दरबारमे हनुमानकेँ दुनू हाथ बान्हि उपस्थित कएल गेलैन आ जहिना हनुमान अप्पन नाडैरिक आसन बना, रावणक आसनसँ ऊँचगर आसनपर बैस जवाब दइले तैयार भेला, तेना दुनू परानी अवधलाल भैयाकेँ नहि भेलैन। केतबो बलवीर वा बलशाली हनुमान किए ने छला, मुदा छला तँ परिवार विहीन। ने आगू कोनो नाथ छेलैन आ ने पाछू कोनो पगहे।

मनुक्खक जीवनक सीमा जहिना ऊपर सात लोक अछि माने धरती-सँ-

अकास धरिक बीच, तहिना निच्चोँ ने सात लोक अछिए जे तल-अतलसँ निच्चाँ होइत पताल तक पहुँचैए। पारिवारिके मनुक्खक जीवन ने समूहपन क पहिल सीढ़ी छी। जेतए एक-सँ-अनेक रंगक मनुक्खक, माने बच्चासँ वृद्ध धरिक समावेश एक पद्धतिमे होइए। जैठाम पाँच-पाँच, सात-सात पुस्त धरिक मनुक्खक समावेश होइए, ओहन संयुक्त परिवार मिथिलांचलक एक्के समुदायक बीच नहि, बहुजन समाजक बीच छेलैहो आ पतराएल रूपमे अछियो। जेकर हजारो ज्वलन्त इतिहास समाजक बीच अखनो विद्यमान अछिए। अखनो ओहन परिवार जीवित अछि जे छेहा सर्वहारा छी। जेकरा देह छोड़ि किछु ने छै, मुदा ओकरो परिवारमे परबाबासँ लऽ कऽ पर-पोता धरिक बास सिनेहसँ जीवन-धारण केनहि अछि। खाएर जे अछि, ऐठाम अवधलाल भैया आ देवसुनरि भौजीक अपन जीवनक लीला छिऐन।

❑❑❑

❑❑

❑ **आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 50-52**

“कहूँ जे साले-साल देवना कातिक मासमे पनरह दिनक भागवत, व्यासजीक मुहेँ अपना दरबज्जापर सुनैए, तखन एहेन पतितपन चालि किए पकड़ने अछि। जे अपनेटा किए परिवारोकेँ घिनौनौं अछि घिनैबतो तँ अछिए, जइसँ गामो नइ घिनाइए सेहो केना नइ कहल जाए?”

“आइ जे शिव दरबारमे श्रोता बनि बैसल छेलौं तखन की सभ सुनलौं से कहै छी।”

ओना, सुवोधिनीक मनक भावभूमिक विचार वौआइये रहल छेलैन मुदा पतिक मुहसँ सुनब जोर मारलकैन। बजली-

“की सुनबए चाहै छी, सुनाउ।”

रामेश्वर बाजए लगल-

“जहिना कोंढ़ि लोक काज देखि हट्टाक कोंढ़िया बरद जकाँ हर देखिते-देरी कन्हा झाँकि पड़ि रहैए वा डोरी-पगहा नेने लंक लऽ कऽ घर दिस पड़ाइए, तहिना श्रमचोर लोको ने काजक डरसँ लंक लऽ कऽ पड़ाइते अछि।”

पतिक शास्त्रीय धुनमे फगुआक भावक भाँज सुवोधिनी पेबे ने केलीह। अपन सोल्होअना मनक विचारकेँ कतवाहि करैत बजली-

“अपने मने अहाँ बजै छी आकि बकै छी से हम बुझबे ने करै छी। तँए कहि-कहि हमरा पुछि लिअ जे की बुझलिऐ। अहाँक विचार कोन रूपमे हम बुझलौं तेकर मुँह-मिलानी करैत ने आगू बढ़ब।”

पत्नीक विचारकेँ रामेश्वर वीणाक ओइ झंकृत आवाज जकाँ धियानसँ सुनलक जे मधुरसँ मधुरतम होइए। मधुर आवाजक अपन खास महत्व अछिए। मधुर आवाज तखने निकलैए जखन वीणाक ढील-ढील तार

समरूपमे रहैए। तँए तारकेँ ओहन कड़ा नहि कऽ दिऐ जे टुटि जाए आ ने ओहन ढील रहए दिऐ जे आवाजे ने निकलए। रामेश्वर बाजल-

“हमहूँ अपन आँगुरक गीरहपर गनैत चलै छी आ अहूँ अपन आँगुरक गीरहपर गनि-गनि सुनैत चलू।”

सुवोधिनी बजली-

“जैठाम नइ बुझब तैठाम हम रूकिकऽ पुछि लेब?”

रामेश्वर बजला-

“पहिने पुबारि टोलक कहै छी, तेकर पछाइत पछबारि टोलक कहब। समय बँचत तँ उत्तरवारियो आ दच्छिनवारियो टोलक सुनाइये देब। मुदा एकटा बात पहिनहि कहि दिअ जे सभ टोलक लोक सभकेँ चिन्है छिऐ किने?”

सुवोधिनी बजली-

“सभकेँ मुँह-कानसँ भलेँ नहियोँ चिन्हैत होइऐन मुदा किछु गोरेकेँ मुहोँसँ आ किछु गोरेकेँ नामोसँ तँ चिन्हते-जनिते छिऐन।”

रामेश्वर शिव दरबारक बातकेँ शुरू करैत बाजल-

“पुबारि टोलक पूबसँ कहै छी। रामखेलौन सन जमीन चोर ऐ इलाकामे के अछि? तहिना ओकरा घरक बगलेक जे रूपललबा अछि ओइसँ बेइमान के अछि? तहिना सिंहेश्वरसँ बेसी झूठ बजनिहार ऐ इलाकामे कएटा अछि? समाजमे एक-पर-एक राक्षस पसरल अछि की नहि?”

पतिक बातपर सुवोधिनीकेँ शंका भेलैन जइसँ मन डेरा गेलैन। सशंकित होइते बजली-

“बताह जकाँ अहाँ किए बकै छी।”

कोनो विषय वा विषयक व्याख्याक अपन धुनियो आ गतियो विषयकार वा व्याख्याकार चिह्नित करिते छैथ। जहिना सुवोधिनी गवेषिका जकाँ व्यस्त रहली तहिना रामेश्वर सेहो अपन विचार व्यक्त करैमे एते व्यस्त भऽ गेल जे पत्नीक नकारल विचार सुनबे ने केलक। अपना धुनिमे रामेश्वर आगू बाजल-

“कहू जे साले-साल देवना कातिक मासमे पनरह दिनक भागवत, व्यासजीक मुहेँ अपना दरबज्जापर सुनैए, तखन एहेन पतितपन चालि किए पकड़ने

अछि। जे अपनेटा किए परिवारोकेँ घिनौनौं अछि आ घिनैबतो तँ अछिए, जइसँ गामो नइ घिनाइए सेहो केना नइ कहल जाए?”

अपना सुढ़ियेे रामेश्वर अपन बात बजैमे व्यस्त छल, मुदा सुवोधनीक मन डरे काँपि रहल छेलैन। तँए पतिक मुँहक ऐगला बात सुनैसँ मन उमैठ गेलैन। जइसँ विचार केली जे बाबूकेँ किए ने जना दिऐन जे अहाँक बेटा एना बकै छैथ। अपन ने पति छैथ तँए बलउमकियो अपना लग चलि सकै छैन मुदा पिता तँ से नहि भेला, ओ तँ कहुना पालन-पोषणकर्ताक संग जन्मदाता सेहो छथिन। मनमे अबिते सुवोधनी ससुरकेँ माने सुन्दरलालकेँ कहैक विचार मनमे रोपि जहाँ उठए लगली कि रामेश्वर बाजल- “बस भऽ गेल.!”

❑❑❑

❑❑

❑ आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 45-48

दिल खोलिकऽ रामखेलौन भाय बजला-
"एक जाति रहितो हमरा सभकेँ किशोरीलाल अछोप बुझै छैथ, तहिना हमहूँ सभ हुनका अछोप बुझै छिऐन।"

दू हजार रूपैआ सोहनलालकेँ वेना दैते मन हल्लुक भेल। मन हल्लुक होइते गाम दिस नजैर बढ़ल कि किशोरीलाल कक्काक बेटा दिनेशक बिआहपर गेल। जहिना गाममे सभसँ बेसी नगदक लेन-देन तहिना झमटगर बरियातीक बात सेहो किशोरीलाल कक्काक पक्का भेलैन। बजलौं-

"रामखेलौन भाय, किशोरीलाल कक्काक बेटाक बरियाती कहिया जेबइ?"

रामखेलौन भायकेँ बुझल जरूर रहल हेतैन, किए तँ एक गामेक नहि एक्के टोलक काज सेहो छी, मुदा तेकरा धकियबैत रामखेलौन भाय बजला-

"हमरा कोनो जनतब नइ अछि।"

रामखेलौन भाइक बात सुनि मन मानैले तैयारे ने भेल। एहनो बात मानल जाए जे एक गामक कोन बात जे एक टोलक आ तहूमे एक जातिक एहेन झमटगर एते पैघ बिआह-यज्ञ छी, आ रामखेलौन भाय बाजि रहला अछि जे हमरा कोनो जनतब नइ अछि। भरिसक मजाकमे बात छिपा रहला अछि। बजलौं-

"भाय, माछ-मौस रसगुल्ला-लालमोहन अहीं खाएब, हमरा नइ देब, तइले बात छिपबै किए छी।"

रामखेलौन भाय बजला-

"मकशूदन, तोरा लग कहियो झूठ बजलौं हेन, छह कहियोक मोन। धरमागती पूछह तँ कोनो जानकारी अपना नइ अछि।"

रामखेलौन भाइक विचारकेँ झुठिऔलो नहियेँ जा सकैए मुदा सत्यक अन्वेषणो करब तँ जरूरी अछिए। पुछलयैन-

"अहाँकेँ कोनो जानकारी नहि अछि?"

“नहि।” -रामखेलौन भाय बजला।

तैपर लगले पुछलयैन-

“जानकारी किए ने अछि?”

जेना हजारो बर्खक इतिहास रामखेलौन भाइक मनमे नाचि उठलैन तहिना बजला-

“मकशूदन, जातिक बीच सेहो अनेको जाति अछि। ऊपरसँ आन एक्के जाति बुझै छैथ मुदा जाति-जातिक भीतर तेहेन बान्ह सभ पड़ल अछि जे एक-दोसरकेँ अछोप मानि बेवहार करैए।”

विचारक क्रममे तँ रामखेलौन भाइक भावनाक भाँज लगि गेल मुदा बेवहारमे अनसोहाँत लगबे कएल। पुछलयैन-

“भाय, अहाँक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं।”

दिल खोलिकऽ रामखेलौन भाय बजला-

“एक जाति रहितो हमरा सभकेँ किशोरीलाल अछोप बुझै छैथ, तहिना हमहूँ सभ हुनका अछोप बुझै छिऐन। जहिना ओ हमरा सभसँ खेबा-पीबाक कोनो सम्बन्ध नै रखने छैथ तहिना गाममे बीस परिवारक टोल हम सभ छी, माने समाजक नजैरमे एक जाति, तइमे दस परिवार हुनको सभक ऐठाम नइ खाइ-पीबै छी। अपन दसो घरक एक बेवहार अछि।”

रामखेलौन भाइक विचार सुनि छुब्ध भऽ गेलौं। मुहसँ निकैल गेल- “सएह.!”

रामखेलौन भाय बजला-

“भऽ सकैए तोरा नइ बुझल हेतह मकशूदन मुदा सवा लाख तक जातिमे जाति, एक जातिक बीच अछि। जइमे एक-दोसरक बीच छुत-अछूतक बेवहार सेहो अछिए।”

❑❑❑

❑❑

❑ आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 31-33

भारी-सँ-भारी काज किए ने हुअए, जेकरा करैकाल कठिन-सँ-कठिन परिस्थितिक सामना किए ने करए पड़ए, मुदा काज भेला पछाइत मन जहिना समगम भऽ जाइए तहिना हीरालालकेँ भऽ गेल छेलैन, मुदा मोतीलालकेँ तँ से नहि भेल छेलैन तँए नजैर निच्चाँ खसि रहल छेलैन।

"आइ ने देखै छहक जे समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ रामेश्वरमक दर्शन करैक विचार केलैन अछि मुदा अपना मनमे आइसँ चालीस बरख पूर्वे रोपि नेने रही जे अखन परिवारकेँ सम्हारि असथिर करब जीवनक सभसँ महत्वपूर्ण काज अछि। जखन परिवार असथिर भऽ चैनसँ चलए लगत तखन तीर्थ-वर्त करब।"

ओना, हीरालाल अपन पेटक सभ विचार बाजि गेला मुदा मोतीलाल से बुझबे ने केलैन। बजला-

"भाय, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं?"

हीरालाल बजला-

"मोती, आइसँ चालीस बरख पूर्व, जहिया अपन दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली, तही दिनक विचार छी। जाबे तक दुरागमन नहि भेल छल आ माए-बाबू सेहो जीबै छला ताबे तक हुनके परिवार बुझै छेलिऐन। मुदा जखन दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली तखन परिवारक बीच नव परिवारक उदय ओहिना भेल जहिना बाँस, खरही वा केराक बीटमे नव गाछक जन्म भेने होइए।"

अपना जनैत हीरालाल अपन जीवनक सत्यवृत्तिकेँ मोतीलालक सोझामे रखलैन, मुदा समाजक बीच जे अखन तकक वैचारिक परिवेश रहल अछि

ओ तँ यएह ने रहल अछि जे जाबे तक परिवारमे माता-पिता जीबैत रहै छैथ ताबे तक पत्नीक कोन बात जे धियो-पुतो भेला पछातियो लोक अपन परिवार नहि बुझि माते-पिताक परिवार बुझै छैथ, तहिना मोतीलाल सेहो बुझलैन। तँए परिवारक बीच नव परिवारक सृजन केना होइए तइ दिस मोतीलालक नजैर गेबे ने केलैन। बजला-

"भाय, एहेन कि अहींटाकेँ भेल अछि आकि सभकेँ होइए।"

मोतीलालकेँ अपन विचारानुकूल बनबैक खियालसँ हीरालाल बजला। जहिना कोनो रचनाकार वा संगीतकार अपन पैछला विचार वा धुन (लय) केँ ऐगला विचार वा लयकेँ जोड़ैकाल विचारवद्ध वा लयवद्ध होइ छैथ तहिना हीरालाल मोतीलालक विचारकेँ विचारवद्ध करैत बजला-

"मोती! तोहींटा नहि, अपनो देखबो करै छी आ बुझितो तँ छीहे जे माता-पिताक अमलदारीमे परिवारक जवाबदेह बेटा नहि माइये-बाप होइ छैथ, मुदा जखन परिवारक सृजन होइए, माने पति-पत्नीक गठन होइए, तखन तँ बेटो जवाबदेह बनियेँ जाइए किने।"

अपना जनैत हीरालाल परिवार-सृजनक पहिल सूत्र बाजल छला, मुदा से सूत्र मोतीलालक मनमे घर करबे ने केलकैन। सरपट चालिक दौड़ दौड़ैत मोतीलाल पुन: अपनहि धुनिमे बजला-

"भाय, एहेन कि अहींटाकेँ भेल अछि आकि सभकेँ होइ छै।"

मोतीलालक विचारकेँ अधडरेरपर सँ काटैत नहि बल्कि लवान करैत, माने मोड़ैत, हीरालाल बजला-

"हँ, से तँ सभकेँ होइए.! मुदा बेकती-बेकतीक विचारमे सेहो अन्तर होइते अछि। जेकर जेहेन विचार रहल से तेहेन बुझबो करैए आ ओहने जीवनो बनैबते अछि।"

ओना, मोतीलालक मनमे रामेश्वरम जेबाक विचार नाचिये रहल छेलैन कि बिच्चेमे हीरालाल अपन जीवनक विचारक चर्च शुरू कऽ देलैन। मुदा से मोतीलालक मनकेँ नीक जकाँ छुबिये ने रहल छेलैन, जइसँ उखड़ल-उखड़ल सन मन मोतीलालक छेलैन्हे। अपन विचारकेँ पुन: अगुअबैत मोतीलाल बजला- "भाय.! परिवार छी ने, ने दूटा परिवार एकरंग होइए आ ने बिना दू-

परिवारकेँ एकसंग चलने कल्याणे होइए।”

हीरालाल बजला-

“हँ से तँ नहियेँ होइए।”

हीरालालक विचारक सह पेबिते मोतीलाल बजला- “अही दुआरे ने एलौं हेन। जखन आनो-आनो परिवारक संग तीर्थ-वर्त करैत चलब तखने ने एक-दोसरमे जीवनक संकल्प-सूत्र सेहो मजगूत होइत जाएत आ एक-दोसरपर बिसवास सेहो बढ़ैत चलत।”

हीरालाल बजला-

“हँ, से तँ होइते अछि।”

हीरालालक विचारक सह देखि मोतीलाल बजला-

“भाय, लग-पासक स्थान (धर्मस्थान) मे लोक असगरो-दुसगर जाइ-अबैए, मुदा रामेश्वरम तँ से नहि छी। देशक दच्छिनवरिया छोरपर स्थापित अछि, जैठाम पहुँचैले हजारो किलोमीटरक रास्ता तय करए पड़ैए।”

हीरालाल बजला-

“हँ, से तँ तय करैये पड़ैए।”

‘करैये पड़ैए’ सुनिते जहिना साधारणो हवाक सिहकी पेब गाछसँ पाकल आम धब-धब खसैए तहिना मोतीलालक पेटक विचार धब-दे खसलैन-

“भाय, लग-पासक धर्मस्थानो ओहने होइए जेहेन नीक-सँ-नीक विचार बेकतीगत होइए, मुदा दूरक स्थानो तँ ओहन होइते अछि जेहेन समूहक बीच सामूहिक काज होइए।”

हीरालाल बजला-

“हँ, से तँ होइते अछि।”

हीरालालक सहीट विचार सुनि मोतीलाल बजला-

“भाय, जेतए जे होइए से तेतए होउ। जानए जअ आ जानए जत्ता। मुदा अपना दुनू भैयारीमे से नहि अछि, जहिना एक-दोसरक सुख-दुखकेँ दुनू भाँइ एक बुझै छी तहिना ने जीवन-यात्रामे सेहो एकसंग रहबे करब। एकरंग परिवार रहने जहिना अहाँक परिवार अछि तहिना ने अपनो अछि। तँए जँ

कोनो नीक-बेजाए काजक यात्रा रहत तँ दुनू भाँइ विचारिये कऽ ने करब।"

हीरालाल बजला-

"एकरा के काटत।"

अपन अकाट्य विचार सुनि मोतीलालक मन दहैल गेलैन। बजला-

"भाय, जखन समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ तीर्थ करए जा रहला अछि तखन अपनो दुनू भाँइ किए ने चली।"

मोतीलालक विचार सुनि हीरालाल बजला-

"समाजक लोक तँ लोके छैथ, सदिकाल भेड़िया-धसानक बाट पकैड़ चलिते छैथ। मुदा अपनो सभ जँ ओहिना चलब तखन भेड़िया-धसान लोकसँ अन्तरे की भेल। अपन बीतल दिनक विचार पहिने सुनि लएह, पछाइत विचारकेँ सूहकारि आगूक विचार करब।"

मोतीलाल बजला-

"भाय, काज छोड़ि माने परिवारक काज, मात्र देवस्थानक विचार करए आएल छेलौं तँए समय कम अछि, अगुताएल छी।"

हीरालाल बजला-

"बेसी नहि मात्र एक्केटा विचार अछि, लगले कहि दइ छिअ।"

हीरालालक विचार सुनि मोतीलाल चुपे रहला, मुदा नजैर उठा हीरालालक नजैरपर जरूर देलैन।

हीरालाल बजला-

"रामेश्वरमेटा नहि, देशक चारू धाम–रामेश्वरम, जगरनाथ, द्वारिका आ अमरनाथ–क दर्शन करबक विचार अपनो मनमे रोपने छेलौं, मुदा धीरे-धीरे बाल-बच्चा भेने सेहो आ माता-पिताक आयु बढ़ने सेहो, परिवारक भारक बोझ बढ़िते गेल, जइसँ चारूधामक दर्शनक विचार तर पड़ैत गेल। अखन तक देखिते छहक, माता-पिताक पार लगबैत दूटा बेटोकेँ पढ़ेलौं-लिखेलौं, बिआह-दान केलौं आ चारिटा बेटीक बिआह-दान सेहो करबे केलौं।"

'चारिटा बेटीक बिआह-दान' सुनि मोतीलालक नजैर अप्पन दुनू बेटीपर पड़लैन। बजला- "भाय, तेहेन दुरुह परिवेश समाज बना लेलैन अछि जे गंगो

असनानसँ भारी बेटीक बिआह-दान भऽ गेल अछि।”

भारी-सँ-भारी काज किए ने हुअए, जेकरा करैकाल कठिन-सँ-कठिन परिस्थितिक सामना किए ने करए पड़ए, मुदा काज भेला पछाइत मन जहिना समगम भऽ जाइए तहिना हीरालालकेँ भऽ गेल छेलैन, मुदा मोतीलालकेँ तँ से नहि भेल छेलैन तँए नजैर निच्चाँ खसि रहल छेलैन, जेकरा देखि-सुनि बोल-भरोस दैत हीरालाल बजला-

“मोतीलाल, पारिवारिक जीवन जँ शान्त-चित्तसँ निमाहि ली, तँ ओ गंगोअसनानसँ पैघ काज भेबे कएल किने।”

❑❑❑

❑❑

❑ आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 08-13

> हुनकामे ई गुण रहैन जे अपन बात ओहने
> भाषामे बाजैथ जेहेन भाषा सुननिहारक होइ।
> भाषो तँ पेंचीदा अछिए। बिनु बुझल-
> गमल लोक ठकाइते अछि।

परिवारमे प्रतिष्ठा पबैले परिवारक नीक बेवहारक संग नीक विचारक संस्कार आनए पड़ैए। देखिते छी जे समाज समुद्रोसँ अथाह गहींर अछिए, चाहे ओ काजक रूपमे हुअए आकि शील-गुण-विचारक रूपमे हुअए। समाजमे जहिना एक दिस भागवत-पुराणक पाठ होइते अछि, जेकर पाठकर्ता सेहो छथिए, तहिना दोसर दिस बैंकक डकैती, गाड़ीक छिना-झपटी आदि-आदिक पाठ नहि होइए, माने सिखौल नहि जाइए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो सिखौल कि बनौले जाइए। समाजमे ऋषि, मुनि, योगीक संग चोर, डकैत, लुच्चा-लम्पट सभ अछिए, माने सबहक पाठ नहि पढ़ौल जाइए, से नहि। एहेन जे हरनमा समाज अछि तैठाम सीता सन पतिव्रताकेँ ताकि लेब ओ एकटा रामक कोन बात जे सातोटा राम बुते नहि हेतैन। खाएर जे हेतैन, ई तँ शास्त्र-पुराणक बात भेल, मुदा हरेकृष्ण बाबूक परिवारक अप्पन शील-सोभाव रहलैन अछि।

हरेकृष्ण बाबूक पिता शीलानन्द बाबूमे मानवीयताक ओहन शील-सोभाव रहलैन जे मनुक्खक आगूमे धन-सम्पतिक महत्वकेँ कम बुझै छला। अही सोभावक चलैत शीलानन्द बाबू समाजमे विरोधी रूपमे मानल गेला, जेकरा तोड़-जोड़ करैत समाजक विरोधी बना देल गेलैन, मुदा तेकर परवाह नहि करैत शीलानन्द बाबूमे तीनटा देखार रूपमे समाजसँ हटल गुण रहबे करैन। पहिल, चालीस-पचास बीघा जमीन रहने, केतबो पछुआएल गृहस्थी माने खेती किए ने हुअए मुदा चारि-पाँच बखारी धान शीलानन्द बाबूकेँ भइये जाइन। गामक जीवनक कि दशा छल सभ जनिते छी। एक बखारी धान रखि सभ धान सवाइपर माने एक मन धानक सवा मन, लगाबैथ। समयानुकूल धानक असुली हेबो करैन आ नहियोँ होइन। शीलानन्द बाबू अपन जीवन चलबैले अपन जीवन सूत्र गढ़ने छला। जँ कोनो कारणेँ धानक

असुली पछुआ जाइ छेलैन तँ मूड़क-मूड़ वा विकट स्थिति देखि ऋण मुक्तो कऽ दइ छेलखिन।

दोसर गुण छेलैन जे रस्ताक बगलेमे निचरसे दरबज्जा बनौने छला, दुपहरक पछाइत शीलानन्द बाबू बैइसै छला। रस्ता धेने जे कियो राही-बटोही जाइथ तिनका आग्रह करैत कहै छेलखिन-

"केतए जाएब, आउ कनी सुसता लिअ।"

जेहने चौड़गर दरबज्जाक ओसार छेलैन तेहने चौड़गर मोथीक सोंफ (सोंफ माने नमगर-चौड़गर ओछाइन) स्थायी रूपसँ बिछौले रहै छेलैन। मनसँ ई शंका हटा नेने छला जे केकरो यात्रा काल नहि टोकिऐ, ओ केते उचित अछि आ केते अनुचित तेकरा अप्पन बुधिक अनुसार निर्णय कऽ नेने छला जे किछु यात्री ओहन होइ छैथ, जिनका टोकब अनुचित भऽ सकैए, मुदा सभ यात्री ओहने छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। एहनो तँ कहैक चलैन अछिए जे बेर-बिपैतमे कियो-केकरो पुछनिहार नहि होइ छैथ। भाय, समाज छी किने, भिखमंगो बनबैक शक्ति अपना पेटमे रखने अछि आ महादार्शनिक, महापुरुष बनबैक शक्ति नहि रखने अछि सेहो बात नहियेँ अछि। खाएर जेतए जे अछि मुदा पएरे चलनिहार यात्री तँ गामे वा गामक बगले समाजक हेता, तँए हुनका टोकब अनुचित नहियेँ हएत, शीलानन्द बाबू निधोकसँ राहीकेँ पुछि दइ छेलखिन-

"कहाँ रहै छी?"

"फल्लाँ गाम वा फल्लाँ टोल।"

"की हाल-चाल गाम-टोलक अछि?"

कहैत शीलानन्द बाबू अपन हाथक इशारासँ लगमे आबि बैइसैले सेहो कहथिन।

तेसर गुण रहैन जे अपन बात ओहने भाषामे बाजैथ जेहेन भाषा सुननिहारक होइ। भाषो तँ पेंचीदा अछिए। बिनु बुझल-गमल लोक ठकाइते अछि। गप-सप्पक क्रममे शीलानन्द बाबू ओइ तह तक जाइक कोशिश करै छला जेतए ओकर बुनियाद अछि। जइसँ एते लाभ होइते छेलैन जे एक दिस शीलानन्द बाबू घर बैसल ज्ञानार्जन करै छला तँ दोसर दिस सुननिहारोकेँ किछु-ने-किछु

रास्ता भेटिये जाइ छेलैन।

पिताक बनौल एहेन परिवारमे हरेकृष्णक जन्म भेल छेलैन तँए परिवारक बनल पवित्रधाराकेँ जीवित रखैत हरेकृष्ण बाबू साइंस टीचरक रूपमे घरसँ दस कोसक दूरीपर नोकरी पकड़लैन। पुरना दस कोसक दूरी अखन तीस किलोमीटर बूझू। रास्ताक दूरी देखि अपने माने हरेकृष्ण बाबू, स्कूलक बगलेमे रहैक डेरा लेलैन। हाइ स्कूलक होस्टलोक नीक बेवस्था नहियेँ छल। केतौ नीको छल, जैठाम खाइ-पीबैले 'मेस' चलै छल, मुदा एहनो तँ छेलैहे जैठाम ने होस्टल छल आ ने मेसे चलै छल। खाएर जे छल, जेतए छल से छल। आजुक तँ एहेन परिस्थित बनियेँ गेल अछि जे हाइ स्कूल तक ने विद्यार्थीएकेँ आ ने शिक्षकेकेँ बाहर रहैक जरूरत रहल अछि।

अपने हाथसँ अपन भोजन हरेकृष्ण बाबू बनबै छला। जइसँ भानसक वर्तन सेहो मँजै छला। ओना, सुभ्यस्त परिवार रहने गामोसँ खेबा-पीबाक अधिकांश वस्तु पहुँचते छेलैन। हाइ स्कूलक आर्थिक स्थिति नीक नहि रहने प्रधानाध्यापककेँ अढ़ाइ साए आ सहायक शिक्षककेँ डेढ़ साए रूपैआ वेतन भेटै छेलैन।

शिलानन्द बाबूकेँ पाइक खगता रहबे ने करैन तँए हरेकृष्णकेँ कहि देलखिन-

"बाउ, ऐगला परिवार अहाँक हएत तँए अपन कमाइ संचित करैत चलू।"

❑❑❑

❑❑

❑ आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 72-75

“कहलौं तँ बेस बात मुदा पढ़लौं-लिखलौं दुनू गोरे फुट-फुट स्कूलमे, सभ दिन रहलौं फुट-फुट मुदा धिया-पुता तँ सझिया भेल किने, तखन देह छिपौने काज चलत?”

“अपन परिवार भेल, आमदनी सत्तैर हजार महिना भेल, तइमे घर भाड़ा आ इन्कम टैक्सक संग अनेको खर्चक सूत्र लगले अछि। घर केना चलत से तँ अपने दुनू गोरे ने विचारब?”

जहिना सुरेन्द्र प्रसाद अपन मोटा पत्नीपर पटकए चाहलैन तहिना पत्नी भोलीबौलक गेन जकाँ उनटबैत बजली-

“देखू हमर कुल-खनदान एहेन नै रहल जे केकरो अधिकार छीनत। जे काज अहाँक छी ओ अहाँक भेल आ जे हमर छी ओ हमर भेल। छह मासक पछाइत पेटक बच्चाक दुख माइए बुझैत अछि, बाप थोड़े बुझत? आकि कहियो किछु कहबो केलौं?”

दू-हत्थी बौल फेकैत सुरेन्द्र प्रसाद बजला- “कहलौं तँ बेस बात मुदा पढ़लौं-लिखलौं दुनू गोरे फुट-फुट स्कूलमे, सभ दिन रहलौं फुट-फुट मुदा धिया-पुता तँ सझिया भेल किने, तखन देह छिपौने काज चलत?”

सुनयना अपनाकेँ कमजोर महसूस करैत बजली- “अहाँक जे विचार अछि से बाजू, जे अनुकूल हएत मानि लेब आ जे नै हएत ओकरा तत्काल रखि लेब।”

गम्भीर चिन्तक जकाँ सुरेन्द्र बजला- “जेते हमरा दरमाहा भेटत ओ अहाँक हाथमे दऽ देब आ अहाँ अपना विचारे परिवार चलाएब।”

नोकरीकेँ जिनगीक धार आ परिवारकेँ सवारी बुझि सुरेन्द्र प्रसाद नावपर सवार होइत भविस दिस बढ़ला। मनमे उठलैन जे एकबेर पत्नीकेँ पुछि लिऐन जे केना घर चलाएब।

..मुदा एक मनकेँ दोसर मन रोकैत कहलकैन- जखन कुल-खनदानक रक्षक छैथ तखन किछु बाजब उचित नहि, तँए अपना-ले सोचब नीक हएत।

चलैत धारमे नावकेँ हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथरसँ सामना करैये पड़ै छइ। जखने वेतनक भीतर परिवार चलत तखने एक बान्हल परिवार जकाँ आगू बढ़ब। जखन समाजे अपन रोग अपने अराधि-अराधि कऽ रोगाएल अछि तखन अपन रोग के देखत? मुदा एहनो रोग तँ होइते अछि जेकरा जाधैर दोसर नै बुझैत ताधैर दोसरकेँ कहलो नहियेँ जाइत। कमा कऽ जे परिवारमे आनब ओ पत्नी देखबे करती, आमदपर आमद देखि चसकबे करती, जेते चसकती तेते लोको देखबे करत। देखबो किए ने करत कोनो कि केकरो आँखि सीयल छै जे नै देखत। मुदा बेटा-बेटीक बिआह-दान–माने पढ़ा-लिखा सक्षम बना जिनगीमे उतरैक अवस्था धरिक काज–जँ नै कऽ लेब तँ कोन मुहेँ समाजमे जीब? नीक हएत जे जहिना होशियार रोगी दबाइए दोकानपर दबाइ खा लइए आ घरपर अनबे ने करैए, तेहने जँ उपाय होइ तँ नीक हएत…।

❑❑❑

❑❑

❑ उलबाचाउर (2013), **जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 44-45**

दोसर दिस नजैर मुड़िते सुवोधिनीक मनमे
जगलैन, रावणक लंका तँ सुनने छी मुदा ओकरा तँ
त्रेते युगमे हनुमान आगि लगा जरा देलखिन आ राम
रावणकेँ सत्यानास कऽ विभीषणकेँ राजा बना देलखिन।
आजुक परिवेशो दोसर अछि, माने त्रेता युगक पछाइत
द्वापरो बीत गेल आ अखन कलयुग चलि रहल अछि,
तखन लंका रावण-राक्षसक रहल केना आकि
रामेक स्थापित कएल रामराज्य की भेल?
मुदा लगले सुवोधिनीक मन अपने
भट-भुट करए लगलैन।

फागुन मास। फगुआसँ तीन दिन पूर्व रामेश्वर भाँगक निशाँमे उमकैत गाम-समाजसँ आँगन आबि पुबरिया घरक ओसारपर बैस मने-मन विचारलक जे परसूए फगुआ छी..! एकाएक फगुआक लहकी रामेश्वरक आगूमे हुलकए लगलै। रामेश्वरक मन मानि गेलइ जे फगुआ पाबैन सालक सभ पाबनिक राजा छी। राजा वएह ने जेकर आँट-पेट नमहर होइ। आन पाबनिक अपेक्षा फगुआक आँट-पेट नमहर अछिए। किए तँ जे पाबैन फागुक अन्तिम दिनक सीमापर होइए तेकर धुन माघक पंचमीएसँ होइए। माने भेल माघक बीसम दिन, जइ दिन पढ़निहार-लिखनिहार लोकैन सरस्वती पूजा मनबै छैथ आ किसानी जीवनसँ जुड़ल किसान खेतक जोत शुरू करै छैथ, माने हर ठाढ़ करै छैथ। तहिना पसारी लोकैन माने बरही सभ सेहो हरक फाड़, खुरपी, हँसुआ, कोदारिक मुँह-कान बनबैत पसारमे धान दए लाबा फोड़ि सालक किसानी जीवनक भाग्य-रेखा सेहो गुणबे करै छैथ जे ऐबेरक किसानी जीवन केहेन हएत, माने समय केहेन हएत।

एक दिनक पाबैन रहितो जहिना फगुआक धुन वसन्त पंचमीसँ शुरू होइए

तहिना डम्फा-ढोलक आवाजक संग फगुआ-जोगिराक धुन सेहो फागुन बीतिते निकलए लगैए। तहिना शिवरातियेसँ, माने आधा फागुन चढ़िते लोक शिवरस लेब सेहो शुरू कइये दैत अछि। शिवरस पीब रामेश्वर शिव राजेक धुनिमे पत्नीकेँ शोर पाड़लक।

अपन हाक सुनि सुवोधिनी बुझि गेली जे जरूर केतौ शिवपान करि कऽ पति एला अछि। अपन कर्मक क्रियाकेँ सुनबैत सुवोधिनी बजली-

“हाथ लागल अछि, कनियेँ कालमे काज सम्हारने आबि रहल छी।”

रामेश्वरक मनक भावभूमि तेते ने उमंगित भऽ गेल छेलै जे होइ कहीं विचारे ने धारमे भँसि जाए। ओज भरल शब्दमे रामेश्वर बाजल-

“कर्मक क्रियाक कि ओर-छोर अछि जे ओकरा अन्त कइये कऽ अहाँ आएब। जे बँचि गेल तेकरा काल्हिले रहए दिऔ। एक गिलास पानि पीबाक तृष्णा जगि गेल अछि, पियाससँ कण्ठ सुखि रहल अछि।”

कण्ठ सुखब सुनि सुवोधिनी आगूक काजकेँ छोड़ि, आँगन आबि पतिकेँ भरल गिलास पानि हाथमे पकड़ा पानि भरल लोटा आगूमे राखि ठाढ़ भऽ गेली।

पानि पीबैसँ पहिने रामेश्वर पत्नीकेँ कहलैन-

“आइ बहुत बात कहैक अछि, तँए पहिने सुनियेँ लिअ, पछाइत जेतए जेबाक हुअए से जाएब।”

पतिक विचारमे सुवोधिनीकेँ दुबट्टी जकाँ दुनू विचार मनमे नचलैन। पहिल ई जे समाजमे बात कहब ओहनो अछिए जे अधला बात माने अधला विचार होइए। तैसंग दोसर विचार सुवोधिनीकेँ ईहो मनमे नचलैन जे पति भरिसक शिवभक्तिमे लागए चाहि रहला हेन, तँए परिवारक अपन सभ जिम्मा सुमझा दिअ चाहै छैथ।

विचारक द्वन्द्वमे पड़ल सुवोधिनी अपनाकेँ चुपचाप रहबेकेँ नीक बुझि बिना किछु बजने-भुकने आगूमे कलमच ठाढ़ रहली। गिलासो भरि पानि पीब रामेश्वर बाजल- “पियाससँ कण्ठ सुखि रहल छल, तैठाम अहाँ तेहेन अमृत पान करेलौं जे जीवन घुरि आएल। होइ छल जे पियासे प्राण निकैल जाएत।”

अपन काजक गुण सुनि सुवोधिनीक मन सेहो अमृतपान करैत फुटलैन-

“किछु खेबोक इच्छा होइए?”

दार्शनिक शैलीमे रामेश्वर बाजल-

“जखन मनक तृष्णे मेटा गेल तखन इच्छे कथीक रहत। इच्छा तँ मनक तृष्णासँ निकैल प्रवाहित होइए।”

अपना जनैत रामेश्वर जे बात बाजल तइसँ हटि सुवोधिनी बुझली। ओ बुझली जे जहिना अन्न पेटभरा होइए तहिना पानियोँ तँ अछिए। तृष्णा दुनूक अछि, अन्नो पानि मंगैए आ पानियोँ अन्न मंगिते अछि.! सुवोधिनी बजली-

“आब जाइ छी।”

रामेश्वर बाजल-

“जाइसँ पहिने किछु सुनि लिअ।”

“की?” पुछि सुबोधनी पतिक आँखिमे अपन आँखि देली तैबीच रामेश्वर बाजल-

“लंकोसँ बदतर अप्पन गाम बनि गेल अछि।”

पतिक बात सुनि सुवोधिनी मने-मन मोन पाड़ए लगली जे लंका अछि केहेन जे एना पति कहलैन। मुदा लगले सुवोधिनीक नजैर ओइ लंकापर सँ हटि गामक लंकामे, माने गामकेँ जे लंका नाम सुनली, आबि विचरण करए लगलैन। मुदा केतौ किछु नहि देखि विचारली जे गाम तँ गाम जकाँ अछिए। कहाँ किछु केतौ देखि रहलौं हेन.! फेर दोसर दिस नजैर मुड़िते सुवोधिनीक मनमे जगलैन, रावणक लंका तँ सुनने छी मुदा ओकरा तँ त्रेते युगमे हनुमान आगि लगा जरा देलखिन आ राम रावणकेँ सत्यानास कऽ विभीषणकेँ राजा बना देलखिन। आजुक परिवेशो दोसर अछि, माने त्रेता युगक पछाइत द्वापरो बीत गेल आ अखन कलयुग चलि रहल अछि, तखन लंका रावण-राक्षसक रहल केना आकि रामेक स्थापित कएल रामराज्य की भेल? मुदा लगले सुवोधिनीक मन अपने भट-भुट करए लगलैन।

पत्नीक मनकेँ भट-भुट करैत देखि रामेश्वर बाजल-

“एना मन भट-भुट किए करैए.! हम गना दइ छी।”

पतिक मुहसँ 'हम गना दइ छी' सुनि सुवोधिनी मने-मन विचारली जे गिनतीए सुनब नीक हएत। नीक ऐ मानेमे हएत जे जेतेक गिनतीक संख्या रहत तेतेक रंगक भेल। सुवोधिनी बजली-

"की गना दइ छी, गनाउ।"

❑❑❑

❑❑

❑ आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 42-45

जाधैर सभ अपन-अपन गामक सम्पैतकेँ नहि जगौत ताधैर आन ठामसँ जे सम्पैत औत ओ या तँ भीख बनि कऽ औत वा कर्जा बनि कऽ।

चमेली : (पतिसँ, कर्मनाथ दिस देख) अहाँ हाकिम छिऐ कि माटिक मुरूत। मोटका-मोटका जे कानूनक किताब सभ रखने छिऐ ओ झींगुर खाइ-ले। जखन कानून हाथमे अछि, पुलिस अछि, जहल अछि तखन ओकरा सभकेँ छुट्टा खेलाइले किए छोड़ि देने छिऐ। पैछला खेप–सात दिन पहिने–अढ़ाइ साएमे जेते समान भेल रहए ओतबे समान कीनैमे आइ तीन साए लागल! अहाँ नोकरिया छी, अहूँक दरमाहा अहिना बढ़ैए?

कर्मनाथ : केते खापैड़क मक्के जकाँ, भरभड़ाइ छी। होइए जे हम खूब बजन्ता छी।

चमेली : उलटे चोर कोतबालकेँ डाँटए! अहीं हमरापर आँखि लाल-पीअर करै छी। एतबो आँखि उठा कऽ नै देखै छिऐ जे अहाँकेँ जखन एतेक दरमाहा अछि तखन ई रामा-कठोला अछि जे बेटी बिआह करै-जोकर भेल जाइए मुदा हाथमे एकोटा फुटल कौरियो ने अछि। अहींक आँफिसमे जे कम महिना पबैबला संगी सभ छैथ, हुनका सभकेँ की दशा होइत हेतैन। तहूमे कम महिना पौनिहारकेँ धियो-पुतो बेसी होइए। जइसँ परिवारो नमहर रहै छइ।

(चमेलीक बातक गम्भीरताकेँ आँकैत कर्मनाथ तीन बेर चमेलीकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि देख, नमहर साँस छोड़ैत।)

कर्मनाथ : बड़ सुन्नर बात अहाँ बजलौं मुदा हम तँ पढ़बे केलौं नोकरीए करैले। जे आइ बुझै छी, भूल भेल। जेना हम जमीनबला परिवारक छी तेना हमरा खेतीक सम्बन्धमे पढ़क चाही छल। जेतेक धन माटिक तरमे साले-साल बिला जाइए ओकर चौथाइयो नोकरीमे नइ कमाइ छी। तेतबे नहि, जाधैर सभ अपन-अपन गामक सम्पैतकेँ नहि जगौत ताधैर आन ठामसँ जे सम्पैत औत ओ या तँ भीख बनि कऽ औत वा कर्जा बनि कऽ। खाएर जे

हौउ। हँ, तँ कहै छेलौं जे लगले तँ हम्मर दरमाहा बढ़त नहि। तखन तँ दुइए-टा उपाय दिवस गुजारैले अछि। पहिल अछि जे जेहेन चीज-वौस कीनै छेलौं, तइसँ कनी झूस माने दब कीनू चाहे जेहेन कीनै छेलौं तेहने कनी कम करि कऽ कीनू। जँ से नइ करब तँ पाओल जाएब। कर्जा तरमे पड़ब। अइले एते आमील किए पीबै छी। महगी कि कोनो हमरे-अहाँटा-ले भेल हेन, जे एते आफन तोड़ै छी। आकि सभले भेलैए। जहाँ धरि हाकिमक बात अछि, हाकिमक मतलब ई नहि ने अछि जे जे मन फुरत से कऽ देबइ। महगी रोकब हमरा सबहक बुत्ताक बात छी जे रोकि देबइ। जेकर हम नोकरी करै छिऐ ओकरे काज छिऐ महगी आनब।

चमेली : तखन झुठे एते लाम-काफ किए देखबै छिऐ?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) दरमाहा तरे देखबै छिऐ।

❑❑❑

❑❑

❑ मिथिलाकबेटी (नाटक 2009), **जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 15-16**

“एक दिस फलक उपटान भेल जा रहल अछि, जे मनुक्खक पौष्टिक अहार छी, दोसर दिस जइ लकड़ीक गुणक चर्च करैए–माने घरक समान बनबैमे–तेकर जगह लोहा आ फाइवर-प्लाष्टिकक वस्तु नेने जा रहल अछि तखन ओइ लकड़ीक उपयोग केतए हएत?”

“एतबे नहि ने अछि। आरो बहुत समस्या अछि जइसँ गामक उपजा-बाड़ी मारल जाइए।”

शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पुछलयैन-

“से की अछि?”

बजला-

“पहिनौं–माने जखन पर्यावरण-प्रदूषणक हवा नइ उठल छल–गाछी-कलम लोक लगबै छला आ लगेनौं छला, जे फलक खेतीक रूपमे छल। मुदा जखन पर्यावरण-प्रदूषणक हवा चलल तखन फलक खेतीक रूप बिगड़ए लगल!”

फलक खेतीक की रूप बिगड़ए लगल से नजैरमे एबे ने कएल। पुछलयैन-

“से की काका?”

शुभकान्त काका बजला- “लोकक नीक विचार हवामे उधिया गेल। फलोक गाछसँ ऑक्सीजन भेटैए, जइसँ दूषित हवा स्वच्छ बनैए से विचार कमि गेल आ बढ़ि गेल जे काँटक गाछ लगौने अधिक ऑक्सीजन भेटैए! जइसँ उपजा धीरे-धीरे कमए लगल आ बोन-झाड़ बेसिया गेल।”

आँखिक सोझमे देखल ऐछे तँए सहमत दैत बजलौं-

“हँ, से तँ भाइये गेल अछि!”

सहमत पबिते शुभकान्त काका बजला- “एकरो छोड़ह। देखबे करै छहक जे

गामक जेते उपजाउ जमीन अछि ओ केना अनउपजाउ भेल अछि। तैपर सँ बाहरी बेपारी सभ आबि-आबि की-कहाँ क गाछ लगबैक तेहेन-तेहेन फर्मूला सभ लोकक सोझमे रखैए जे गाछ-बिरीछ फलक साधन नहि पाइक साधन बनि रहल अछि!"

बजलौं-

"हँ, से तँ हमहूँ पचीसटा गाछ सागवानक रोपलौं अछि। बीसे बर्खमे लाखक पैदावार भऽ जाएत।"

शुभकान्त काका बजला-

"एक दिस फलक उपटान भेल जा रहल अछि, जे मनुक्खक पौष्टिक अहार छी, दोसर दिस जइ लकड़ीक गुणक चर्च करैए–माने घरक समान बनबैमे–तेकर जगह लोहा आ फाइवर-प्लाष्टिकक वस्तु नेने जा रहल अछि तखन ओइ लकड़ीक उपयोग केतए हएत?"

शुभकान्त कक्काक बात सुनि जेना भक् खुजल। बजलौं-

"हँ, से तँ भाइये रहल अछि!"

❑❑❑

❑❑

❑ कान्तियोग (2017), **जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 71-72**

घर केहनो सुन्दर-सँ-सुन्दर मजगूत-सँ-मजगूत किए ने हुअए मुदा जँ ओइमे मनुक्खक मनुक्खपन नहि रहत तँ ओ मरनासन्न भइये जाइए।

नव पीढ़ीक लोककेँ कहए चाहै छिऐन जे जे मिथिलाक भूमि दर्जनो धारसँ आइये नहि, सभ दिनसँ घेराएल रहल अछि, तैठाम जनमानस भीतक (माटिक) देवालपर खढ़-बाँसक आलमसँ घर बना खुशीलाल भाय दिवस गुदस करैत एला अछि.! ऐठाम एकटा बात मनमे उठि सकैए, ओ अछि जखन कोसी-कमलाक बाढ़ि गाम-गामक भीत घरकेँ मेटा देलक तखन खुशीलाल भाइक केना बँचल रहलैन? माने, जखन कोसी आ कमला, दुनू धारक बाढ़ि अबिते छल तखन भीत घर केना ठाढ़ रहल? हँ, अहूँक अनुमान ठीके अछि। मुदा सत्य ई अछि जे पहिने धारक बाढ़ि छिड़ियाइत चलै छल, जइसँ नीचे-नीचे, नीचरस जमीन होइत बाढ़िक पानि आगू मुहेँ बढ़ैत जाइ छल। केहनो पैघ बाढ़ि अबैत रहै तँ अढ़ाइ दिनक पछाइत जरूर निच्चाँ मुहेँ भऽ जाइ छल। तँए पहिलुका लोकक कहब छैन जे बाढ़िक चढ़न्त मात्र अढ़ाइ दिन होइए। खाएर जे होइए कि होइ छल, मुदा साए-सवा-साए बर्खक भीतघर तँ होइते छल।

दलानपर बैसल खुशीलाल भायकेँ अपन आवास (रहैक ठौर) देखि मने-मन तृप्तिक आश लागिये रहल छेलैन। अप्पन अन्तिम दिनक बीचक समय, जे आवाससँ परिपूर्ण देखि रहल छला जइसँ खुशीलाल भाइक मनमे तृप्ति भऽ रहल छेलैन। अखनो ओहन घर (दलानक घर) मनो-मन आ आँखियोसँ देखिये रहल छी जे अहुना बनल रहत तँ पनरह-बीस बरख आरो सेवा दइ-जोकर रहबे करत। मनुक्खक बासक माने भेल, घर केहनो सुन्दर-सँ-सुन्दर मजगूत-सँ-मजगूत किए ने हुअए मुदा जँ ओइमे मनुक्खक मनुक्खपन नहि रहत तँ ओ मरनासन्न भइये जाइए।

❑❑❑

❑❑

❑ **आएल आशा चलि गेल (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 82-84**

गाम-समाजक बीछल लोक प्रशासनमे रहितो मोतीलाल ई नहि बुझि सकला जे कम लोकक शासन जाधैर बेसी लोकपर रहत ताधैरिक वातावरण विषाक्त रहबे करत।

जहिना दुरगमनियाँ कनियाँकेँ सासुर बास भेला पछातियो अपन गाम-समाजक, पिताक गाम-समाज, सदिकाल मनमे रहै छैन मुदा समयक संग चलैत-चलैत नैहरकेँ बिसैर सासुरक रंगमे रंगि अपन घर-दुआर, सर-समाज बुझए लगै छैथ तहिना मोतीलालकेँ नोकरीक शुरू दिनमे भेलैन।

नोकरीकेँ नोकरी बुझि अपन जन्मो स्थान आ जन्म स्थानक स्थायी बासी बनि जीवन धारण करैक विचार मनमे बनले रहलैन। शुरू-शुरूमे ब्लौकक जिम्मामे मोतीलाल बी.डी.ओ. बनि काज केलाह। निच्चाँ-ऊपरक धार देख, माने कार्यालयक चपरासी-किरानीसँ लऽ कऽ ऊपरक, माने शासनक ऊपरका जिम्मेदार शासनक रूप-रेखाक अध्ययन सेहो केलैन। मुदा ओही धाराक अपन कार्य-प्रणाली बना पछाइत अपनाकेँ सम्मिलित कऽ लेलैन। गाम-समाजक बीछल लोक प्रशासनमे रहितो मोतीलाल ई नहि बुझि सकला जे कम लोकक शासन जाधैर बेसी लोकपर रहत ताधैरिक वातावरण विषाक्त रहबे करत।

संयोग बनल, 'इन्दिरा आवास'क योजना घर बनबैले चलल। जहिना पैजामा पहीरिनहार अपन पैशाव करैक गड़ सेहो बना लइ छैथ तहिना प्रशासनिक पदाधिकारी सेहो पाइ खेबाक गड़ अपन बनाइये लइ छैथ। शुरूमे मोतीलालकेँ किछु भियौन जरूर लगलैन मुदा समाजो तँ समाज छीहे। समाजक प्रभाव बेकतीपर पड़िते अछि। ओही प्रभावसँ प्रभावित भऽ मोतीलाल 'इन्दिरा आवास'मे नीक पाइ बटोरलैन। गामक सिनेह रहबे करैन, पहिलुके उझुक्कामे एक बीघा खेत गाममे कीनि लेलाह। नोकरीक दुइये सालक पछाइत बीघा भरि खेत कीनबकेँ समाज अधला नहियेँ बुझलैन। कोन जरूरी समाजकेँ छेलैन जे बुझितैथ कोनो नोकरीक दरमाहा ओइ पदक

अनुकूल भेटैए, जइसँ परिवारक भरण-पोषण, स्तरक हिसाबसँ भऽ सकत। जहिना आनो-आन गाममे सरकारी नोकरी पौनिहार जखन साधरण पदबला तीन-मंजिला पक्काघर आ बैंक-बैलेंसक संग जमीनो –जत्था कीनबे करैए तैठाम तँ प्रशासनिक पदक तँ अपन रूतबा अछिए।

❑❑❑

❑❑

❑ जीवनक कर्म जीवनक मर्म (2021), **जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ 47-48**

राजतंत्रक बीच आमजनक जे जीवन होइए ओ ओहन कष्टकर होइते अछि, जेकरा दूर करब बाल-बोधक खेल नहियेँ छी।

संयोग बनल, दिन उगले सियाराम काकासँ भेँट करैक समय भेट गेल। विदा भेलौं। अपना मनमे रहिते अछि जे जँ करवनो काजसँ पलखैत भेटैए तँ सियारामे काका ऐठाम जा कऽ चाहो-पान खाइ-पीबै छी आ गपो-सप्प करिते छी। एते तँ गुण हुनकामे छैन्हे जे जहिना अपने कठिन-सँ-कठिन समयकेँ क्रियानुकूल बना क्रियवान रहै छैथ तहिना दोसरोकेँ क्रियाशील बनैक प्रेरणा सेहो दइते छैथ। सियाराम काका दरबज्जेपर छला। रस्तेपर सँ बजलौं-

"काका, गोड़ लगै छी।"

ओना, दरबज्जापर पहुँचते सियाराम कक्काक चेहरा देखि मन झुरझुरा गेल। झुरझुरा ई गेल जे भरिसक कक्काक मनमे कोनो चिन्ता पैसल छैन। ओना, मन ईहो चेतौनी दैत कहबे करै छल जे चिन्तासँ मन खसल छैन आकि चिन्तनसँ चिनमय छैन, से तँ भेटत गप-सप्पक पछातिये।

सियाराम काका बजला-

"दनदनाइत चलैत रहह।"

अनका जकाँ सियाराम काका नहि कहै छैथ जे भगवान सभ किछु देथुन। हाथीक संग हथिसार आ घोड़ाक पीठ सवार। ..बजलौं-

"काका, दनदनाइत केना चलब। तेहेन ने समय भऽ गेल अछि जे सभ दनदनी झड़ि गेल।"

अपना जनैत झाँपि-तोपिकऽ बजलौं, किए तँ दनदनी कि कोनो एक्केरंगक होइए। मुदा पारखी लोक सियाराम काका छथिए, ओ बुझि गेला जे भरिसक कोरोनाक हवामे देवशंकरक पावर ढील भऽ गेल अछि जइसँ दनदनीए कमि गेल अछि। सियाराम काका बजला-

"हवा-बिहाड़िमे लोक कहुना ने कहुना जान बँचाइये लइए किने। जखन

जान बँचि जाएत तखन फेरसँ दनदनी सिरैजिये लेत।"

सियाराम कक्काक विचार नीक लागल, बजलौं-

"हँ, से तँ सिरैजिये सकैए।"

जहिना पैरमे गड़ल काँटकेँ कतबाहिसँ सूइयाक नोकसँ काँटक मुँह अलगा आँगुरसँ पकैड़ निकालि लइ छी तहिना अपनो सियाराम कक्काक पेटक बातकेँ विचारक भूमिका बान्हि निकालए चाहि रहल छेलौं, मुदा से ओहन सिरजैया जकाँ जे दुनियाँक भूमिका तँ बान्हि दइ छैथ मुदा अपन परिचय-पात देबे ने करै छैथ, तहिना भऽ रहल छल। मध्य युगक रचनाकारमे एहेन दृष्टिमान अछिए। ऐठाम प्रश्न अछि जे अपन वैचारिक भावक रूप आ अपन जीवनक रूप, जे जीवन ओहन वैचारिक भवन तैयार करैक प्रेरणा दइए, तइसँ नीक ने जे अपन बेवहारिक, माने जे ओहन शक्ति पेब सृजन केलैन, जीवनक चर्च करैत प्रेरित करितैथ। ओहने प्रेरणा ने प्रिय वा प्रेय होइए बाँकी तँ अप्रिय वा अप्रेय होइते अछि।

ऐठाम हम ई नहि कहए चाहै छी जे मध्य युग, राजा-रजबारक युग छल। राजतंत्रक बीच आमजनक जे जीवन होइए ओ ओहन कष्टकर होइते अछि, जेकरा दूर करब बाल-बोधक खेल नहियेँ छी। खाएर जे छी तइसँ अपने कोन मतलब अछि आकि सियारामे काकाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन मात्र अपन पारिवारिक भारसँ। भलेँ पाँचे गोरेक परिवारक भार किए ने हुअए मुदा परिवार परिवार छी। जैठाम अस्सी बर्खक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ जनमौटीक कोन बात जे जन्मोसँ पूर्वक पेटक बच्चाकेँ सेहो सेवा कएले जाइए।

❑❑❑

❑❑

❑ **भरि मन काज (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 71-73**

जहिना दुखक जिनगी कटि सुखक जिनगीमे प्रवेश करैए आ वसन्ती फूलो आ वरसाती गाछो जकाँ अंग-अंग भड़ैक उठैए तहिना भौजीक मन भैयाक कानक बीमारीक दुखसँ सुखमे बदैल गेल छेलैन जइसँ अंग-अंग प्रमुदित भइये गेल छेलैन। भौजी बजली- "हम जे लखेरिया बनब से अवगैत अछि। लखेरिया तँ ओ सभ ने बनत जे देहेकेँ मनो आ अतमो कहैए। जे विवेकसँ बाजत ओ तँ देह, मन आ अतमाक दूरी बुझबे करत किने।"

पटना एम्ससँ सात दिनपर आइ गाम एलौं। ओना, काज सात दिनक नहि, मुश्किलसँ तीन दिनक छल मुदा लागल सात दिन। जिनगीक सभ दिशाक हिसाबे जखन बेहिसाब भऽ गेल अछि तखन तीन दिनक जगह सात दिनक कोन बात जे सतरहो दिन लागिये सकैए।

भेल एना जे ममियौत भायकेँ कानक बीमारी भऽ गेल छेलैन, अपने कहियो लहेरियासराय अस्पतालसँ आगू नहि देखलैन, तँए जरूरत भेलैन। ओना, सेवा-टहल करैले बेटा छैन्हे, मुदा ओहो गामसँ कहियो बाहर नहियेँ देखने छैन। ओना, एते होश शुभकलालकेँ छैन्हे जे जे कहथिन, माने जइ काजक लूरि छै ओ लगले कऽ दइ छैन आ जइ काजक लूरि नै छै, सेहो काज देखौला पछाइत कइये दइ छैन। ओना, काजक सेहो अपन रंग-रूप अछिए, जइसँ ओहो अगम-अथाह भइये गेल अछि। मुदा से अखन नहि, अखन मात्र काजक बेवहारिक रूपकेँ, माने वस्तु-जातकेँ अपन-अपन क्रियभूमिपर सजा ओकर मूर्त्त रूपमे, स्थापित करब अछि। तँए कि एकरा काज नइ कहबै? कोनो समाद-बारी पहुँचाएब अछि वा कोनो गप-सप्प सुनब अछि, दुनू तँ अछिए। हँ, दुनूमे की अन्तर अछि ओ तँ अपन-अपन विवेक कबूल करैए।

घरपर पहुँचते विचार भेल जे पहिने पत्नीसँ गामक हाल-चाल बुझि ली, पछाइत आन काज करब। जखन घर आबिये गेल छी तखन अगुताइये कथीक अछि, निचेनसँ अपन जीवन-यापन करब। मुदा से मन नहि मानलक, एते जोर उठौलक जे सभसँ पहिने अपन जे क्रिया-कलापक रूटिंग अछि तेकरा पकैड़ ली।

सात दिनक पटना प्रवासक बीच जीवन अस्त-व्यस्त भेने सभकिछु टुटि गेल। ने खेनाइ खाइक ठेकान रहल आ ने आरामक ठेकान रहल। मुदा ओ तँ बीतल, अखन जइ घड़ी आ जइ पहरमे घर आबि गेलौं तइ घड़ीक उपरान्तक जे जीवन अछि पहिने तेकरा ने जोड़ब, जइसँ जिनगीक चौबीसो घन्टाक अपन दिन-रातिकेँ जोड़ि समयक संग पूरए लगब।

मने-मन विचारिये रहल छेलौं कि तइ बिच्चेमे फोन आबि गेल। ममियौत भैयाक नम्बर देखि रिसिभ केलौं। 'हेलौ' मुहसँ निकैलते रूक्मिणी भौजी बजली-

"अहाँ इज्जत बँचा देलौं, बौआ.!"

नम्बर तँ भैयाक मोबाइलिक रहैन मुदा फोन केने छेली भौजी। भौजीक बातक कोनो भाँजे ने लागल जे की कहली, मुदा अपन मन ईहो मानैले तैयार नइ हुअए जे स्त्रीगणसँ हारि केना कबूल कऽ लेब जे बाजब- 'भौजी, अहाँक बात नहि बुझलौं।' तहूमे इज्जतक बात उठा देने छैथ। आइ जँ चौक-चौराहाक नरम-गरम बात रहैत तँ अनठाइयो दइतौं, सेहो ने अछि। ..अपने मन जोर दैत कहलक जे भौजीकेँ जवाब दिऐन- 'भौजी, हम कोन जोकरक छी जे अहाँक इज्जत बँचाएब.?'

जखने से कानसँ सुनती तँ अनेरे ने घाट परक चेल्हबा माछ जकाँ मुँह उठा चाल देती। जखने माछ जकाँ चाल देती तखने ने बुझि जाएब जे कोन माछ कोन सीके अछि। अपने ने भौजीक सिमान पकैड़ लेब।

खुशीसँ भौजीक मन उधियाइते छेलैन, बिना कोनो लागि-लपेटिके बजली- "एक्के-दुइये गामक लोक 'बैहरी भौजी', 'बैहरी काकी', कहए लगल अछि, मुदा से आब.?"

अधडरेरेपर सँ भौजी, जहिना तम्माक चाउरक मुड़ी छोपि लेल जाइए तहिना

बाजि कऽ चुप भऽ गेली। ओना, मनमे ईहो उठल जे बहीर भेने लोकक इज्जत थोड़े चलि जाइए। ई तँ आंगिक दोष भेल, ऐमे इज्जत-आवरूक कोन प्रश्न अछि.!

भौजीकेँ चुप देखि टोकारा दैत बजलौं-

“भौजी, अहूँ बड़ लखेरिया छी।”

जहिना दुखक जिनगी कटि सुखक जिनगीमे प्रवेश करैए आ वसन्ती फूलो आ वरसाती गाछो जकाँ अंग-अंग भड़ैक उठैए तहिना भौजीक मन भैयाक कानक बीमारीक दुखसँ सुखमे बदैल गेल छेलैन जइसँ अंग-अंग प्रमुदित भइये गेल छेलैन। भौजी बजली-

“हम जे लखेरिया बनब से अवगैत अछि। लखेरिया तँ ओ सभ ने बनत जे देहेकेँ मनो आ अतमो कहैए। जे विवेकसँ बाजत ओ तँ देह, मन आ अतमाक दूरी बुझबे करत किने।”

❑❑❑

❑❑

❑ संचरण (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 07-09

“घुरन, जहिना कोनो खेतक जजातकेँ नोकसान करैबला अनेको कीड़ी-फतिंगीक संग अनेको तत्त्व सेहो अछि, मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे ओ कीड़ी-फतिंगी खेतक माटिमे जनैम कऽ फड़ल आकि बाहरसँ आएल, तेकरा तँ बुझए पड़त किने।”

“घुरन, एक्के काजे दुनियाँ नइ ने चलैए। विचार आ बेवहार अर्द्धनारीश्वर बनि जाबे नहि चलत, ताबे जँ चलबो करत तँ चलिये केते दिन सकत। कखनो विचार बेवहारकेँ ठेलत तँ कखनो बेवहार विचारकेँ ठेलत।”

ओना, दिनमा कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, मुदा मात्राबद्ध गीत जकाँ मनक प्रवाह प्रवाहित होइत मुहसँ निकैल गेल-

“हँ, से तँ नहियेँ चलि सकैए।”

तैबीच दिनमा काकाकेँ एकटा जुक्ति आरो मोन पड़लैन। मोन पड़िते बजला-

“घुरन, लौफावालीकेँ कहि देने छिऐ जे हाटसँ घुमै बेर हमरा-ले सजमनि आ घेरा नेने आएब। तहीमे आधा तोहूँ लिहह। जँ बँटलासँ कम हएत तँ कहि देबै जे कौल्हुका-जोकर ने भेल मुदा परसू तँ खगबे करत। हाटक अतिरिक्त अँगने-अँगने सेहो बेचिते छी, दुनू गोरे ऐठाम काल्हि बेरोमे दऽ देब।”

दिनमा कक्काक काजक सूत्रवत विचार देखि अपनो मन कहलक जे मनुक्ख जँ मनुक्खक अग्रिम काजक विचारपर बिसवास नहि करत तँ संग मिलि चलिये केते दिन सकैए। सोल्होअना बिसवास दिनमा कक्काक विचारपर करैत बजलौं-

“काका, अहूँ बड़ जोगारी छी।”

ओना, दिनमा कक्काक मनमे लहरलैन जे जीवनमे जोगारक की महत्व अछि से घुरनकेँ कहि दिऐ। मुदा फेर अपने मन रोकलकैन जे समय कम अछि आ प्रश्न-पर-प्रश्न उठबैत जाएब, तखन तँ यएह ने हएत जे कोनो प्रश्नक समुचित उत्तर नहि दए सकब। तहूमे अखन कोन जरूरी अछि जे विद्यार्थीक पढ़ैक

जोगार, किसानक खेतीक जोगार, वेपारीक वेपारक जोगारक चर्च अनेरे करब। अखन तँ मात्र एतबे चर्च करब नीक हएत जे अखुनका जे जनमारा समय बनि गेल अछि तइमे पार-घाट केना लगत। बीतल तँ बीतिये गेल, जे पुन: घुमिकऽ नहि औत आ जे काल्हि औत तइले काल्हि अछिए। दिनमा काका बजला-

"ऐबेर नीक ठकान ठकेलौं, घुरन।"

ओना, मनमे भेल जे दिनमा काकाकेँ कहि दिऐन जे जाबे लोक ठकाइ नहि अछि ताबे ठकविद्याक बोध नहि होइ छै, किए तँ अपन कर्मक परखलहा बेसी मजगूतीसँ काज करैए। मुदा फेर अपने मन कहलक जे नवका विद्यालयक बच्चा सभ जकाँ अपने नहि ने छी जे परिवारक धार बुझबे ने करब आ बहरवैया रूपक धार बना बहरवैया बनि जाएब। अखनो गमैया घीक बराबरी बहरबैया घी थोड़े कऽ सकैए। बजलौं- "से की कक्का?"

'से की' सुनिते दिनमा कक्काक मन उत्तर दइले ठनैक उठलैन, मुदा एक्के-दुइये अनेको प्रश्न सोझामे आबियो गेल छेलैन आ आबियो रहले छेलैन तँए प्रश्नकेँ जोड़ियबैत बजला-

"घुरन, एकटा प्रश्न भेल पचास बरख पूर्वक समयक समस्या, माने 1971 इस्वीक मौसम, आ दोसर भेल 2021 इस्वीक मौसम। एहने दोसर अछि 1934 इस्वीक भुमकमक समय आ 1988 इस्वीक भुमकमक समय। दुनूक दूरी सेहो करीब-करीब पचास-पचपन बर्खक बीच अछिए। मुदा से सभ अखन नहि, अखन एतबे जे रियेक्टर पैमानाक, माने भुमकम नपैबला, जे संख्या अछि ओकर एक अंकक माने भेल तीस हजार गुणा अधिक शक्तिशाली।"

भूगोलसँ कहियो अपन मिलान नहि रहल, तँए मनमे अकच्छ सेहो लगिये रहल छल, मुदा से अपना मानने थोड़े हएत। दिनमा काकाकेँ बजैमे जे सुविधा हेतैन तही हिसाबसँ ने बजता। पुछलयैन-

"की नीक ठकान ठकेलौं, काका?"

ओना, दिनमा कक्काक एक मन भीतरे-भीतर कहैन जे साए रूपैयाक कोन मोल अछि, जँ ठकेबे केलौं तँ पेटे-ले ने ठकेलौं। मुदा दोसर मन लगले ललकारए लगलैन जे बीत भरिक पेट भरैले लोक अधला-सँ-अधला वृत्ति

किए अपनबैए। जँ अपनबैए तँ ओकर सामाजिक विरोध होइ, मुदा से तँ हएत समाजकेँ बुझनहि। जखन क्रिया आ आवाजकेँ संग-संग देखत आ देखि कऽ बुझत..।

दिनमा काकाकेँ फेर अपने मनमे उठलैन जे जखन घुरनकेँ ठकाइक कारण बुझैक इच्छा छै तँ पहिने सएह बुझा दिऐ। बुझबैक विचार मनमे उठए लगलैन कि तइ बिच्चेमे एकटा तहियाएल दाबल विचार अगुआ कऽ उठि गेलैन। उठि ई गेलैन जे बेकतीक बीच वा समाजक बीच जे ठकैक चलैन अछि ओ एक्के रंग आ एक्के स्तरक थोड़े अछि। ओ तँ अनेको रंगो आ स्तरोक अछिए। केतौ बाल-बोधकेँ कनैकाल वौसैले माए-बाप हवा जहाजसँ हाथी अनै धरिक बात कहि चुप करै छैथ तँ केतौ जनकक जनवासक चर्च करैत समाजकेँ नहि ठकल जाइए सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। से कोनो एक्के क्षेत्रमे अछि से बात नहि, जीवनक हर क्षेत्रमे अछि।

..विचारक वनमे बिचड़ैत दिनमा कक्काक मन जेना ठेहिया कऽ एकटा पीपरक गाछ लग अँटैक गेलैन। पीपरक गाछकेँ जहिना चौबीसो घन्टाक, माने दिन-रातिक, स्वस्थ हवाक दाता कहि पूजल जाइए तहिना दोसर दिस ईहो तँ अछिए ने जे ने आम सन फल फड़ैक शक्ति छै आ ने चुल्हिमे भानस करैक जरनो बरबैर अछि। तहिना वरोक गाछकेँ देखिते छी जे जहिना हजारो बर्खक पछुआएल जीवनकेँ समाज अङैज रखने अछि तहिना ने पँच-पँच हजार बर्खक वरक गाछ बटवृक्ष बनि रस्तापर ठाढ़ो अछिए। जेकरामे ने सुगन्धित फूल छै आ ने रसगर फल। मुदा ओकर जरूरत नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए, जे बैशाख-जेठक सूर्यक जरबैत रौदसँ मनुक्खो, मालो-जाल आ चिड़ैयो-चुनमुनीक शरणस्थली बनियेँ जाइए। ..दिनमा काका बजला-

"घुरन, ठकाएल तँ गामक बहुत लोक, मुदा अपन ठकाइक कारण, आनसँ किछु भिन्न अछि, तँए नीक ठकान ठकेलौं।"

दिनमा कक्काक विचार कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। पुछलयैन- "से केना कक्का?"

दिनमा काका बजला-

"घुरन, जहिना कोनो खेतक जजातकेँ नोकसान करैबला अनेको कीड़ी-

फतिंगीक संग अनेको तत्त्व सेहो अछि, मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे ओ कीड़ी-फतिंगी खेतक माटिमे जनैम कऽ फड़ल आकि बाहरसँ आएल, तेकरा तँ बुझए पड़त किने।"

विचारक प्रवाहमे बिनु विचारनहि बजा गेल- "उचिते किने।"

दिनमा काकाकेँ जेना बाट भेट गेलैन तहिना बजला- "घुरन, गाम तँ गामे छी, ने ठकनिहारक कमी अछि आ ने ठकेनिहारक, मुदा अखन जे ठकेलौं से दोसर ठकान छल तँए नीक ठकान ठकेलौं।"

❑❑❑

❑❑

❑ नीक ठकान ठकेलौं (2021), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 83-86

भलेँ लोक काजक दौड़मे अकानि किए ने बाजैथ जे आब युगे बदैल गेल। श्राद्धकर्ममे पुरुखक निमित्ते दियादोवाद सभ नह-केश कटबै छला, आब देखै छी जे एक दियाद अमेरिकामे तँ दोसर चीनमे रहए, तैठाम नह-केश कटबए कर्ममे दियादवाद केतएसँ औता। मुदा से नहि, एक-एक क्रियामे, केतए-केतए केते विघटन भेल आ केतए-केतए सुघटन भेल, तइले तँ अपन होश राखैये पड़त किने।

जहिना कीर्तिदेव काका लोकक धारणा देखि विचारए लगला कि अपनो धारणा अपन सामाजिक जीवनमे देखलैन। जखन देशमे भुखमरी छल, मोटा-मोटी 1974 इस्वीक पूर्व तक जे अन्नक अभाव छल, तखन ऐठामक किसान खेतक आड़ि पकैड़ ओते श्रमो आ साधनो लगौलैन जइसँ खेतीमे उन्नति भेल आ देश अन्नक मामलामे आत्म-निर्भर भऽ गेल। मुदा ओइ आत्मनिर्भरताक भविष्य की भेल से तँ भोगिये रहल छी। की देशक जे उपजाऊ भूमि अछि ओइमे समुचित उपज भऽ रहल अछि। जखन समुचित पैदावार नहि हएत तखन खेतक आशापर जीनिहार लोकक समुचित विकास केना हएत। की एकरा मानि लेल जाए जे खेतक जे पैदावार अछि ओ सभसँ बेसी अपना देशक अछि? ऐ सँ बेसी उपज दैक शक्ति खेतमे अछिए नहि।

पड़ले-पड़ल कीर्तिदेव कक्काक नजैर पुन: अपन जीवन दिस घुमलैन। घुमिते अपन सामाजिक जीवन आड़ि पकड़लकैन। भेल तँ खाली सामाजिके जीवनटा मे आड़ि पकड़ब भेल से बात नहि अछि। जीवनक जे क्षेत्र हुअए, आ ओ जँ मनलग्गू हुअए तँ आँखि मुनि ओइ क्षेत्रकेँ पकैड़ अड़ियबैत अपन जीवनक आड़ि बान्ही। जखन देह बन्हा जाए, जेना झाड़-फूँक केनिहार; झाड़-फूँक करैसँ पहिने अपन देह बन्हैत मंत्र पढ़ै छैथ- 'जल बान्हू, थल बान्हू, बान्हू अपन काया, सबा हाथ धरती बान्हू, नरसिंहनाथक दया।' कहू

जे एते बन्हा गेला पछाइत कोन खेतक आड़ि कमजोर रहत जेकरा कोसी-कमलाक पलाड़ी तोड़ि देत..? मने-मन कीर्तिदेव काका विचारिये रहल छला कि बाँसक बीटमे सँ घुटकी चिड़ैक घुटकी आवाज कानमे पड़लैन। घुटकी कानमे पड़िते मन फुड़फुड़ाइत कहलकैन-

"भोर भऽ गेल। ओछाइन पकड़ने जीवन थोड़े चलैए ओ तँ बाधित होइए।"

नीन टुटला पछाइत जे संकल्प कीर्तिदेव कक्काक मनमे उठल छेलैन ओ पुन: जागि कहलकैन-

"आइ मंगलदेवसँ भेँट करबे करब।" जखने मंगलदेवक भेँट कक्काक मनमे एलैन तखने पुन: अपने मन कहलकैन- "पहिने अपन घरक गोसाईं पूजि लेब तखन ने दुनियाँक पुजेगरी बनि पुजबैत रहब। ई नहि ने जे मोलबी साहैब जकाँ आफन तोड़ि बाजए पड़ए जे 'संगेमे बैद मियाँ मरता है।"

दुनियाँ दिस ताकब तँ देखि पड़त जे अपना लगसँ लऽ कऽ सौंसे दुनियेँ गुरुवन पसरल अछि। मुदा तइमे अपन गुरुवन केहेन बनाएब तइले तँ अपने ने कारीगिरी सीखि कऽ करए पड़त। ओछाइन छोड़िते काजक महत्व माने संकल्पित क्रियाक महत्व, जेना पुन: कीर्तिदेव काकाकेँ सिरचढ़ भऽ गेलैन। अपन सभ क्रिया जेना मनसँ हटए लगलैन माने मंगलदेवसँ भेँट करैक प्रबल इच्छा, एक नम्बर काजक सूचीमे एने अपन नित्य-कर्मक सूची दू नम्बरमे आबि गेलैन, जइसँ बेहोशीक स्थिति बनियेँ गेलैन मुदा अपनाकेँ सचेत करैत चेतलैन जे भेल तँ मंगलदेवसँ भेँट करि कऽ मातारामक श्राद्ध-कर्मक हिसाब-किताब बुझैक अछि। क्षणमे क्षणाक होइबला कोनो तेहेन नहियेँ अछि तखन अपने उताहुलो हएब नीक नहियेँ हएत। जहिना सभ दिन अपना संग अप्पन बासभूमिकेँ क्रियान्वित करैत निकलै छी तहिना निकलब। चौक-चौराहाक लोक मंगलदेव छीहे जँ चौकपर भेटत तँ नीक जकाँ सभ गपो-सप्प हएत आ कर्मक समीक्षा सेहो संगे-संग चलबे करत। चौक-चौराहाक गप-सप्पक अपन महत्वो अछिए। तहिना काजोक तँ अपन महत्व अछिए। भलेँ लोक काजक दौड़मे अकानि किए ने बाजैथ जे आब युगे बदैल गेल। श्राद्धकर्ममे पुरुखक निमित्ते दियादोवाद सभ नह-केश कटबै छला, आब देखै छी जे एक दियाद अमेरिकामे तँ दोसर चीनमे रहए, तैठाम नह-केश कटबए कर्ममे दियादवाद केतएसँ औता। मुदा से नहि, एक-एक क्रियामे, केतए-केतए केते

विघटन भेल आ केतए-केतए सुघटन भेल, तइले तँ अपन होश राखैये पड़त किने।

संजोग बनल मंगलदेव चौकेपर, पहिलुके जकाँ माने माइक मृत्युसँ पहिने जेना रहै छल, तहिना बीचमे बैसल। जखने दस गोरे गोलिया कऽ बैसब कि सभकेँ सभ बिच्चेमे बैसब भेल। कीर्तिदेव काका सेहो बीचमे बैसते अकानि कऽ सुनलैन जे मंगलदेवेक माइक श्राद्ध-कर्मक गप-सप्प चलि रहल अछि। बिना किछु बजने कीर्तिदेव काका मंगलदेवपर नजैर गाड़लैन। जे मंगलदेवकेँ अपन माइक श्राद्ध-कर्मक विषयमे अप्पन मन की कहि रहल छइ। हारल सन छै आकि जीतन सन। माने जखने कोनो यज्ञ कर्म विधि-विधान पूर्वक सफल होइए तँ ओ सफल भेबे कएल, जँ से नहि भेल तँ केतौ-ने-केतौ ओ कमी, कम रहबे करत। ओना, सामाजिक स्तरपर समाजकेँ बीचमे रखि देखबो नीक होइते अछि। किए तँ कबीर बाबा कहबे केने छैथ- दो पाटन के बीचमे बाँकी बचा ने कोई। सभ ओइ पाटनक बीच छीहे, तँए अपन-अपन पाटनक पट करबाक ओरियान अपने ने करैत चलब।

❑❑❑

❑❑

❑ घरक खर्च (2021), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 84-87

“भाय मनन, अखन तक कहाँ केतौ देखै छी जे कोनो गाम एहेन भेल जइमे सभ साहित्यकारे भेला अछि आकि वैज्ञानिके। तँए ई कहब जे ओइ समाजकेँ साहित्यक खगता नै छैन, सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना कोनो-कोनो गाममे, कहियो-काल गोटेक साहित्यिक कार्यक्रम होइए। तहिना अपनो दुनू गोरे मिलि किए ने कार्यक्रम निमाहि सकै छी?”

अपन गामसँ दोसर जगह जाइक माने गामसँ बाहर जाइक परिपाटीक अपन इतिहास अछि। शुरूमे, माने आइसँ पचास बर्खसँ पूर्व ऐ परिपाटीक जन्म भेल। अपना ऐठाम माने मिथिलांचलमे दाही-जरती सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। बुझले अछि जे बारह बर्खक रौदीक पछाइत जनकजी जखन अपने हाथे हर पकड़लैन, तखन बरखो भेल आ सीतो भेटलैन। तहिना ने मनुक्खोक जीवन अछि। जखन अपन सुख-दुख ले अपने हाथे सभ किछु करब शुरू करब तखन जीवनक संग जानकियो भेटबे करती। मुदा अखन जे मिथिलावासीक पड़ाइनिक रूप अछि ओ दोसर तरहक अछि। एकर माने ई नहि कहए चाहै छी जे चूड़ा-दहीक भोक्ता मैथिल, सुख-चैनिक धुनिया, चरि-जनिया पलंगपर ओंघरनियाँ मारनिहार, कोढ़ि-निकम्मा अपनाकेँ बना लेलैन तँए घरसँ भागैक नौबत बनि गेल छैन। प्राकृतिक आपैत-विपैत आइये नहि, सभ दिनसँ होइत रहल अछि, तैबीच मिथिलाक जे जनसंख्याक घनत्व अछि ओ आइ भलेँ, शहरीकरण भेने पछुआ गेल हुअए मुदा भरिसक देशमे सभसँ सघन आबादीबला जगह सभ दिनसँ रहल अछि। जहिना अपना सभ हिमालय पहाड़-कातक वासी छी तहिना केरल सेहो समुद्र–कातक राज्य छी, अपने सभ जकाँ ओहो घनगर अछि। देशक बाँकी जे राज्य अछि ओ अपन हाथ अपने छातीपर रखि विचार करत। जहिना सघन आबादीबला मिथिला अछि तहिना केरलो अछिए आ तहिना कनी-मनी कम बंगालो अछिए।

जनसंख्याक सघन घनत्वबला मैथिल आपैत-विपैत पड़लापर अपना गामसँ बाहर जा कमा कऽ आनि अपन परिवारकेँ जीवित रखलैन। समयानुकूल, जेना ऐठामक श्रमिककेँ मात्र खेतीसँ जुड़ल कलाक अनुभव छेलैन। ..ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे हजारो बर्ख ऊपरसँ बाहरी शासक शासन करैत रहल, जे जीवनक संग कम खेलबाड़ केने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। गुलामीक जीवनो-दर्शन आ किरियो-कलाप वेदरंग भइये जाइए। से भेबे कएल। मुदा ओ अखन नहि, अखन बस एतबे जे केना मिथिलांचलक लोक बाहर जाइ छला। दुरकाल समय भेलापर जखन जनगण बेसहारा भऽ जाइथ, तखन गामक संग इलाकाक लोक जेर बना-बना माने सामुहिक रूपमे, पूब मुहेँ जाए लगला। नेपालक इलाका होइत, बंगालक ढाका तक पटुआ, धान काटए जाइ छला। तैसंग धनरोपनी करए सेहो जाइ छला। नेपाल-बंगालक संग असाम सेहो जाइ छला। कहब जे गाड़ी-सवारीक सुविधा तँ नहि छल, तखन एते दूर केना जाइ छला? ..पएरे जाइ छला। जेना-जेना सुविधा बढ़ैत गेल तेना-तेना उपयोगमे अबैत गेल। तीनसँ छअ मास कमा लोक अबै छला आ परिवारक संग समय बितबै छला। साले-साल लोकक आबा-जाही हुअ लगल।

पछाइत, देश स्वतंत्र भेलापर अपना ऐठामक श्रमिक पूब दिशाक संग पच्छिम दिशा पकैड़ पंजाब सेहो जाए लगला। कृषिसँ जुड़ल श्रमिककेँ कृषि काज भेटने अनुकूल रोजगार भइये गेल।

पछाइत परिवेश बदलने लोककेँ चहुमुखी पड़ाइनक रस्ता भेटल। पढ़ल-लिखल लोककेँ जहिना पढ़ै-लिखैक काज भेटल, तहिना बिनु पढ़ल-लिखल लोककेँ कारखानामे श्रमक काज सेहो भेटल। मिथिलांचलक कृषि आधारित परिवार तहस-नहस हुअ लगल। अखन एतबे।

मननदेवो आ चेतनाथो पिताक एकलौता सन्तान, दुनूक अपन कृषि अधारित ओहन परिवार अछि जे भोजन-वस्त्रक संग कौलेज तक सेहो पढ़ा सकैए। रिजल्ट निकलैसँ पहिने मननदेवो आ चेतनाथो पिताकेँ कहलैन- "हम नोकरी करए बाहर नहि जाएब।"

पिता तँ आखिर पिते छिया किने, ओ केना चाहता जे अपन अंग भंग हुअए। दुनूक पिता कहलखिन- "तोरा भगबै के छह जे बाहर भगबह। अपन सभ

किछु छह, तइ बीच जे रहबह तइसँ नीक जीवन दुनियाँमे केतए भेटतह।”

किछु दिन पूर्वक परिवेश किछु आरो छल, मुदा आजुक परिवेश ओहन बनि रहल अछि जे गामक अपन सभ किछु छोड़ि बाहर जा बसैक लिलसा लोकक मनकेँ पकैड़ लेलक अछि। बाध्यता तँ ऐठामक किसानकेँ भइये गेल छैन जे बेवस्थाहीन जीवन जीब रहला अछि। सार्वजनिक बेवस्था एतेक पछुआएल अछि जे अखनो खेतमे ओहने हर चलि रहल अछि जेहेन–अढ़ाइ बीतक–हर जनकजी चलौने रहैथ।

ओना, सम्पूर्ण मिथिलाक दाही-जरती सेहो एक रंग नहियेँ अछि, किछु मौनसुनक कारणे, माने किछु प्राकृतिक बुनाबटिक कारणे आ किछु जमीनक आकारक कारणे अन्तर भइये गेल अछि। तैसंग सामाजिक बेवस्था सेहो एकरंग ने अखन अछि आ ने हजारो बर्खक गुलामीक बीच रहल। किछु बेवहार सार्वजनिक अछि, तँ किछु बेकतीगत वा जातिगत सेहो अछिए। राजा-रजबार, जमीन्दार, मास, जेठरैयति इत्यादि अनेको आम समाजक लोकक ऊपर शासन लदने छला जइसँ रंग-बिरंगक शासन पद्धति सेहो बनियेँ गेल अछि।

अखनो समाजक बीच एकरूपताक अभाव अछिए। जहिना समाजक बीच जीवनक बेवहारमे अन्तर अछि तहिना जीवनमे सेहो अछिए। तेकर अनेको कारण अछि। अखन से सभ नहि, बस एतबे जे केना जाति, सम्प्रदाय समाजकेँ विभाजित केने अछि। एक जातिक बेवहार दोसर जातिसँ किछु भिन्नो अछि आ किछु मिललो तँ अछिए, जे समाजमे दूरी बनौने अछि। तहिना सम्प्रदायक बीच सेहो अछि। एक सम्प्रदायिक रीति-रिवाज दोसरसँ भिन्न गढ़ल अछियो आ दिनानुदिन गढ़लो जाइते अछि। आजुक परिवेश, जैठम मनुक्खक निर्माणक मुख्य जगह छी, तैठाम एक-दोसरमे अन्तर अछिए। आजुक जे शिक्षण संस्थान अछि, ओकरो योगदान समाजकेँ विघटनक कारण अछिए। ओना, जखन विकास-प्रक्रिया आगू बढ़ैए, तइसँ मनुखक जीवनमे खुशहालीक सम्भावना बनैए, तखन वैचारिको आ आर्थिको विघटन हएब सोभाविक प्रक्रिया छीहे। मुदा तइमे आँखि मुनि कऽ, अन्धाधुन केलासँ नहि आँखि खोलि कऽ केलासँ अपन पूर्वजक देल विचारो आ जीवनोक रक्षा हेबे करत। जे जरूरियो अछिए। देखिते छी

विचारक छलांग लोक ओतए तक मारि दइ छैथ जे धरतीपर जेतेक मनुख छी, ओ सभ एक जाति भेलौं, मनुख जाति आ सबहक एकरंग जीवन हेबा चाही। तँए दुनियाँक कोनो कोण किए ने हउ, ओ अपन मातृभूमि भेबे कएल। ..मुदा वएह अपन जन्मदाता–माता-पिता–कैँ वृद्धावस्थाक सेवा बिसैर बीरान बनियेँ रहल अछि। यएह तँ छी बुइधिक करामात..! चेतनाथ बाजल-

“भाय मनन, मनुख ओहन उच्च कोटिक मननशील प्राकृतिक देन छैथ जे सामाजिक जीवनकेँ उच्च कोटिक जीवन बुझै छैथ।”

मननदेव बाजल- “हँ, से बुझिते नहि छैथ, छथियो। तँए ने हुनकामे समाज-निर्माण करैक शक्ति सेहो छैन। मनुख अपन जीवनमे समृद्धताक मुख्य द्वार समाजेकेँ बुझै छैथ। तँए हुनकामे ईहो बल हएब जरूरी अछिए किने जे अपन समाज निरमित करैत अपन जीवन सेहो आइक अनुकूल निरैम जाए।”

मननदेवक विचार सुनि चेतनाथमे जेना चेतना जगल तहिना सजग होइत बाजल-

“भाय मनन, अखन तक कहाँ केतौ देखै छी जे कोनो गाम एहेन भेल जइमे सभ साहित्यकारे भेला अछि आकि वैज्ञानिके। तँए ई कहब जे ओइ समाजकेँ साहित्यक खगता नै छैन, सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना कोनो-कोनो गाममे, कहियो-काल गोटेक साहित्यिक कार्यक्रम होइए। तहिना अपनो दुनू गोरे मिलि किए ने कार्यक्रम निमाहि सकै छी?”

मननदेव बाजल-

“हँ, तँ और की..!”

❑❑❑

❑❑

❑ **अन्तिम परीक्षा (2020), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 83-87**

“कमलाकातक गाम रहने खेती-पथारीक हालत खराबे छल, सत-सत बेर धान रोपै छेलौं आ तैयो दहाइ छल मुदा बाप-दादाक घराड़ी लोक पेटक खातिर छोड़ि देत, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल, तँए गामक बेसी परिवार महींस पोसि गुजर करैत आबि रहल छैथ। जइसँ आन-आन गामक अपनो जाति-बेरादर गामकेँ महिंसवारक गाम आ पोसनिहारकेँ महींसवार कहै छला। जइसँ एकठाम बैस खाएबो-पीब बन्न छल आ कथो-कुटुमैतीमे घटबिये छल। खुलि-खुलि आन गामक लोक बजै छल जे ओइ गाममे बेटी देब गोबरबिछनी, गोबरपथनी बनाएब भेल।”

ओना, गामक सभ किछु बिसैर गेल छी मुदा बाबाक अमलसँ जे चालीस हाथक दलान देखैत एलौं से अखनो ओहिना मनमे जीवित अछिए। अपन कमाईसँ अपने बंगालमे मिथिला बनौने छी। कोलकाता सन शहरमे, जैठाम जनसंख्याक घनत्व बहुत बेसी अछि, लोक सड़कपर सुतैले मजबूर अछि तैठाम अपन मैथिलक लेल ओहन बेवस्था रखने छी जे महीनो दिन जँ कियो रहि कऽ अपन रोजी रोजगारक भाँज लगौता तइले रहै-खाइक कोनो चिन्ता नहि। भगवान जेकरा देने छथिन ओ चरि-चरिटा कन्यादान अपना हाथे करोड़ो गनि करै छैथ। एते तँ भगवान पक्षमे छथिये जे ओ करोड़ अपन अपने रहल, माने कन्यादान नइ रहने। ..मने-मने अपने सोची जे कहू ई की भेल? अखन गामक बाढ़िसँ जान बँचा कऽ छत्तर भाय एला अछि गामक गप-सप्प करता आकि घर-दुआर निहारै छैथ। मुदा लगले अपने मन रोकलक जे लोकक मन फूलोसँ हल्लुक होइए, करखन ओ खुशी हएत आ करखन बगैद जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। बजलौं- “भाय साहैब, पहिने ई कहू जे एते दूरसँ एलौं हेन, हाथ-पएर धोइ बैसब आकि पहिने नहाएब-

सोनाएब?”

छत्तर भायकेँ जेना भक्क खुजलैन। तहिना बजला- “अखन भोर भेबे कएल अछि तखन नहाइ-सोनाइक कोन धड़फड़ी अछि। मुहोँ-कानमे पानि लइये नेने छी।”

तैबीच जेठकी बेटी रूक्मिणी चाह-पानि-बिस्कुट नेने पहुँच गेल। एक तँ ओहुना छत्तर भायकेँ दू दिनसँ अन्नक भेँट नहि भेल छेलैन, तैपर अपन डुमैत घर-आँगन मनकेँ तेना मथि रहल छेलैन जे होशे उड़ि गेल रहैन, जइसँ रूक्मिणी हाथसँ बिस्कुट लैत हाँइ-हाँइ खाए लगला। ओना, अपने जीवनानुभव अछिए जे आगूमे अन्न देखि भूखल केना लपकैए आ नाङ्गट केना वस्त्र देखि तरसैए। तँए विचारमे मोड़ दैत बजलौं- “भाय साहैब, गामक हाल-चाल पछाइत कहब, पहिने अपन आ परिवारक कहू?”

अपन बात सुनैत-सुनैत छत्तर भाय चाह पीब पानो मुँहमे लऽ नेने छला। गालक तरमे पान-जरदाकेँ दाँतसँ घेरि बाजए चाहलैन कि एकाएक दुनू आँखिसँ नोर खसए लगलैन। नोराएल अँखिमने छत्तर भाय बजला-

“बौआ बुधियार, सात घर दुश्मनोकेँ भगवान ओहन गति नहि देथुन जे देलैन।”

छत्तर भाइक मुँहक बात सुनि अपन जिज्ञासा आरो उग्र बढ़ल। बजलौं- “से की छत्तर भाय?”

जहिना गुड़-घाओक मुँह फुटने विकार निकलैकाल सुआस पड़ैत रहैए तहिना छत्तर भायकेँ सेहो अपन मनक भरास निकालैत भेलैन। बजला- “बौआ, तूँ ते बहुत पहिने गाम छोड़ि चलि एलह तँए बच्चा महक बात बिसैर गेल हेबह मुदा अपने तँ पचहत्तैर बर्ख ओही गाममे जन्मसँ अखन धरि बितेलौं अछि।”

ओना, अपना धुनियेँ छत्तर भाय बाजि रहल छला। मुदा अपना मनमे तरे-तर हुअ लगल जे दुनू हाथे छत्तर भायकेँ उठा माथपर चढ़ा ली। मुदा, मुद्दा तँ मुद्दा छी। बजलौं-

“भाय साहैब, अपने तँ..?”

हमर अधखड़ुआ बातमे छत्तर भायकेँ की भेटलैन से तँ छत्तर भाय

बुझलैन मुदा अपन बामा बाँहिपर दहिना हाथ मलैत बजला- “बौआ, जवानी पानिमे नहि फेक देने छी, अपनो ले आ समाजो ले बहुत किछु केने छी।”

छत्तर भाइक बात सुनि अपन जिज्ञासा आरो उग्र भेल। उग्रानु अन्वेशी बनि जिज्ञासाकेँ जगबैत बजलौं- “से की छत्तर भाय?”

छत्तर भाय बजला- “कमलाकातक गाम रहने खेती-पथारीक हालत खराबे छल, सत-सत बेर धान रोपै छेलौं आ तैयो दहाइ छल मुदा बाप-दादाक घराड़ी लोक पेटक खातिर छोड़ि देत, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल, तँए गामक बेसी परिवार महींस पोसि गुजर करैत आबि रहल छैथ। जइसँ आन-आन गामक अपनो जाति-बेरादर गामकेँ महिंसवारक गाम आ पोसनिहारकेँ महींसवार कहै छला। जइसँ एकठाम बैस खाएबो-पीब बन्न छल आ कथो-कुटुमैतीमे घटबिये छल। खुलि-खुलि आन गामक लोक बजै छल जे ओइ गाममे बेटी देब गोबरबिछनी, गोबरपथनी बनाएब भेल।”

छत्तर भाइक बात सुनि अपने मने-मन क्षुब्ध हुअ लगलौं जे जीवनक एक-एक क्षणक मोल अछि, मुदा ओ केकरा ले अछि..? बजलौं- “भाय साहैब, जाबे तक निसचित आशा अपन नइ भऽ जाएत ताबे तक अहाँ ऐठाम रहू। कियो भोज-भातमे अपन कमाइ लुटबैए हम अपन सेवे कर्ममे लुटाएब। दू दिनक थाकल अहूँ छी, पहिने नहा-धो, भोजन करू। खूब मनसँ अराम करू पछाइत गप-सप्प होइत रहत।”

हमर बात सुनि छत्तर भाय बजला-

“बौआ बुधियार मन बौड़ा गेल अछि। जिनगी भरि अही अवस्था ले ने संजोगलौं, मुदा सभ नष्ट भऽ जाएत। केकरो मात्र घरेटा छै, कमा-खा गुजर करैए आ कियो अपन जिनगी गामक मान-प्रतिष्ठासँ लऽ कऽ गामक उन्नति धरि करैए।”

छत्तर भाइक छाती (हृदय) जेना छँहोछित भऽ फुटि गेल होनि तहिना राँइ-बाँइ होइत जा रहल छेलैन। एक संग अनेको प्रश्न तीनू कालक–माने भूत, वर्तमान आ भविष्यक–विचार मनमे दौड़ए लगलैन। जहिना भूतमे मन भुतिआइ छेलैन जे जइ गामकेँ चौबगली गामक लोक महींसवारक गाम आ पोसनिहारकेँ महींसवार कहै छल, आइ वएह गाम सभ तरहेँ सम्पन्न भऽ

अपनाकेँ ठाढ़ केलक अछि, से बात जँ बिनु बुझल लोक (नव पीढ़ीकेँ) केँ नहि कहि देब, तखन पितर-पितराइनिक क्रिया-कलाप केना बुझि पौत। वर्तमान आगूमे ठाढ़ भऽ नाचि रहल छेलैन जे जे बीतल से भूत भेल, आइ केना जीब, तइले परियास करू जे हँसी-खुशीसँ समयक गतिक संग चलि मुक्ति हएत। तेसर दिस मन वौआइ छेलैन जे गामक इतिहासे टा नहि मेटाएत वर्तमानो मेटा जाएत। किए लोक एहेन गाममे रहए चाहत। जे सुतली रातिमे सुतले-सुतल जलप्रवाह भऽ जाएत। जखन जाने नहि तखन जहान की..?

❑❑❑

❑❑

❑ गामक सूरत बदैल गेल (2020), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ 15-18

“एतेक पैघ महात्म्य लक्ष्मीनाथ गोसाईंमे छेलैन?” हँसैत दीनानाथ बाबू बजला- “जेते बुझै छहुन बौआ, तहूसँ बेसी छेला, मुदा समाजो-सत्ता आ शासनो-सत्ता तेना ग्रसित करैत रहलैन जे जेते मनमे छेलैन तेते तँ नहि मुदा एते जरूर केलैन जेते एक साधारण मनुक्खक लेल असाध्य अछि। समैयो भऽ गेल, ऐगला विचार दोसर दिन करब।”

“लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ समाजमे पसरल रूढ़िवादी विचारधारा, जेना पसरल अछि, तेना जँ ओकरा तोड़ल (हटौल) नहि जाएत तँ समाजक प्रवाह अन्धकार दिस बढ़ि जाएत।”

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि तेतरो आ गुलटेनो सकपका गेल। सकपकाइक कारण दुनूकेँ दुनू भेल। पहिल विषयक गम्भीरता आ दोसर शब्दक गम्भीरता नहि बुझि सकल। जे बात दीनानाथ बाबू सेहो मने-मन आँकि लेलैन, मुदा प्रश्नक बरखा दुनूक मनमे तेना झहरए लगल जेना बदरीहन मेघ अकासमे मड़ाइत रहैए। तँए प्रश्नक टोहकेँ टोहियबैक सीमापर दीनानाथ बाबू अपनाकेँ ठाढ़ केलैन। ..विचारक गम्भीरताकेँ ने तेतरे सोझरा कऽ बुझि सकल आ ने गुलटेने बुझि सकल तँए अपन-अपन मनक आशा हारि दुनू संगे बाजल- “श्रीमान्, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं तँए नीक जकाँ कनी..?”

दीनानाथ बाबू बजला- “गमैया भाषामे बुझा दइ छिअ। दूटा विचारक प्रश्न अछि, पहिल- लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ जाइतिक रूपमे जे जागरण छेलैन आ दोसर- सम्प्रदायकेँ सघन धार्मिक सीमाक रूपमे जे जागरण छेलैन।”

गुलटेन बाजल- “श्रीमान्, नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी।”

गुलटेनक विचारकेँ दीनानाथ बाबू मने-मन आँकि लेलैन जे समाजक जे

तलहत्थी छै तइमे आ वैचारिक जे धरातल समाजमे अछि तइमे अकास-पतालक अन्तर अछिए। तेकरा अकानैत दीनानाथ बाबू बजला- "दुनू गोरे नीक जकाँ सुनह। लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म जहिया भेलैन तहिया अंगरेजी शासन देशमे पसैर गेल छल। तैसंग राजा-रजबारक राजशाही शासन सेहो पहिनहिसँ आबि रहल छल। पैछला जे इतिहास रहल सेहो राजे-रजबारासँ होइत आबि रहल छल।"

इतिहासक नव बात सुनने, नव बातक माने भेल विद्यार्थी तेतर आ गुलटेनक रूपमे जहिना तेतरक जिज्ञासा जगल तहिना गुलटेनक सेहो जगल। गुलटेन बाजल- "कनी आरो फरिछा कऽ कहियौ।"

विचारकेँ विराम दैत दीनानाथ बाबू बजला- "जेतबे समय घन्टीक शेष बँचल अछि तेतबे ने अखन कहि सकबह, तँए आन दिन नीक जकाँ कहबह। अखन एतबे बुझह जे समाजमे पसरल जे जाति-सम्प्रदाय अछि तइसँ बहुत ऊपर उठल विचार लक्ष्मीनाथ गोसाईंक छेलैन। ओ जहिना देशक प्रमुख देवस्थानक भ्रमण केलैन तहिना मिथिला-भ्रमण सेहो केलैन। अखन से सभ नहि। लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ जहिना क्रिश्चन धर्मबला शिष्य जौन-वरिआही कोठीक छेलैन तहिना मुसलमानी सम्प्रदायक मुंगेरक मुहम्मद गौस सेहो छेलैन, तहिना प्रयागक राजाराम शास्त्री सेहो छेलैन। अखन एतबे। किए तँ जन-जनमे बास करैबला लक्ष्मीनाथ गोसाईं जन-जागरण केना केलैन, मुख्य विषय से अछि।"

ओना, जन-जागरण शब्द दुनू गोरे सुनने अछि मुदा ओकर बेवहारिक पक्ष की अछि तइसँ ने तेतरेकेँ आ ने गुलटेनेकेँ भेँट भेल छल। एक तँ नव शब्द, दोसर ओइ शब्दक माने जन-जागरण शब्दक बेवहारिक रूप सुनि दुनूक मनमे एकटा आरो नव चेतनाक जन्म भेल। ओ भेल ई जे जेते शब्द अछि की ओकर बेवहारिक पक्ष माने क्रियागत पक्ष सेहो अछि? मुदा बाजल दुनूमे सँ कियो ने किछु। तेकर कारण भेल जे दीनानाथ बाबूक मुहेँ सुनि चुकल छल जे जेतबे समय घन्टीक (ट्यूटोरियल क्लासक) शेष बँचल अछि तेतबे ने कहि सकबह। दुनूक मनमे छेलैहे जे पहिनहिसँ जे कहैत आबि रहला अछि पहिने ओ सुनब प्रमुख भेल। गुलटेन बाजल- "तीनटा बात तँ मोटा-मोटी आबिये गेल, शेष चारिम बाँकी अछि। तेकर उत्तर बुझला पछाइत जँ समय

बँचत तँ रस्तो-रस्तो ऐ पश्नकेँ बुझि लेब।”

गुलटेनक बात सुनि दीनानाथ बाबूक मनमे उठलैन जे जखन मनक पिपासा एते उग्र भऽ जगि गेल छै तखन अपनो किए ने स्वाती नक्षत्रक बून जकाँ बरैसिये जाइ। मुदा लगले मन बिचड़ैत विचार देलकैन जे कोनो रोगक दबाइ खोराके-खोराक देब अधिक हितकर होइए, तहूमे जे सामाजिक रोग गाम-समाजक बीच पसरल अछि तेकरा जँ रानी सरंगाक खिस्सा जकाँ भरि राति सुनाइये देब तइसँ जे लाभक इच्छासँ सुनबए चाहि रहल छी से थोड़े हएत। ओ तखने हएत जखन एक-एक डेगकेँ हाथसँ नापि, हाथकेँ बीतसँ नापि आ बीतकेँ आँगुरसँ नापि ओकर रूप प्रकट करब। से तँ तखने सम्भव अछि जखन ओकर वैचारिक पक्षक संग बेवहारिक पक्ष सेहो राखल जाए। दीनानाथ बाबू बजला- “पहिल आ दोसर-तेसर विचार बुझैमे केतौ कोनो बाधो बुझि पड़ि रहल छह?”

गुलटेन बाजल- “नहि।”

तेतरकेँ सकपकाइत देखि दीनानाथ बाबू बजला- “तेतर तोरा?”

तेतर बाजल- “हँ। दोसर आ तेसर माने जाति आ सम्प्रदायक बीच स्पष्ट अन्तर नहि बुझिमे आएल।”

समयकेँ नजैरमे रखैत दीनानाथ बाबू बजला- “दुनूक बीच अन्तर की अछि से नहि बुझि पेलह। मुदा दुनू की छी, केहेन अछि से तँ बुझबे केलह?”

तेतर- “हँ।”

दीनानाथ बाबू बजला- “चलह, आगू चारिम बातमे आबह। साधारण परिवारमे जन्म नेने लक्ष्मीनाथ गोसाईं बच्चेसँ गाइयक चरवाहि करै छला। बच्चेसँ हुनकामे ज्ञानक पिपासा जगि गेलैन। जगैक अनेक कारणमे एकटा कारण ईहो रहलैन जे, ओना जन्म अठारहम शताब्दीमे भेल छेलैन मुदा से भेल छेलैन शताब्दीक उत्तरार्द्धमे। मात्र साते-आठे बर्खक अवस्थामे अठारहम शताब्दी समाप्त भऽ गेल। मिथिलांचलमे उन्नैसमी शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी भेल अछि।”

रौदी सुनि गुलटैन बिच्चेमे बाजल- “बहुत रौदी भेल.!”

विचारक प्रवाहमे तँ गुलटेन बाजि गेल मुदा रौदीक प्रभाव की होइए, से थोड़े

बुझैत रहए। मुराम जगह देखि दीनानाथ बाबू बजला- “पहिने एक सालक रौदीक फलाफल सुनि लएह। पछाइत दू-सलिया, तीन-सलिया, चरि-सलिया, पँच-सलिया इत्यादि केते कहबह, अपना ऐठाम माने मिथिलामे बारह बर्ख तकक रौदी भेल अछि। बुझले हेतह जे सीताक जन्म जखन भेलैन तखन मिथिला बारह बर्खक रौदीमे चलि रहल छल।”

अखन तक जहिना गुलटेन तहिना तेतर, किताबमे तँ रौदी-दाही पढ़ने छल मुदा रौदी-दाहीक प्रभाव की होइ छै से थोड़े बुझै छल। दीनानाथ बाबूकेँ विषयमे आगू बढ़ैत देखि तेतर बाजल- “श्रीमान्, पहिने एक-सलिया रौदीक प्रभाव कहियौ, पछाइत दू-सलिया-तीन-सलियाक विषयमे कहबै।”

तेतरक खँतियाएल विचार सुनि दीनानाथ बाबू बजला- “बेस मोन पाड़ि देलह। एक-सलिया रौदीक भरपाइ करैमे परिवारकेँ पाँच साल लगैए। ओना, समय कम अछि, मोटा-मोटी ई बुझह जे आजुक जे परिवेश अछि माने आर्थिक रूपेँ, ओ बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईंजीक समयमे नहि छल। मुदा मनुक्खक की मूल समस्या अछि से नहि बुझै छला, सेहो बात नहियेँ अछि। जन-जनकेँ चिन्हैक चेतना लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ छेलैन। एक तँ ओहुना दस-एगारह बर्खक पछाइत लक्ष्मीनाथ गोसाईं घरसँ निकैल विद्वत समाजक बीच अपन मनक जिज्ञासाकेँ पूर्ति करै छला, तैसंग अपन चिन्तन-मननकेँ सेहो प्रवाह-पूर्ण बनबैत आगू बढ़ैत रहला। नेपालक यात्राक बीच नाथ सम्प्रदायबला सभसँ सेहो भेँट भेलैन जइसँ विचारमे आरो परिपक्वता एलैन।”

ओना, लक्ष्मीनाथ गोसाईं देशक प्रमुख धार्मिक तीर्थ-स्थानक भ्रमण सेहो केलैन, मुदा से दोसर-तेसर भ्रमणकर्तासँ भिन्न विचारक रूपमे केलैन। ओ भिन्न-रूप छेलैन देश-कोससँ लऽ कऽ ओइठामक जीवन-दर्शनकेँ परिखब। तैबीच कवित्व शक्ति प्राप्त भेने अपन जीवन-दर्शनक हिसाबसँ गीत-भजन सेहो रचना करै छला। अपन जीवन-दर्शनक माने भेल उच्चकोटिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण। एक राम वा कृष्ण वा कोनो आने ईश्वर किए ने होथि मुदा बेवहारिक रूपमे जे चलैन समाजक बीच माने मनुक्खक बीच भावात्मक रूपमे चलि रहल अछि तइसँ गम्भीर दृष्टिये लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपन रचना केने छैथ।

उन्नैसमी शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी एक-सलियासँ चरि-सलिया-पन-सलिया

धरिक भेल छल, तइ शताब्दीक तीन-चौथाइ समय लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपना आँखियो आ नजैरियोसँ देखि कऽ नीक जकाँ परेख चुकल छला जे जीव-जन्तु ले पानिक की महत्व अछि आ ओकरा प्राप्त करैक उपाय की अछि। जन-जनमे जागरण अनैले लक्ष्मीनाथ गोसाईंजी जान अरोपि लागि गेला। लोककेँ जीबैक उपायक जड़ि-मूलकेँ पकैड़ लोकक बीच अपनाकेँ रखि टोली बनबए लगला। जेकर उपयोग दू दृष्टिये करैथ। पहिल, वैचारिक रूपमे आ दोसर बेवहारिक रूपमे। जखने लोक बेवहारिक जीवनकेँ पकैड़ चलए लगैए तखने जीवनक जे बाधा-रूकाबट अछि ओ हल हुअ लगैए। से साधारण जन-गणक बीच भेल। जइसँ गाम-गाममे लक्ष्मीनाथ गोसाईंक स्थानक (रहैक स्थान) निर्माण भेल। स्थानक निर्माणक संग-संग पाइनिक उपाय सेहो कएल गेल। जन-सहयोगसँ पोखरिक निर्माण सेहो भेल। अखन तक बत्तीस स्थानक चर्च अछि। घुमन्तु सोभावक रहबे करैथ। घुमन्तु सोभाव लक्ष्मीनाथ गोसाईंक ऐ दुआरे बनि गेल छेलैन जे मन तेते ललैक गेलैन जे होनि एक्के दिनमे मनुक्खक सभ दुख हेरि ली। मुदा जुग-जुगसँ अबैत जन-समाजक पराधीन जीवन रहल, जइसँ जहिना विचारक रूपमे तहिना बेवहारमे, जीवन टुटि कऽ एते निच्चाँ गिर पड़ल जे चिन्ह-पहचिन्ह लोकक मेटा गेल।"

दीनानाथ बाबूक मुँह बन्न होइते गुलटेन बाजल- "एते पैघ महात्म्य लक्ष्मीनाथ गोसाईंमे छेलैन?"

हँसैत दीनानाथ बाबू बजला- "जेते बुझै छहुन बौआ, तहूसँ बेसी छेला, मुदा समाजो-सत्ता आ शासनो-सत्ता तेना ग्रसित करैत रहलैन जे जेते मनमे छेलैन तेते तँ नहि मुदा एते जरूर केलैन जेते एक साधारण मनुक्खक लेल असाध्य अछि। समैयो भऽ गेल, ऐगला विचार दोसर दिन करब।"

❑❑❑

❑❑

❑ **कर्ताक रंग कर्मक संग (2020), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 102-108**

“अखनो गाम-घरमे लोकक मुहेँ सुनै छह कि नहि
जे चौरासी आसनसँ जीवन चलैए।” बजा गेल- “हँ, से तँ
सुनै छी..!” विवेक विहारी काका बजला- “यएह चौरासी
आसनक सृजन नारद केने छैथ। जेकरा घटिया कहक
आकि झूठक झालि बजौनिहार चाटुकारक चाटुकारी,
ओही महत्वपूर्ण ज्ञानकेँ दबबाक षडयंत्र झूठ
बजनिहार चाटुकारसभ सभ दिनसँ रचैत-
करैत आबि रहल अछि आ
अखनो रचै-बजैए।”

विवेक विहारी काका-ऐठाम पहुँचते देखलौं जे काका सिरक ओढ़ि दरबज्जाक चौकीपर मुँह झाँपि बैसल किछु सोचि रहल छैथ। दरबज्जापर पहुँचते बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी..!”

आवाज सुनि मुँहपर सँ सिरक खसका काका बजला-

“नीके रहह। बहुत दिनक पछाइत तोरासँ भेँट भेल।”

बजलौं-

“काका, समये तेहेन भऽ गेल अछि जे घरसँ निकलब कठिन भऽ गेल अछि, तँए नइ भेँट होइ छेलौं।”

विवेक विहारी काकाकेँ जेना विचारक बाण सुतरलैन तहिना बजला-

“एहने समयमे ने धियो-पुतो आ बुढ़ो-बुढ़ानुसक ताक-हेर जरूरी अछि, तैठाम जँ अनठा देबहक तखन तँ अनेरे ने ओ मरबे करत।”

कक्काक बात सुनि अपने निरुत्तर भऽ गेलौं तँए विचारकेँ बदलैत बजलौं-

“नीक समय रहह आकि अधला, कमसँ कम एते तँ भेबे कएल जे ओ कटि

गेल।"

मुड़ी डोला हमर बात तँ काका स्वीकारि लेलैन मुदा जेना मनमे कोनो बात–विचार–नाचि रहल छेलैन तहिना ओइ विचार दिस पुन: मन बढ़ए लगलैन। अपना बुझि पड़ल जे भरिसक काका कोनो विचारमे ओझराएल छैथ। अनायास विवेक विहारी कक्काक मुहसँ व्यंगपूर्ण मुस्कियो आ मुस्कीक संग आवाजो निकललैन-

"झूठक झालि बजौनिहार चाटुकार सबहक चाटुकारिता कि कोनो आइयेक छी, सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। अखनो अछि आ आगूओ होइत रहत।"

अपना जनैत विवेक विहारी काका हमरा सुना कऽ बजला आकि अपन विचारक दौड़मे बजला से ओ जानैथ मुदा सुनलौं तँ हमहूँ। बजलौं-

"से की काका?"

विवेक विहारी काका बजला-

"नारदक नाओं सुनने छहक?"

बजलौं-

"किए ने सुनने रहब। वएह नारद ने जे घरबलाकेँ कहलखिन- तोहर घरवाली तोहर देह चटै छह आ घरवालीकेँ कहलखिन जे तोहर पति नोना गेल छथुन तँए दुनू गोरेमे जे प्रेम हेबा चाही से नहि छह।"

हमर बात सुनि कक्काक मनमे जेना भीतरसँ खुशीक गुदगुदी लगलैन तहिना हँसैत बजला-

"तोरा हिसाबे नारद केहेन छला?"

बजलौं-

"काका, नारद नमरी झगड़लगौन छला। जखन दुनू परानी तककेँ नहि छोड़ै छेला तखन दू परिवार आ दू समाजकेँ छोड़ि सकै छला..!"

अपना विचारे माने कानक सुनल विचारे हम बजै छेलौं आ चिन्तनक हिसाबे काका पुछि रहल छला तँए सबाल-जवाबमे केतौ मेल नहियेँ खाइ छल। ओना, काका दुनू बात–माने अपन कानक सुनल बात आ चिन्तनक बात–

जानि रहल छैथ मुदा अपने तँ खाली सुनलेहे बात टा जनै छी, तँए अपन विचारकेँ दृढ़तासँ पकड़ने छेलौं। काका बजला-

“नारद देवलोकोमे बास करै छला आ मर्त्तलोकमे सेहो घुमै छला।”

बजलौं-

“हँ, से तँ छेलाहे। देवलोक-सँ-मर्तलोक तक प्रतिदिन टहलै छला। मर्तलोकक संवाद देवलोकोमे पहुँचबै छला आ देवलोकक संवाद मर्तलोकोमे लोककेँ कहै छेलखिन।”

हमर बात सुनि विवेक विहारी काका भभा कऽ हँसला। हँसी रोकि बजला-

“बौआ श्याम, नारद पुराण पुरुष छैथ, माने पौराणिक पात्र। हुनक देल अमूल्य रत्न अछि। ओइ अमूल्य रत्नकेँ झाँपैक खियालसँ रंग-बिरंगक कथा गढ़ि झूठक झालि बजौनिहार चाटुकार सभ हुनका बदनाम करैत आबि रहल अछि।”

कक्काक बात सुनि अपनो मन ठमकल। ठमकैक कारण भेल जे अपने की बुझै छी आ काका की कहि रहला हेन..! बजलौं-

“से की काका?”

विवेक विहारी काका बजला-

“बौआ, नारद चौरासी टा विचार सूत्रक प्रतिपादन केलैन। जे चौरासियो सूत्र मनुखक जिनगीक चौरासी आसन छी, माने जीवन जीबाक चौरासी टा कला..!”

अखन तक जे नारदक प्रति अपन धारणा मनमे बनल अछि, ठीक ओकर विपरीत विचार विवेक विहारी कक्काक सुनि बजलौं-

“चौरासी आसन की कहलियै काका?”

विवेक विहारी काका बजला-

“अखनो गाम-घरमे लोकक मुहेँ सुनै छह कि नहि जे चौरासी आसनसँ जीवन चलैए।”

बजा गेल- “हँ, से तँ सुनै छी..!”

विवेक विहारी काका बजला- “यएह चौरासी आसनक सृजन नारद केने

छैथ। जेकरा घटिया कहक आकि झूठक झालि बजौनिहार चाटुकारक चाटुकारी कहक, ओही महत्वपूर्ण ज्ञानकेँ दबबाक षडयंत्र झूठ बजनिहार चाटुकारसभ सभ दिनसँ रचैत-करैत आबि रहल अछि आ अखनो रचै-बजैए।”

बजलौं-

“ऐ सँ झूठ बजनिहार चाटुकार सभकेँ की भेटै छै?”

विवेक विहारी काका बजला-

“अपन मरनमुख विचारकेँ जीवनमुख विचार बना समाजकेँ गुमराह करैत, माने धोखा दैत आबि रहल अछि। जइसँ समाज पथ-भ्रष्ट बनि जिनगीक स्वस्थ पथसँ विमुख भऽ दिशाहीन होइत आबि रहल अछि।”

कक्काक विचार सुनि अपनो मनक मैल, माने अज्ञानता जेना कमए लगल तहिना भक् खुजि गेल।

❑❑❑

❑❑

❑ रहै जोकर परिवार (2020), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 58-61

“ज्ञान कर्मक बीच उपासना सेहो अछि। हम तूँ उपासक बनि दुनूकेँ जोड़िये ने उपासना कऽ सकै छह। जेकरा कियो भक्ति, कियो शक्ति, कियो जीवन लीला, कियो कर्मकारी जीवन इत्यादि अनेको शब्दसँ अनुगृहीत करैए।”

अखन तक जे मनमे छल जे सुनीति काका बाइत गेल छैथ से भरिसक झुठे जानकारी छल। ओना, सुनीति कक्काक भोरुका विचार छेलैन तँए चाह पीबैसँ नाकर-नूकर करब नीक नहि बुझि चुपचाप दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैसैत बजलौं- “काका, सात दिनसँ गाममे नहि छेलौं! तेहेन काजक ओझरीमे फँसि गेल रही जे मने-मन होइ छल जे सरस्वती पूजामे गाम आएल हएत की नइ...।”

तैबीच एकटा कप, थर्मश आ पानि भरल लोटा नेने सुनीति काका लगमे आबि चौकीपर बैसैत पुछि देलैन- “पानियोँ पीबह?”

भोरुका अहार छी तँए किछु छोड़ब उचित नहि बुझि मुड़ी डोलबैत कहलयैन- “हँ।”

लोटा आगू दिस बढ़ा देलैन आ अपने थर्मशसँ चाह कपमे ढारलैन। छुच्छे आग्रहक परिपाटी अपना समाजमे अछिए। ओही परिपाटीकेँ निमरजना करैत बजलौं- “काका, हमहींटा पीब आ अपने?”

सुनीति काका बजला- “कोनो कि पुष्टाइक वौस छी जे अनेरे दोहरा-दोहरा पीबी।”

ओना, अपन भीतुरका मन छल जे जेते गप-सप्प हएत तेते बाइत जाएबक खुलासा सेहो हएत। मुदा पहिलुके जकाँ सुनीति काका अपन विचारकेँ समयानुसार झुकबैत समीचीन उत्तर दैत रहला। सोल्होअना मन मानि गेल जे सुनीति काकाकेँ कियो अफवाह केलकैन अछि। जाबे चाह सठए-सठए ताबे कोठरीसँ पनबट्टी आनि अपने दोहरा कऽ जरदा खेलैन आ हमरा-ले पान

लगौलैन। भोरुका चाह-पान देखि मन हरैख गेल जे जखन चाह-पान आगूमे आबि गेल तखन जे अनेरे मुँह लटकौने रही से नीक नहि। बजलौं- "काका, गामक तँ रूखिये बदैल गेल अछि!"

हमर बात सुनि आकि पैछला सालक सरस्वती पूजा मन पड़लैन तँए हँसला आकि की से तँ सुनीति काका जनता मुदा एतबे बजला- "नीक बात!"

सुनीति कक्काक मुँहक 'नीक बात' सुनि मन औनाए लगल। औनाए ई लगल जे की नीक! नीक मे नीक कि अधलामे नीक आकि नीक-अधलाक बीचक नीक? किछु भाँजेपर ने चढ़ल। ठिकिया कऽ पुछलयैन- "से की काका?"

सुनीति काका भौककेँ भौकियबैत बजला- "बौआ चलन्त, माघक शुक्ल पक्षक पंचमी दिन ज्ञान रूपी सरस्वतीक पूजा छीहे जे तैसंग धन स्वरूप लक्ष्मीक पूजा दिन सेहो छी। आइये कालक आराधना सेहो हेबे करत, यएह तीनूक जोग ने जिनगीमे वसन्त अनैए। मुदा एकर रूपेँ विकृत भऽ गेल अछि।"

एक संग सुनीति काका सभ बात कहलैन मुदा अपने नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पुछलयैन-

"की विकृत, काका?"

हमर बात सुनि सुनीति काका जेना विचारक बोनमे फँसि गेला तहिना बुझि पड़ल। ओना, मने-मन सुनीति काका विचारक गुत्थीकेँ सेहो सोझरा रहल छला मुदा जहिना ज्ञानकेँ विज्ञान बनैक बीचमे किछु व्यवधान होइत अछि तहिना मनमे भऽ रहल छेलैन। ओना, ज्ञानकेँ विज्ञान रूप बनैमे सभठाम व्यवधान होइते अछि सेहो बात नहियेँ कहल जाएत। मुदा नहि होइए सेहो तँ नहियेँ कहल जाएत। सेहो होइते अछि। जइ धरतीपर अखन ठाढ़ भऽ विचार कऽ रहल छी तैठाम हएब सोभाविके अछि। किए तँ जहिना सरस्वतीक अराध तहिना लक्ष्मीक अराध कठिन साध्यक साधना छीहे, जेकरा लोक बैलूनक खेलौना जकाँ खेलौना बुझि खेल रहल अछि मुदा तइसँ थोड़े अराधक फल भेटत। तखन तँ भेल मनकेँ बुझाएब। खाली मनकेँ बुझौनेसँ जीवन थोड़े चलि सकैए। ओइले जेतेक जइ तरहक साधनाक खगता अछि ओ पुरौला पछातिये ने कियो पेब सकैए।

सुनीति काका बजला- "बौआ चलन्त, जँ एक्केटा काजक बात रहैत तँ उत्तर

देब असान छल मुदा ऐठाम तीन तरहक विचारक जोग भेला पछातिये ने विकृत्ति सुकृत्ति बनि सकैए। मुदा..?"

बजलौं- "मुदा की?"

सुनीति काका बजला- "बौआ चलन्त, जहिना सरस्वती पूजनक कृत्तिक वृत्तिमे कुवृत्ति पकड़ने जाइए जेकरा सुवृत्ति बना सुकृति करब असान नहि, तहिना लक्ष्मियोक पूजन आ कालोक गतिमे भऽ रहल अछि, तैठाम धाँइ-दे किछु बाजब जल्दबाजीए ने हएत।"

ओना, सुनीति कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छेलौं, मुदा बजैक क्रममे बाजब उचित नहि बुझि चुपे रहलौं। तहूमे सुनीति काका अपने मुहेँ कबुलियो रहला अछि जे 'तीनू जोगक क्रममे धाँइ-दे किछु बाजब जल्दबाजीए हएत।' ओना पेटमे तेतेक रास विचार जागि गेल जे बिना बजने नइ रहल गेल। बजलौं- "केना भऽ रहल अछि?"

सुनीति काका सरस्वतीक रूप वर्णन करैत धाराप्रवाहमे तेना बाजए लगला जे मनमे हुअ लगल ठीके भातीज कहने छल जे 'सुनीति बाबा बाइत गेला..!' सुनीति काका बजबो करैथ आ हमरा आँखियो दिस तकैथ। बिच्चेमे बजा गेल- "काका, निचेनमे सभ बुझब। आइ सरस्वती पूजाक संग लक्ष्मी पूजा सेहो छी आ तैसंग वसन्तक जन्म दिन सेहो; आइयेसँ ने लोक अपनो वसन्ती जिनगीक वसन्तक रंग चढ़ौत। तँए समैयक अभाव अछि। झटपटमे किछु कहि दियौ।"

सुनीति काका बजला- *"ज्ञान कर्मक बीच उपासना सेहो अछि। हम तूँ उपासक बनि दुनूकेँ जोड़िये ने उपासना कऽ सकै छह। जेकरा कियो भक्ति, कियो शक्ति, कियो जीवन लीला, कियो कर्मकारी जीवन इत्यादि अनेको शब्दसँ अनुगृहीत करैए।"*

की बजितौं, चुपे रहलौं।

❑❑❑

❑❑

❑ **हारल चेहरा जीतल रूप (2020), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 51-54**

“बुच्ची, बोने-बोन जे पूर्वज कन्हापर लग्गी नेने नरभक्षी बोनैया जानवरो आ बोनैया मनुखोसँ अपन रक्षा करैत जखन जीवन निमाहलैन तखन अपना सभ तँ एकैसमी शदीक लोक भेलौं किने।” सुदिष्ट कक्काक विचारकेँ परिचायिका कोन रूपेँ केते बुझलक से तँ वएह बुझत; मुदा विचारक प्रवाहमे बाजल- “से तँ भेबे केलौं।”

“चारि बजे भोरेसँ गाममे घुमि-घुमि सभकेँ श्रृंखलामे भागीदार बनैले जानकारी दइ छिऐन।”

परिचायिकाक बात सुनि सुदिष्ट काका बजला- “कथीक श्रृंखला छी?”

तैबीच आगिक ताउ पेब परिचायिकाक मन सेहो थोड़ेक गरमा कऽ नरमा गेल। बाजल-

“काका, दहेज कानूनी अपराध छी तँए ओकरे आन्दोलन मानव श्रृंखलाक रूपमे हएत।”

ओना, परिचायिकाक बात सुनि सुदिष्ट कक्काक भीतुरका मन थोड़ेक ठहकलैन। मुदा तेकरा भीतरेमे रखलैन। ठहकलैन ई जे ई आन्दोलन तँ ओकर भेल जेकर मुद्दा छी। माने जेकरा ऊपर दहेजक भार अछि। अपने तँ ऐ मुद्दासँ बहरा गेल छी। किए तँ बेटा-बेटीक बिआहक प्रक्रियाक विषय दहेज भेल। अपने तँ पाँचो बेटा-बेटीक बिआह बिना दहेजक केनहि छी, तखन अपन मुद्दा किए हएत। मनक खुशीकेँ मनेमे रोकैत सुदिष्ट काका बजला-

“दहेज जखन कानूनी अपराध छी तखन तँ कानूनी मुद्दा भेल, तइले ते कोट-कचहरी आ थाना-पुलिस अछिए। कानूनकेँ जन-जन अपना हाथमे लिअए एहेन तँ बेवस्था नहियेँ अछि।”

बाल-बोध परिचायिका, बाल-बोधक माने भेल बोध ओकर बच्चा छै उम्र तँ

बीस सालसँ ऊपरे छइ। जेते बात प्रचार करैले आदेश भेटल छेलै, तेतबे बुझै छल। बीचमे घूर धधकने परिचायिका टनैक सेहो गेल, जइसँ मन काजपर नाचए लगलै। ठाढ़ होइत बाजल- "काका, तीन दिन आउरो एहेन तबाही अछि, चारिम दिनसँ ते फेर निचेने-निचेन रहब।"

बाल-बोध परिचायिकाकेँ सुदिष्ट काका की कहितैथ तँए मुस्कुराइत बजला-

"बुच्ची, अपना सबहक पूर्वज जे रिसी-मुनी छेला ओ माघक जाड़केँ केना पछाड़ने रहथिन से बुझल छह?"

सुदिष्ट कक्काक अभ्यंतर मनमे छेलैन जे थोड़ेकाल जँ आरो घूर लग बैसत तँ जाड़सँ लड़ैक आरो खोराक भेट जेतै, जे नीकोमे आर नीके ने हएत।

बाल-बोध परिचायिका बाजल- "नइ! नहि।"

सुदिष्ट काका बजला- "बुच्ची, आब बैसबह कथीले, ठाढ़े-ठाढ़ सुनि लएह। भने घूरो धधकले अछि।"

विचारक जिज्ञासा कि आगिक आकर्षण आकि काजक खानापुरी परिचायिकाक मनमे की उठल से तँ वएह जानत मुदा सुदिष्ट कक्काक मन कहलकैन जे विचारकेँ तेना ओझरा कऽ बाजब जे पनरह मिनट ओकरा सोझरा कऽ बुझैयेमे परिचायिकाकेँ लगतै, तही बीचमे टनगरो भऽ जाएत।

ने धधकल घूर परिचायिकाकेँ छोड़ए चाहै छल आ ने परिचायिका अपनाकेँ छोड़ा पेब रहल छल। संयोगक लाभ उठबैत परिचायिका बाजल-

"काका, अहाँक जे बात-विचार आ बेवहार अछि; ओ गामक केते लोकमे अछि। भरि दिन वौआइ छी तखन कहुना-कहुना कऽ घरक निमरजना होइए। तहूमे जुआन-जहान भेलौं, ने असगर चलब बनैए आ ने बिना चलने काज चलैए।"

परिचायिकाक मनक विवसता देखि सुदिष्ट कक्काक अपने मन गवाही दैत कहलकैन, अपन साधक बात तँ नहियेँ अछि मुदा विचार करैबला तँ अछिए। बजला-

"बुच्ची, अपन पुरखा सभ–माने महिला जगत, कन्हापर लग्गी नेने असगरे बोने-बोन सुखल जारैन तोड़ि कऽ अनै छेली, जइसँ भानसो करै छेली आ पूस माघक शीतलहरी सन समैयोसँ मुकाबला करै छेली।"

जेना केकरो नव बात वा नव विचार वा नव घटना कानमे पड़िते कान ठाढ़ होइए तहिना परिचायिकाक कान ठाढ़ भेल। परिचायिकाक चेहरा देखि सुदिष्ट काका आँकि लेलैन जे जे बात कहलिऐ ओकर असर भरिसक परिचायिकाक मनमे भऽ रहल छइ। मुदा मुहसँ किछु निकैल नहि रहल छेलइ। तँए, खोरियबैत सुदिष्ट काका बजला- "बुझलह कि नहि?"

"कनी-मनी।"

परिचायिकाक 'कनी-मनी' बुझबसँ सुदिष्ट काका अपन विचारकेँ संचरित करैत पूर्ण-मणि दिस धकेलैत बजला-

"बुच्ची, बोने-बोन जे पूर्वज कन्हापर लग्गी नेने नरभक्षी बोनैया जानवरो आ बोनैया मनुखोसँ अपन रक्षा करैत जखन जीवन निमाहलैन तखन अपना सभ तँ एकैसमी शदीक लोक भेलौं किने।"

सुदिष्ट कक्काक विचारकेँ परिचायिका कोन रूपेँ केते बुझलक से तँ वएह बुझत; मुदा विचारक प्रवाहमे बाजल-

"से तँ भेबे केलौं।"

बाल-मन आ एकान्त मन ओहन मन होइए जइमे दुनियाँक हवो-पानि प्रवेश नहि कऽ पबैए, मुदा जँ प्रवेश करैए तँ ओ मन मणि बनि जीवन भरि चमकैत रहैए। अनुकूल परिस्थिति देखि सुदिष्ट काका अपन बोनैया विचारसँ आगू ससरैत घरैया बनि बजला- "बुच्ची! पूस-माघक समय छी, अखन ओकरा छोड़ि दोसर-तेसर दिस समय गमाएब जिनगी गमाएब भेल। तँए अखन जे समय अछि से बुझि लएह।"

सुदिष्ट कक्काक विचार जेना परिचायिकाक मनकेँ जोतल-चौकियाएल चौमास जकाँ जे बीआक मांग करैत रहैए तहिना परिचायिकाक मन सेहो विचारवान बनैक बीजक मांग करए लागल। बाजल- "की बुझैले कहलौं काका?"

परिचायिकाक जिज्ञासासँ भरल प्रश्न सुनि सुदिष्ट काका बजला-

"अपन पूर्वज माघ सन समयकेँ धैर्जक संग तेना मुकाबला करै छला जे एक दिन खटियेने बिसवासक संग बजै छला जे 'गेल माघ उनतीस दिन बाँकी।"

'गेल माघ उनतीस दिन बाँकी' सुनि परिचायिका अक-बका चारू दिस ताकए लगल, ई की भेल..! तीस दिनक मास (महीना) होइए तइमे एक दिन बीतने

सोल्होअना माघ केना खेप गेल जे शीतलहरीसँ लोक बँचि जाएत।

ओना सुदिष्ट काका मने-मन मानि गेला जे जेतेकाल परिचायिकाकेँ अँटका पूर्णरूपेँण ओकरा ऐगला काज करै-जोकर बनबए चाहै छेलौं से तँ बनि गेल। किए तँ जैठाम अपन विचार पनरह मिनट अँटका घूर तपबैक छल, तैठाम बीस मिनटसँ बेसीए भऽ गेल...।

सुदिष्ट कक्काक विचारमे मोड़ एलैन। मोड़ अबैक कारण भेलैन जे कम्मो वेतनक नोकरी वेचारीक किए ने हौ; मुदा जँ कियो ऊपरबला आगि लग बैस गप-सप्प करैत देखत तँ अनेरो बेचारीकेँ फज्झैत करतै, तइसँ नीक जे अपने विचारकेँ किए ने समेट ली। बजला-

“बुच्ची, अनसोहाँत जकाँ विचार जरूर अछि जे एक दिन बीतने महिना केना मानल जाए, आब कि कोनो रिनिया-महाजनक जुग रहल जे एको दिन बीतने भरि मासक सुइद लैत। बैंकोबला सभ पनरहे दिन मानने अछि। तीस दिन छोड़ि पनरहे दिनक सुइद लइए। अपन पूर्वज अपना सभकेँ एक दिनक महत ऐ रूपेँ कहने छैथ जे जेकरा एक दिन माघ सन जाड़ माने गरुगर समय काटैक लूरि भऽ गेल ओ एक माघकेँ के कहए जे जिनगीक सइयो माघ काटि सकैए।”

सुदिष्ट कक्काक विचार सुनि परिचायिकाक चैन जेना चमैक उठल तहिना रोमांचित भऽ गेल। सुदिष्ट काका बिना किछु बजने ने परिचायिकाकेँ जाइले कहलखिन आ ने आगूक कोनो विचार सुनैले कहलखिन; मुदा आँखिक नोरकेँ नजैरिक पानि जरूर बुझलखिन। परिचायिको जेना उन्मत भऽ गेल हुअए तहिना बिना किछु बजने आगू बढ़ि गेल।

❑❑❑

❑❑

❑ **कृषियोग (2020), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 78-82**

“भाय साहैब, जखन रावणक बध दशहरेमे भऽ गेल तखन राम किए दिवाली मनबैक आशामे बीस दिन धरि बैसल रहला। देखै छी जे राताराती शासनो बदलैए आ सूत्रो तँ बदैलते अछि।”

“किसुन, पहिने लोक दिवाली पाबैन दिन घर-आँगनक नीपिया-पोतिया करै छला, घर-दुआरक अगुआर-पछुआरकेँ छील-बना, घुर लगा जरबै छला जइसँ अगुआर-पछुआरक माछी-मच्छर मरै छल। दिआरीमे साफ वस्त्रक बाती बना शुद्ध गोटक तेल दऽ दिआरी जरबै छला जइसँ स्वच्छ-पवित्र हवा बनै छल। मुदा आब तँ जेतबो शुद्ध हवा अछि तेकरो लोक छुड़छुड़ी जरा फटक्का फोरि दुरिये कऽ दइए, तखन पौत की? जखन किछु पेबे ने करत तखन पाबैन की भेल?”

ओना, एकटा कान रूपलाल भाइक विचारपर ठाढ़े छल मुदा दोसर कान मुँहक जे मौलपन छेलैन तैपर मनसँ प्रेरित भऽ रहल छल। जइसँ विचारक बीच मन तकै छल जे रूपलाल भाय अपने बात बाजि रहला अछि आकि गामोक। गाम तँ सबहक छी, सभकेँ करैयोक अधिकार छै आ धड़ैयोक तँ छइहे। औगुताइमे बजा गेल- “भाय साहैब, अही दुआरे तँ हम वस्ती छोड़ि अहाँ ऐठाम आबि गेलौं हेन। लोककेँ तेहेन ऊध चढ़ि गेलै हेन जे के कखन की कऽ देत तेकर कोनो ठेकान छइ।”

हमर बात सुनि रूपलाल भाय बजला तँ किछु नहि मुदा मुड़ी डोलबए लगला। तही बीच भौजी–रूपलाल भाइक पत्नी–दूटा प्लेटमे मखान नेने पहुँचली। दुनू प्लेट हमरा दुनू गोरेक हाथमे पकड़बैत आँगन चल गेली। बजलौं-

“भाय साहैब, जखन रावणक बध दशहरेमे भऽ गेल तखन राम किए दिवाली मनबैक आशामे बीस दिन धरि बैसल रहला। देखै छी जे राताराती शासनो बदलैए आ सूत्रो तँ बदैलते अछि।”

हमर बात सुनि रूपलाल भाय मने-मन मुस्कुर करए लगला जइसँ मुँहक रूखि तँ उत्तर पबै-जोकर बुझि पड़ल मुदा बाजैथ किछु ने। रहल-सहल अप्पन नजैर करखनो रूपलाल भाइक चेहरापर नाचए लगल तँ करखनो अकास दिस तरेगन गनए लगल, मुदा हमहूँ बाजी किछु ने। थोड़ेकालक पछाइत रूपलाल भाय मुँह खोललैन- "किसुन, अपना सभ सोझे दिवाली पाबैन प्रकाशक पाबैन बुझै छी मुदा असलमे ई छी विजिया लक्ष्मी पाबैन।"

रूपलाल भाइक बात सुनि अपन मन 'विजिया दसमी'पर चलि गेल, कोनो भाँजे ने बैस रहल छल जे 'विजिया दसमी' की भेल आ 'विजिया लक्ष्मी' की भेल।

जेते विचारकेँ सोझरबए चाहै छेलौं तेतेक ओझरा जाइ छल। तँए ओझरी देखि मन विचलित हुअ लगल। फेर लगले ईहो हुअए जे ओझरीकेँ नीक जकाँ सोझरबैक लूरि नइ हएत तँ ऐ धरतीपर जीविये केते दिन सकै छी?

मन ततमताइते छल कि बिच्चेमे रूपलाल भाय दोहरी ढार दैत बजला-

"किसुन, अपना सभ ते दशमुहेँ रावणक बधक विचारपर अँटकल छी, हजरमुहाँ रावण तँ जीविते अछि!"

रूपलाल भाइक बात सुनि मन आरो घोर-घोर होइत मट्ठा-मट्ठा हुअ लगल। मनकेँ असथिर करैत बजलौं- "भाय साहैब! जाए दियौ, जखन राम-नामक लूटे भऽ रहल अछि तँ हुअ दियौ। अपना सबहक लिये तँ यएह गाम ने सभ किछु छी। अपन गामक चिन्तन-मनन करब आ ओइ अनुकूल बना कऽ चलबे सँ ने गामोक आ अपनो कल्याण हएत।"

हमर बात रूपलाल भायकेँ जेना नीक लगलैन तहिना बजला- "बेस विचारक बात बजलह किसुन।"

'बेस विचारक बात बजलह किसुन' कहि रूपलाल भाय चुप भऽ गेला। जखन कि कनखैर-कनखैर आगूक बात सुनए चाहि रहल छेलौं मुदा रूपलाल भाय किछु आगू बजिये ने रहल छला।

मनमे ईहो उठि रहल छल जे रूपलाले भायटा गाममे एहेन लोक छैथ जिनकामे जीवन्तता छैन। कहैले सौंसे गाम किसानेक छी मुदा अधिकांश किसान ओहन छैथ जे लकीरक फकीर भेल छैथ। किछु नव उठाइनिक जे

किसान छथियो हुनका आगू-पाछू पुरानपंथ ठाढ़ भेल करवनो धोतीक कोंचा पकैड़ आगू-मुहेँ घीचै छैन तँ करवनो पाछूए धकैल दइ छैन। विषम स्थिति बनल अछि। केना सुधरत, ई तँ सभ सुधारकक सोझामे अछिए। खाएर जे अछि, एते तँ अछिए जे राजा-सँ-रंक धरि सभ कहिते अछि जे 'हम किसान वंशक छी!'

रूपलाल भायमे जीवन्तताक मुख्य लक्षण ई छैन जे सभ दिन किछु-ने-किछु नवपन दिस विचारो आ काजो हुनकर बढ़ैत रहै छैन। गाममे जखन-करवनो कोनो आफद-असमानी अबैए तँ सभसँ बेसी नोकसान रूपलाले भायकेँ होइ छैन...।

विचारकेँ आगू बढ़बैत बजलौं- "भाय साहैब, लोकक मुँहक सुनलाहा बात बजलौं। देखिते छिऐ जे गाममे जेते लोक अछि ओते रंगक बातो बजैए मुदा ओ सुनि-सुनि कऽ खाली बजबेटा करैए, करनी बेरमे मरनी लगि जाइ छै, जइसँ करनीक विचारे मरल छइ।"

हमर बात जेना रूपलाल भाइक मनकेँ छुलकैन तहिना एक्केबेर आँखि, मुँह, कान सभ उठा हमरा दिस ताकए लगला।

रूपलाल भाइक घनघनाइत घन देखि अपन मन बिहुसि उठल- जे आब घनघोर घटा घटबे करत। अपनो मनकेँ ओही रूपेँ थाम्हि लेलौं जइसँ सहनशीलक संग सहनशीलता सेहो आबि गेल। ऑखि उठा रूपलाल भाइक मुँहपर दइते रही कि रूपलाल भाय बजला-

"किसुन, तीन मासक जे बाढ़िक झमार गाममे पड़ल तेकर भुक्तभोगी जहिना अपने छी तहिना ने आनो सभ छैथ। तूँ नोकरी करै छह तँए तोहर...।"

रूपलाल भाइक विचारक धारमे अपनो मन भँसि भेल, जइ कारण भरियाइत मुहसँ बिच्चेमे बजा गेल- "भाय, ऐ तीन मासमे कोनो करम किनको बाँकी थोड़े रहल।"

हमरा रोकैत रूपलाल भाय बजला- "किसुन, तीन मासक जे रामा-खटोला बाढ़िक भेल, ओकरा अखन बिसैर जाह, आगू जे नोकसान हएत तइ दिस ताकह।"

रूपलाल भाइक बात कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं।

आगू की नोकसान हएत तैपर मन अँटैक गेल। बजलौं- “की नोकसान कहलिऐ भाय साहैब?”

रूपलाल भाय बजला-

“अखन तक अपना ऐठामक किसान धानक दाही-जरती मात्र बुझै छैथ। होइतो अहिना अछि जे सौन-भादोमे बाढ़ि आएल, धानक फसल दहाएल आ कातिक अबैत-अबैत खेत सुखि गेल, जइमे रब्बी-राय, तीमन-तरकारीक खेती भऽ गेल। जइसँ किसानी जिनगी पुन: क्रियाशील भऽ जाइ छल। मुदा ऐबेर से नइ हएत, धानक संग-संग जाड़ोक मौसमक फसल सभ मरा जाएत!”

रूपलाल भाइक बात सुनि जेना भक्क खुजल तहिना मुहसँ निकलल-

“भाय, तखन तँ सालक दू मौसम नष्ट भेल!”

हमर बात सुनि रूपलाल भाय मुस्कुराइत बजला-

“बौआ किसुन, जे जागत ओ पौत आ जे नहि जागत तेकर तँ बुझू भगवाने मालिक...।”

बजैत-बजैत रूपलाल भाय बिच्चेमे चुप भऽ गेला! आगू बजैसँ परहेज केलैन आकि डरा गेला से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। मन भेल जे दोहरा कऽ खरिआरि कऽ पुछि लिऐन। मुदा रातियो किछु बेसी भऽ गेल आ गामक चहल-पहल सेहो शान्त भऽ गेल छल। कहलयैन-

“भाय, आब जाइ छी।”

उत्साहित करैत रूपलाल भाय बजला- “हँ-हँ, जाह! आब कालीपूजाक समय सेहो भेल जाइए।”

❑❑❑

❑❑

❑ **पसेनाक मोल (2019), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 56-60**

“बौआ, गामक विकसित रूप शहर छी। अपना सभ गाममे छी जे अविकसित अवस्थामे अछि। सभ आगू बढ़ए चाहैए, वएह इच्छा भेल जीवनक विकासक लीलसा। गाम-समाजक लोकक संग शहरो-बजारक लोककेँ सदैत आगू बढ़ैक इच्छा सभकेँ रहिते अछि। तँए गामसँ शहर दिस बढ़ैक हजारो बाट अछि, तैठाम हम केना कहि सकै छिअ जे तोरा-ले कोन बाट नीक हएत।”

तीन साल–तीन बैच–बिलमसँ कौलेजक परीक्षा चलैत देखि अप्पन क्लास समाप्त भेला पछाइत दरभंगासँ गाम आबि गेलौं। डेराक हिसाब-बाड़ीक संग दोकानो-दौड़ीक हिसाब-बाड़ी आ संगी-साथीसँ जे किताबो आ नोटोक लेन-देन छल से सभ फरिछा कऽ गाम आबि गेल छेलौं।

गाम एलाक परात भने असगरे दरबज्जाक ओसारक कोठरीमे बैसल अपन जिनगीक विचार करए लगलौं जे आगू की करैक अछि। तीन सालक पछाइत परीक्षा हएत, ताबत अपन नोकरीक आयु सेहो समाप्त भऽ जाएत। एक तँ ओहुना आइ.ए.मे एक बरख, बी.ए.मे दू बरख, नियमित परीक्षा नै भेने तीन बरख समय चलि गेल, तैपर एम.ए. करैत-करैत तीन बरख आरो चलि जाएत। उमेरक संग नोकरी सेहो चलि जाएत, किए तँ नोकरीक जे आयु निर्धारित अछि ओ पार कऽ जाएत। विचित्र स्थितिमे जीवन पड़िये गेल अछि..!

मनमे रंग-बिरंगक विचार चलिये रहल छल कि अपने मनमे उठल- ‘केकरा कहबै आ के पुरौत, अपन जिनगी छी तँए अपने ने सोच-विचार करैये पड़त।’ एकटा कि हमहींटा छी जे एहेन समस्यामे पड़ल छी आकि हमरा सन-सन हजारो विद्यार्थी अछि। हजारो कि जे पूरा युनिवर्सिटीए-मे सभ

अछि।

एक तँ ओहुना पढ़ैमे मन नइ लगैए, किए तँ निसचित समय रहने ने नीक जकाँ–जमि कऽ–परीक्षाक तैयारी करितौं, समयपर परीक्षा होइत, नीक जकाँ पास करितौं...। से तँ अछि नहि, आइ जे याद करब ओ किछुए दिनक पछाइत बिसैर जाएब, फेर ओहिना-क-ओहिना रहि जाएब..!

आगू दिसक रस्ता देखी तँ सेहो मरियाएले बुझि पड़ए। अखुनका तँ सहजे दू सालसँ एम.ए.क क्लास केलौं, परीक्षाक कोनो ठेकान ने अछि जे कहिया हएत कहिया नहि। तइ बीचमे जकथक भेल बैसलो रहब नीक नहियेँ हएत। कोनो गर किम्हरो देखिये ने पेब रहल छेलौं...।

ओना, पढ़ै-लिखैक नाओंपर माइयो-बाबू अखन धरि मुँह बन्ने रखने छैथ। आन जकाँ भरि दिन कहा-कही नहियेँ होइए, मुदा अपनो तँ आब सियान भेलौं, बिआहो-दुरागमन भइये गेल, जइसँ परिवार सेहो बढ़िये गेल अछि...।

विचारक धक्का जेना मनमे जोरसँ लागल। धक्का लगिते बर्खाक पानि वा खत्ता-खुत्तीक वा पोखैरक पानिमे जहिना कोनो चिड़ै नहा कऽ पाँखिक पानि झाड़िते उड़ैक उपक्रम करैए तहिना मनमे उठल जे जखन मनुखक शक्लमे छी तखन देह-हाथ मारि–निष्क्रिय बनि–जीबो तँ जीवन नहियेँ छी, तँए पहिने जीवनकेँ चिन्ह-जानि कऽ पकड़ैक अछि, नहि तँ जहिना सभ वौआइ-ढहनाइए तहिना वौआएब-ढहनाएब...।

वौआएब-ढहनाएब..! जँ स्कूल-कौलेज नइ देखने रहितौं तखन जँ वौऐतौं तँ थोड़े क्षम्य सेहो छल मुदा आइ बाइसम बरख छी अखन तक स्कूले-कौलेजमे जीवन बीतल आ तखन जँ अपनो जीबै-जोकर लूरि-बुधि नइ भेल तइमे केकर दोख..?

मन विसाइन-विसाइन हुअ लगल। अनायास ग्लानि सेहो मनमे उपकल। ग्लानि उपैकते मन तुरुछ होइत विचार देलक जे केकरो किछु ने कहबै, खाली माए-बाबूकेँ कहबैन जे तीन साल परीक्षा होइमे देरी अछि, तैबीच एकबेर कोलकातासँ भऽ अबै छी। जँ कोनो जोगार नोकरीक लागि गेल तँ बड़बढ़ियाँ, नहि तँ तीन बरख कहुना बितबैक अछिए। भेल तँ परीक्षा दइले छह मास कड़कड़ा कऽ मेहनत करब, पार-घाट लगिये जाएत।

मनमे कोलकाता अबिते धीरेन्द्र भायपर नजैर गेल। करीब पनरह बर्खसँ धीरेन्द्र भाय कोलकातामे रहि रहला अछि। गामसँ जहिया गेला तहियासँ आइ धरि एकोबेर गाम नहि एला। सुनै छी जे ओइठाम ओ माने कोलकातेमे धीरेन्द्र भाय, कमा-खटा कऽ जीबै-जोकर ओकाइत परिवारमे सेहो बना लेलैन आ एते विचार मनमे अखनो रखनहि छैथ जे गामक जे कियो हुनका ऐठाम जाइ छैथ तँ जहाँ धरि भऽ पबै छैन तहाँ धरि रहैयो, खाइयो-पीबैक आ नोकरियोक गर लगैबते छैथ। मन मानि गेल जे काल्हि गामसँ कोलकाताक लेल विदा भऽ जाएब। खेतसँ पिताजी आबि दरबज्जापर बैसबे केलाह कि कहलयैन- “बाबू, परीक्षा होइमे तीन साल अखन बाँकी अछि, तँए मनमे होइए जे कलकत्ता जाइ।”

जहिना कहलयैन तहिना पिताजी चुपचाप सुनि लेलैन, मुदा लगले किछु बजला नहि। मने-मन जेना किछु सोचए-विचारए लगला आकि की से तँ ओ जानैथ मुदा कनियेँकालक पछाइत बजला-

“आब तँ तोहूँ जवान भेलह, पढ़ल-लिखल सेहो छहे, तैबीच जँ पुछलह तँ यएह ने कहबह जे अपना-ले तँ अपने ने सोचबह।”

ओना, अपना जनैत पिताजी बातक उत्तर देबामे कसैर नइ रखलैन मुदा खुलियो कऽ तँ नहियेँ कहलैन जे कोलकाता जाएब जीवनक लेल नीक हएत कि अधला। मुदा संजोग बनल, तैबीच माइयो दरबज्जापर पहुँचली।

माएकेँ देखिते मनमे भेल जखन पिताजीक आगू अपन विचार रखि चुकल छी तखन वएह ने माइयोकेँ कहथिन। मुदा लगले ईहो भेल जँ कहीं पिताजी नहि कहथिन तखन की करब? ओना, तैबीच अपन मुँह सोल्हन्नी बन्ने रखलौं।

जहिना अपन मुँह बन्न छल तहिना पिताजी सेहो अपन मुँह बन्ने रखने छला, जइसँ चुपा-चुपी पसरले छल। अपन चुपी तोड़ैत बजलौं- “माए, परीक्षामे तीन बरख देरी अछि, तैबीच एक बेर कलकत्तासँ भऽ अबितौं।”

ओना, अपने इशारामे बाजल छेलौं माने ई जे ‘नोकरी करए कोलकाता जाएब’ आकि ‘घुमि-फिरि कऽ चलि आएब’ से स्पष्ट नहि छल। माए बजली-

“बौआ, समय-साल देखिते छहक जे बेकता-बेकतीक खर्च बढ़ने परिवारक खर्च केतेक बढ़ि गेल अछि, एकरा पुराएब तँ परिवारे-लोकक ने काज भेल।

मुदा बेटा-बेटीक प्रति मातो-पिताक दायित्व तँ एतेक अछिए जे जीवनक एक खाड़ी–सीढ़ी–टपा कऽ छोड़ियै, माने ई जे जिनगीक चारि अवस्थामे पहिल अवस्था माने भेल जे पढ़ा-लिखा, बिआह-दान करा दिऐ। जइसँ मनमे एते बिसवास तँ बनियेँ जाइए जे अपन दायित्वक निर्वहन नीक जकाँ पूर्ति भऽ गेल।"

बजलौं- "माए, कौलेजक पढ़ाइ ने पुरि गेल मुदा परीक्षा होइमे तीन साल समय आरो लागत, तइ बीचक जे खाली समय अछि तइमे कलकत्ता जाए चाहै छी।"

अपन जवाबदेहीक भार हटबैत माए बजली-

"अखन तँ खरिहाँनक मेहक खुट्टा जकाँ बाप जीविते छथुन, हुनकासँ पुछि लहुन।"

दुनू दिसक छिड़ियाएल विचार समटा कऽ एकठाम भऽ गेल। ओना, अपना जनैत अपनो विचार स्पष्ट नहियेँ केने छेलौं जे पढ़ाइयक की करब। तैबीच पिताजी बजला-

"एक-एक छन समैयक मोल अछि, तँए हरछनकेँ सही उपयोग करबे बुधिमत्ता भेल। जखने कियो बुधिमत्तासँ जिनगीक गाड़ी खिंचए लगैए तखने ओकर जिनगीक गाड़ी पटरीपर चलए लगै छइ।"

एते तँ अपनो बुझिते छी जे पढ़ाइ-लिखाइक पछाइत लोक परिवारक भरण-पोषण लेल उद्यमी बनिते अछि, तखन तँ भेल जे घरमे रहि–स्वावलम्बी जीवनक रस्ता पकैड़–भरण-पोषण करी आकि घरसँ बाहर जा कऽ...। ओना, घरो आ बाहरोक बीच दोहरी प्रश्न अछिए। पहिल ई जे गामोमे रहि लोक दोसरक नोकरी वा चाकरी करैए आ बाहरमे सेहो करिते अछि। पाँचटा महानगर देशमे मानल जाइए। तइमे कोलकाता सभसँ पुरानो आ सभसँ नम्हरो अछिए। मुदा पाँचो महानगर एक देशक महानगर रहितो पाँचो महानगरक जीवन शैली–माने मनुखकेँ जीबैक दिशा–भिन्न-भिन्न अछिए। एहेन भिन्न-भिन्न जीवन शैली पाँचो महानगरे-टाक अछि सेहो बात नहियेँ अछि, गाम-गाम, घर-घरक बीच सेहो अछिए। मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे पिताजीक स्पष्ट विचार नहि बुझि, बजलौं- "की कहै छी। अहाँक की विचार अछि?"

‘कहैक’ माने भेल आदेश, आ ‘विचार’क माने भेल सुझाव देब। दुनू दू तरहक अछि। ..जहिना माए अपन भार हटबैत पिताजीपर थोपलैन तहिना पिताजी अपन भार समाजपर थोपैत बजला-

“बौआ, गाममे सृष्टगर लोक आनन्द भाय छैथ, ओ तोहर जेठ पित्तीए भेलखुन तँए हुनकोसँ एकबेर पुछि लहुन। अपना मनमे सभ दिनसँ अछि जे गरीबी कि अमीरी धनसँ अछि, समाजमे जेते विद्याक आगमन हएत तेते अविद्या-विद्याक बीच रग्गड़-झग्गड़ होइत बदलाव हएत, माने परिवर्त्तन हएत।”

बजलौं- “बड़बढ़ियाँ।”

सभ दिन साँझूपहरमे आनन्द काका अपन भरि दिनक जिनगी उसारि निचेनसँ गप-सप्प करैत आबि रहला अछि। यएह सोचि गहबरिया कहाली जहिना अपन नीक होइ दुआरे दिनगरे-साँझमे डाली लगबैए तहिना अपनो मनमे भेल जे पहिलुके साँझमे गेलासँ एते तँ हेबे करत किने जे जँ गप-सप्प करैक नम्बर-सिस्टम रखने हेता तँ अगुआएल नम्बर रहत।

आनन्द कक्काक ऐठाम पहुँचलौं। आनन्द काका चाह पीब पान खाइ छला। हमरा देखिते आनन्द काका बजला- “बौआ, पान तोंहूँ खेबह किने?”

आनन्द कक्काक बात सुनि मन सकुचा गेल। सकुचाइते विचार उठल जे चाहक जोड़ी पान छीहे, मुदा आनन्द काका जखन चाह पीब लेलैन तेकर पछाइत पहुँचलौं, तँए चाह छोड़ि पानक आग्रह केलैन तँ उचिते केलैन...।

मन पाछू दिस उनैट गेल। मनकेँ उनैटते नजैर पानपर गेल। अदौसँ पानक प्रशस्ति रहल अछि, मुदा समाजक केतेक लोक पान खाइ छैथ? अखन धरि यएह ने होइत आबि रहल अछि जे समाजक किछु गनल-गुथल लोक खाइ छला, आब हुनको ऐगला पीढ़ी दाँत टुटै दुआरे आकि रंगाइ दुआरे कि की से तँ ओ बुझता, मुदा पान खाएब छोड़िये रहला अछि। ओना, अखनो मिथिलाक गाममे एहेन आचार-विचार बनले अछि जे कोनो अमल–चाह-पान, खैनी-बीड़ी, सिगरेट इत्यादि–अपनासँ श्रेष्ठजन लग शिष्टजन खाइ-पीबैसँ परहेज करिते छैथ। बजलौं- “काका, पान नइ खाइ छी।”

ठीके, पान खाइतो नइ छी जे बजैक क्रममे सेहो बजाइये गेल, मुदा लगले

मन पलैट कहलक- फूल-फल-पानसँ अपना ऐठाम पूजा होइत आबि रहल अछि, अपनो होइए, तैठाम पान...।

पानपर सँ आनन्द काका धियान हटबैत बजला- “बौआ! की परिवारक हाल-चाल अछि?”

निधोख बजलौं-

“काका, एम.ए.क पढ़ाइ तँ सम्पन्न भऽ गेल, मुदा परीक्षा तीन साल पछुआएल अछि। तैबीच कलकत्ता जेबाक विचार भऽ रहल अछि।”

विचारक अन्तिम कड़ीकेँ कनी कपैच बजलौं। किए तँ अपनो बुझल अछिए जे बुधिमान-ले इशारा काफी। भलेँ विचारक धारमे किए ने अपन मन भँसियाइत होइन...। मुदा आनन्द काकाकेँ से नइ भेलैन। बजला-

“बौआ, गामक विकसित रूप शहर छी। अपना सभ गाममे छी जे अविकसित अवस्थामे अछि। सभ आगू बढ़ए चाहैए, वएह इच्छा भेल जीवनक विकासक लीलसा। गाम-समाजक लोकक संग शहरो-बजारक लोककेँ सदैत आगू बढ़ैक इच्छा सभकेँ रहिते अछि। तँए गामसँ शहर दिस बढ़ैक हजारो बाट अछि, तैठाम हम केना कहि सकै छिअ जे तोरा-ले कोन बाट नीक हएत। तोंहू अपना मनमे ऐ बातकेँ रखि विचार करिहह आ हमहूँ करब। परसू साँझमे दुनू गोरे विचारैत निर्णय कऽ लेब।”

ओना, आनन्द काका अपना जनैत किछु बाँकी नहियेँ रखलैन मुदा अपना बुझि पड़ल जे जीवनक नमहर जाल काका आगूमे पसारि देलैन। परसुका समय देलैन, अपन जाइक विचार कौल्हुके बना नेने छी, तँए नीक की हएत..?

❑❑❑

❑❑

❑ गामक आशा टुटि गेल (2019), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 07-13

"छिऐ। तोरा जकाँ की हम कहियो बमैबला छौड़ा सेने तँ कहियो डिल्लीबला छौड़ा सेने वौआइ छी। एक चुरूक पानिमे डुमि कऽ मरि जेमे से नइ, तीमन चिक्खी नहितन..! जहिना सात घरक तीमन चिक्खै छँए तहिना सातटा मुनसा देखै छँए। हमर परतर सातो जिनगीमे हेतौ? जेकरा संगे बाप हाथ पकड़ा देलक, सहि-मरि कऽ तइ घरमे छी। छुछुनैर कहीं-के! आगि लगा-ले ऐ फुललाहा देहमे..!"

भिनसुरके उखड़ाहा। करीब नअ बजैत। पूब-मुहेँ घुमि मरनी गिट्टी फोड़ैत रहए। तैबीच पच्चीस-तीस बर्खक सुगिया माथ उघारने, छपुआ बनारसी साड़ी आ ओही रंगक आँगी पहिरने, घुमौआ केश सीटि जुट्टी लटकौने, मोजा लगा कऽ एँड़ीदार चप्पल पहिरने, मुँहमे पान-साए नम्मर पत्ती देल पान खेने, प्लोथिनमे नूनक पौकेट, करूतेलक शीशी, मसल्लाक पुड़िया आ साबुन लेने हाथमे लटकौने आबि लगमे ठाढ़ भऽ मरनीक मेहनत आ बगए देखि दिल खोलि मने-मन हँसए लगल।..मरनी गिट्टी फोड़ैमे मस्त, किएक किम्हरो ताकत।

..सुगियाक हृदयक खुशी मुहसँ हँसी होइत निकलए चाहैत, मुदा मुँहक पानक पीत ठोरक फाटककेँ बन्न केने, तँए पानक पीत फेकब सुगियाकेँ जरूरी भेलइ। जइ पजेबाक ढेरीपर बैस मरनी गिट्टी बनबैत रहए ओही ढेरीपर सुगिया अपन भरल मुँहक पीत फेक देलक। पीतक दू-चारि बून मरनीक देहोपर पड़लै। देहपर पड़िते ओ उनैट कऽ तकलक। टटका पीत चक-चक करैत। कनडेरिये आँखिए मरनी सुगियाक मुँह दिस तकलक। सुगियाकेँ पान चिबबैत देखि मरनीक मनमे आगि पजैर गेलइ। पजेबाक ढेरीपर सेहो नजैर पड़लै, सौंसे थूक पड़ल देखलक। आब केना गिट्टी फोरब, ढेरियो आ देहो अँइठ कऽ देलक! ..आँखि गुड़ैर कऽ मरनी सुगियाकेँ

कहलक- “गइ रनडिया, तोरा सुझलौ नै जे ढेरीपर थूक फेकलें?”

गरीब मरनीक कटाह बात सुनि सुगिया तमैक कऽ उत्तर देलक- “तोरे बान्ह छियौ जे हम थूक नै फेकब।”

सुगियाक बोलकेँ दबैत मरनी बाजल- “एतेटा बान्ह छै, तइमे तोरा केतौ थूक फेकैक जगह नइ भेटलौ जे ऐठाम फेकलें।”

सुगिया- “जदी एतै फेकलिऐ तँ तूँ हमर की करमें?”

मरनी- “की करबौ। आँइ गइ निरलज्जी, तोरा लाज होइ छौ जे सात पुरखाकेँ नाक-कान कटौलही। जेहने कुल-खनदान रहतौ तेहने ने चालि चलमें।”

सुगिया- “अपन देह-दशा नइ देखै छीही!”

मरनी- “की देखबै। ई देह बोनिहारनिक छिऐ। तोरा जकाँ की हम कहियो बमैबला छौड़ा सेने तँ कहियो डिल्लीबला छौड़ा सेने वौआइ छी। एक चुरूक पानिमे डुमि कऽ मरि जेमे से नइ, तीमन चिक्खी नहितन..! जहिना सात घरक तीमन चिक्खै छँए तहिना सातटा मुनसा देखै छँए। हमर परतर सातो जिनगीमे हेतौ? जेकरा संगे बाप हाथ पकड़ा देलक, सहि-मरि कऽ तइ घरमे छी। छुछुनैर कहीं-के! आगि लगा-ले ऐ फुललाहा देहमे..!”

मरनीक बातसँ सुगिया सहैम गेल। मनमे डर पैस गेलै जे हो-ने-हो कहीं मारबो ने करए। मुँह सकुचबैत मुड़ी गोंति विदा भेल।

..सुगियाकेँ जाइत देखि मरनी साड़ीक खूटसँ तमाकुल-चुन निकालि चुनबए लगल। मुदा तैयो मन असथिर नइ भेलइ। मुड़ी उठा-उठा सुगियो दिस देखै आ मने-मन बजबो करए- “देह केहेन सीटने अछि, उढ़ड़ी। जेना रजा-महराजाक बौह हुअए! हाथ-पैरमे लुलही पकड़ने छैन जे कमा कऽ खेती। जेहने छुछुनैर छौड़ा सभ तेहने छौड़ी सभ।”

तमाकुल खा मरनी ईंटा फोड़ैले घुमल कि दादी-दादी करैत पोता दौगल आबि दुनू हाथे दुनू कान्ह पकैड़ पीट्ठीपर लटैक गेल। पाछूसँ पोतियो एलइ। पोताकेँ कोरामे उठा मुँहमे चुम्मा लऽ पोतीकेँ कहलक-

“दाइ, बौआकेँ रोटी नै देलही। दुनू गोरे चलि जाउ, मोरामे रोटी रखने छी, लऽ कऽ दुनू गोरे खा लेब। हम अखन काज करै छी। कनी कालमे आबि कऽ भानस करब।”

पोता-पोती, आँगन दिस विदा भेल। पूब-मुहेँ घुमि कऽ मरनी गिट्टी फोड़ए लगल।

चारिटा बन्दूकधारी बड्डी-गार्डक संग सड़कक ठीकेदार उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ सड़क देखैत जाइ छला। आगू-आगू ठीकेदार पाछू-पाछू बन्दूकधारी। ठिकेदारक नजैर मरनीपर पड़लैन। मरनीपर नजैर पड़िते ठिकेदारक डेग छोट हुअ लगलैन। ठिकेदारक आँखि मरनीपर अँटैक गेलैन। डेग तँ आगू-मुहेँ बढ़बैत रहैथ मुदा आँखिक ज्योति हृदयमे ढुकि कऽ हड़बड़बए लगलैन। मनमे जेना अन्हड़-तूफान उठए लगलैन। जइसँ मने-मन विचारए लगल जे जेकरा कमाइपर हमरा चारिटा बड्डी गार्ड अछि, करोड़ो-अरबोक आमदनी अछि, तेकर ई दशा! ओ तँ हमर ओहेन समांग जे कमासुत अछि, ओहेन तँ नहि जे ऐश-मौजक जिनगी बना कमेलहे सम्पैतकेँ भोगैए। मुदा अँटकला नहि। आगू-मुहेँ बढ़िते रहला। किछु दूर आगू बढ़लापर जेना मरनीक आत्मा आगूसँ रोकि देलकैन तहिना बिच्चे सड़कपर ठीकेदार ठाढ़ भऽ गेला। ठाढ़ भऽ एकटा सिपाहीकेँ अढ़ेलखिन- “ओइ गिट्टी फोड़निहारिकेँ कनी बजौने आउ?”

ठीकेदारक बात सुनि एकटा सिपाही मरनी दिस बढ़ल। मरनी लग जा कहलक- “मालिक बजबै छथुन, चलही?”

गिट्टी फोरब छोड़ि मरनी उनैट कऽ सिपाही दिस तकलक। सिपाहीकेँ देखि मने-मन सोचए लगल, ने हम कोनो ममिलामे फँसल छी आ ने कोनो बैंकक करजा नेने छिऐ, तहन किए हमरा सिपाही बजबैए...।

मन सक्कत करि मरनी बाजल-

“तूँ नै देखै छहक जे अखन हम काज करै छी। जेकर बोइन लेबै ओकर काज नै करबै। अखन जा। काजक बेर उनैह जेतै तब एबह।”

मरनीक बात सिपाहियो आ ठीकेदारो सुनलैन। एक-दोसरकेँ देखि आँखि निच्चाँ कऽ लेलैथ। ठीकेदारक मन पीपरक पात जकाँ डोलए लगलैन। करवनो मरनीक इमानदारीपर तँ करवनो ओकर अवस्थापर। जइ देशक श्रमिक श्रममे एते बिसवास करैए ओइ देशक विकास जँ बाधित अछि तँ जरूर केतौ-ने-केतौ संचालनकर्तामे बेइमानी छइ। ई बात मनमे अबिते ठीकेदार अपना दिस घुमि कऽ तकला तँ अपन दोख सामनेमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन।

सिपाही कड़ैक कऽ मरनीकेँ कहलक- “नै जेबही तँ पकैड़ कऽ लऽ जेबौ?”

सिपाहीक गर्म बोली सुनि मरनी बाजल- “तोहर हम कोनो करजा खेने छिअ जे पकैड़ कऽ लऽ जेबह। अपन सुखलो हड्डीकेँ धुनै छी, खाइ छी।”

मरनीक बात सुनि सिपाहियोक मन उनटए-पुनटए लगलै। एक दिस मालिकक आदेश दोसर दिस मरनीक विचार। आखिर, एहेन लोकक बीच एहेन सक्कत विचार अबैक कारण की अछि? अनका देखै छिऐ जे खाली सिपाहीक वर्दी देखि डेरा जाइए, भलेँ ओ सरकारक सिपाही नहियोँ रहए। मुदा हमरा तँ सभ किछु अछि तैयो ऐ बुढ़ियाकेँ डर नै होइ छइ।

..फेर मनमे एलै, हम किछु छी तँ नोकर छी मुदा ई किछु अछि तँ स्वतंत्र बोनिहारिन। स्वतंत्र देशक स्वतंत्र श्रमिक। जे देशक अधार छी। आखिर देश तँ एकरो सबहक छिऐ।

सिपाहीकेँ ठाढ़ देखि ठीकेदारे पाछू ससैर कऽ मरनी लग एला। मरनियोँ सभकेँ देखैत आ मरनियोकेँ सभ। ठीकेदार मरनीक आँखिपर अपन नजैर देलैन। नजैर पड़िते मरनीक आँखिमे सुरुजक रोशनी जकाँ प्रखर ज्योति देखलैन। ललाटसँ आत्म-बिसवास छिटकैत देलखैन।..मधुर स्वरमे ठीकेदार पुछलखिन- “चाची, अहाँक परिवारमे के सभ छैथ?”

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक आँखिसँ नोर खसए लगल। मोन पड़ि गेलै अपन पति, बेटा आ पुतोहुक मृत्यु। टघरैत नोरकेँ आँचरसँ पोछि बाजल- “बौआ, हमर घरबला, बेटा आ पुतोहु ठनकामे मरि गेल। अपने छी आ पिलुआ जकाँ दूटा पोता-पोती अछि।”

“बच्चा सभ स्कूलो जाइए?”

“नहि। एक तँ गाममे स्कूल नइ छइ। तहूमे पहिने गरीब लोकक धिया-पुताकेँ पेट भरतै तब ने जाएत। ने भरि पेट अन होइ छै आ ने भरि देह बस्तर, ने रहैक घर छै, तहन इसकूल केना जाएत।”

मरनीक बात सुनि ठीकेदार सहैम गेला। मने-मन सोचए लगला, जे आँखिक सोझमे देखै छिऐ ओ झूठ केना भऽ सकैए। एते भारी काज केनिहारक देहपर कारी खट-खट कपड़ा छै, तोहूमे सैयो चेफड़ी लागल, काज करै-जोकर उमेर नइ छै, तैपर एते भारी हथौरी पजेबापर पटकैए..!

ठिकेदारक मन दहैल गेलैन। जहिना अकास आ पृथ्वीक बीच क्षितिज अछि, जैठाम जा चिड़ै-चुनमुनी लसैक जाइए, तहिना ठीकेदारक मन सुख-दुखक बीच लसैक गेलैन। जेना सभ किछु मनक हेरा गेलैन तहिना सुन्न भऽ गेला। ने आगूक बाट सुझैत रहैन आ ने पाछूक। मरनीसँ आगू की पुछब से मनमे रहबे ने केलैन। साहस बटोरि पुछलखिन- “भरि दिनमे केते रूपैआ कमाइ छी?”

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक मनमे झड़क उठलै। बाजल- “केते कमाएब! जेहने बैमान सरकार अछि तेहने ओकर मनसी छइ। चारि दिनमे एकटा पजेबा ढेरी फोड़ै छी तँ तीन-बीस रूपैआ दइए। तइसँ तीन तूरक पेट भरत? भरि दिन ईंटा फोड़ैत-फोड़ैत देह-हाथ दुखाइत रहैए मुदा एकटा गोटियो कीनब से पाइ नै बँचैए।”

ठिकेदारक आँखिमे नोर आबि गेल। मनुखता जागि गेल। मुदा ई मनुखता केते काल जिनगीमे अँटकत? जिनगी तँ उनटल अछि।

❑❑❑

❑❑

❑ **गामक जिनगी (2009), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 77-82**

पढ़ल-लिखलसँ मुरुख धरिक विचार एहेन बनि
गेल अछि जइमे नीक विचारकेँ सन्हिआइए नै देल
जाइए। कहलो गेल छै जे ‘असगर ब्रहस्पतियो फूसि।’
तेतबे नहि, जेकरा कल्याणक जरूरत अछि ओहो नीक
रस्ता धड़ैले तैयारे नहि! ‘जेकरा-ले चोरि करी सएह कहए
चोरा।’ की करबै जँ सिरिफ वैचारिके स्तरपर संघर्ष होइ तँ
संघर्ष कएल जा सकैए मुदा तेतबे नइ अछि। जिनगीक
क्रियामे उपद्रव जे करैए से तँ करबे करैए जे जानोसँ खेल-
बार करैमे नै चुकैए। अभिजात वर्ग एते सशक्त बनि गेल
अछि जे जहिना कोनो साँढ़-पारा पाँकमे चलै काल
फँसि जाइए आ परोपट्टाक नढ़िया, कुकुरक संग
गीध, कौआ आबि-आबि जीबतेमे आँखि
फोड़ि-फोड़ि खाए लगै छै, तहिना इमानदार
मनुखोक संग होइए। मुदा हारि मानैले
ने हम तैयार छी आ ने मानब..!

केराक घौर बीचमे राखल आ सभ कियो हाथ बगने। जुगेसर सोचैत जे तेते खेने छी जे पेटमे जगहे ने अछि, नहि तँ सौंसे घौर खा जैतिऐन।

रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ कहलखिन-

“अखने, एक घन्टा पहिने भोजन केलौं, तँए खाइक क्षुधा नइ अछि। मुदा ब्रह्मचारी आश्रमक परसाद छी तँए दू छीमी जरूर खाएब।”

कहि दूटा छीमी ऊपरका हत्थासँ तोड़ि खेलैन।

रमाकान्तकेँ देखि महेन्द्रो आ जुगेसरो दू-दू छीमी तोड़ि खेलैन। श्यामा हाथ बगने चुपचाप बैसल छेली। श्यामाकेँ हाथ बागल देखि ब्रह्मचारीजी बजला-

“बहिन, अहाँ जइ दुआरे हाथ बगने छी ओ हमहूँ बुझै छी। मुदा अपन मिथिलामे दुनू चलैन अछि। पति आगूमे पत्नीकेँ नै खाएब आ बिआहक प्रकरणमे समाजक माए-बहिन मिलि मौहक करै छैथ, जइमे पति-पत्नीकेँ संगे खुऔल जाइए। तँए अहूँकेँ लजेबाक नै चाही। ई तँ सहजे आश्रम छी। दोसर धर्म स्थान सेहो छी।”

ब्रह्मचारीजीक विचार सुनि श्यामाक मन डोललैन, मगर बेवहार मनकेँ रोकिते छेलैन। तैबीच असमंजसमे श्यामाकेँ देखि जुगेसर फनैक कऽ बाजल-

“काकी, जखन हमरा घरनीकेँ हाथ ढेकीमे कटि गेल रहैन, तखन हम अपने हाथे खुअबै छेलिऐन। अहाँ तँ सहजे वृद्ध भेलौं।”

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मुड़ी झूका लेलैन। दू छीमी केरा श्यामो खेलैन। चारू गोरे केरा खा हाथ-मुँह धोलैन।

ब्रह्मचारीजी रमाकान्तकेँ पुछलखिन-

“ऐठाम अपने केना-केना एलिऐ?”

महेन्द्रकेँ देखबैत रमाकान्त बजला-

“ई जेठ बेटा छैथ। डॉक्टरी पढ़ि नोकरी करए ऐठाम चलि एला। सालमे एक बेर अपनो गाम जाइ छैथ। बाल-बच्चा आ स्त्री आइ धरि गाम नइ गेलखिन। ओहो सभ अहीठाम रहै छैथ। दुनू परानीक मनमे आएल जे देशो-कोस आ बच्चो सभकेँ देखि आबी तँए एलौं?”

महेन्द्र दिस देखि ब्रह्मचारीजी बजला- “केते दिनसँ ऐठाम छी?”

कनी कल गुम्म रहि समय मोन पाड़ि महेन्द्र बजला-

“ई बाइसम बर्ख छी।”

“एते दिनसँ ऐठाम रहै छी मुदा कहियो भेँट-घाँट नै भेल?”

अपन विबसता देखबैत महेन्द्र उत्तर देलखिन- “एक तँ नोकरी करै छी, तैपर डॉक्टरी एहेन पेशा अछि जे भरि मन कहियो अरामो नै कऽ पबै छी। घुमनाइ-फिरनाइक कोन बात। मुदा तैयो कहुना समय निकालि ऐबो करितौं से बुझले ने छल।”

“आइ केना एलौं?”

“चारिम दिन रामेश्वरम् गेल रही, ओइठाम एकटा पुजेगरी अपनेक सम्बन्धमे कहलैन।”

महेन्द्रक बात सुनि ब्रह्मचारीजी मुस्कियाइत बजला- “मासमे एक बेर हमहूँ रामेश्वरम् जाइ छी। समाज-रूपी समुद्रक कातमे स्थापित रामेश्वरम लग जा समुद्रमे उठैत लहैरकेँ धियानसँ देखबो करै छी आ विचारबो करै छी। दुनू तरहक लहैर समुद्रमे उठैए- नीको आ अधलो। नीक लहैर देखि मन प्रसन्न होइए आ अधला देखि मन जरए लगैए। मुदा तैयो सोचैत रहै छी जे अधला लहैर बेसी उग्र नै हुअए आ नीक लहैर सदिखन उठैत रहए।”

ब्रह्मचारीजीक विचार जेना महेन्द्रक सुतल बुधिकेँ जगा देलकैन। अनासुरती महेन्द्रक मनमे उठलैन- अन्हार-सँ-इजोतमे आबि गेलौं, कि इजोते-सँ-अन्हारमे चलि गेलौं?

विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। जइ रूपमे माए-बाप आ जुगेसरकेँ अखन धरि देखै छला ओ बदलए लगलैन। बीचसँ उठि महेन्द्र गाछी दिस टहैल गेला। ब्रह्मचारीजी बुझि गेलखिन।

तैबीच रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन-

“अपने मिथिला छोड़ि ऐठाम किए आबि गेलौं। जखन कि ई इलाका दोसर धर्म, दोसर संस्कृति आ दोसर जातिक छी?”

मुस्कियाइत ब्रह्मचारीजी कहए लगलखिन- “कोनो जाति, पंथ आकि संस्कृतिक अधार होइ छै जिनगी। जिनगीक अधार होइ छै मनुखक बुधि, विचार आ कर्म। जखने मनुख अपन सुपत कर्मसँ जिनगी ठाढ़ करैए तखने धर्म, संस्कृति, विचार आ आचार सभ किछु बदैल, सही मनुखक निर्माण करैए। जेकरा हम महामानव, धर्मात्मा आ उच्च कोटिक मनुख बुझै छी, जे मिथिलांचलमे क्षीण भऽ रहल अछि! ओना, सोलहन्नी मरल नइ अछि मुदा दबाइत-दबाइत दुब्बर भऽ गेल अछि। मिथिलाक जे मूलबासी छैथ हुनका सभकेँ अभिजात वर्ग वा कही तँ परजीवी वर्ण वा बाहरी लोक आबि सभ किछुकेँ बदैल एहेन सामाजिक ढाँचामे ढालि देलकैन जे अदौसँ अबैत संस्कृतिकेँ दाबि अभिजात-संस्कृतिकेँ बढ़ा देने अछि। जिनगीक सच्चाइकेँ दाबि बनौआ जिनगीमे बदैल देने अछि। जइसँ लोकक जिनगी

वास्तविकतासँ हटि वौआ गेल अछि। ओना, निर्मूल नष्ट नै भेल अछि मुदा एतेक क्षीण जरूर भऽ गेल जे नीक-अधलाकेँ बेराएब कठिन अछि। हम सभ मनुखकेँ मनुख बुझै छी। ने कियो कारी अछि आ ने कियो गोर। मुदा जिनगीक ढाँचा एहेन बनि गेल अछि जे स्पष्ट रूपमे एक-दोसरसँ पैघ आ छोट बनि गेल अछि आ बनलो जा रहल अछि। ओना, देखबै तँ बुझि पड़त जे सभ एक दोसरसँ पैघ आ एक-दोसरसँ छोट अछि। मगर मकड़ा जकाँ अपने पेटसँ सूत निकालि अपनेसँ जाल बुनि, ओइमे सभ ओझरा गेल छैथ।"

ब्रह्मचारीजी आँखि बन्न केने बजिते छला कि बिच्चेमे रमाकान्त पुछि देलखिन- "अपने तँ प्रकाण्ड पण्डित छी तखन मिथिलाकेँ किएक छोड़ि ऐठाम चलि एलौं?"

रमाकान्तक दोहराएल प्रश्नपर ब्रह्मचारीजी गम्भीर होइत बाजए लगला-

"अहाँक बात हम मानै छी, मुदा पढ़ल-लिखलसँ मुरुख धरिक विचार एहेन बनि गेल अछि जइमे नीक विचारकेँ सन्हिआइए नै देल जाइए। कहलो गेल छै जे 'असगर ब्रहस्पतियो फूसि।' तेतबे नहि, जेकरा कल्याणक जरूरत अछि ओहो नीक रस्ता धड़ैले तैयारे नहि! 'जेकरा-ले चोरि करी सएह कहए चोरा।' की करबै जँ सिरिफ वैचारिके स्तरपर संघर्ष होइ तँ संघर्ष कएल जा सकैए मुदा तेतबे नइ अछि। जिनगीक क्रियामे उपद्रव जे करैए से तँ करबे करैए जे जानोसँ खेलबार करैमे नै चुकैए। अभिजात वर्ग एते सशक्त बनि गेल अछि जे जहिना कोनो साँढ़-पारा पाँकमे चलै काल फँसि जाइए आ परोपट्टाक नढ़िया, कुकुरक संग गीध, कौआ आबि-आबि जीबतेमे आँखि फोड़ि-फोड़ि खाए लगै छै, तहिना इमानदार मनुखोक संग होइए। मुदा हारि मानैले ने हम तैयार छी आ ने मानब..! मुदा जहिना नव सुरुजक संग नव दिनक शुरूआत होइत तहिना नव मनुख नव जिनगी बनबैक दिशामे बढ़ैए, तँए संतोख अछि।"

रमाकान्त- "अपनेक परिवारमे के सभ छैथ?"

ब्रह्मचारी-

"पिता गिरहस्त छला। पनरह बीघा खेत रहैन। ओइ खेतकेँ माता-पिता दुनू

परानी उपजबै छला, जइसँ परिवार नीक जकाँ चलै छेलैन। ओना, रौदी-दाही होइते छेलै मुदा तैयो सहि-मरि कऽ ओहीसँ गुजर करै छला। हम दू भाँइ छी। घरे लग नवानी विद्यालयमे हम पढ़लौं, किछु दिन लोहना पाठशालामे सेहो पढ़लौं। हमर छोट भाए बच्चेसँ पिताजीक संग खेती करै छला। नै पढ़लैन। माइयो आ बाबूओ मरि गेला। हम बिआह नै केलौं। भाएकेँ बिआह करा सभ किछु छोड़ि अपने घरसँ निकैल गेलौं। मनमे छेलए जे जइ कुरीति, कुबेवस्था आ कुचालिमे मिथिलाक समाज फँसल अछि ओकरा सुधारि सुरीति, सुबेवस्था आ सुचालि दिस लऽ चली। तइ पाछू लगि गेलौं। मुदा वेबस भऽ छोड़ि चलि एलौं। कारण ओइठामक निआमक आ निआमकक पाछू पढ़ल-लिखल लोक छैथ जे अपनाकेँ बुधियार बुझै छथिन तिनका लगा अभिजात लोकैन सभ, मनुखक साँचकेँ ओहन बना देने छैथ, जइसँ कुपात्र छोड़ि सुपात्रक निर्माणे ने होइत। जेकरा चलैत छीना-झपटी, बलतकारी, चोरी, छिनरपनी, जातीय उन्माद, धार्मिक उन्माद वा ई कहियौ जे मनुख बनैक जेते रस्ता अछि ओ सभटा नष्ट भऽ गेल अछि! सबहक जड़िमे सम्पैत घुइस कऽ काज कऽ रहल अछि। जइ पाछू पड़ि सभ बताह भऽ गेल अछि। सभसँ दुखद बात तँ ई अछि जे नीक-सँ-नीक, पैघ-सँ-पैघ आ विद्वान-सँ-विद्वान धरि बजता किछु आ करता किछु! जइसँ समाजक बीच सत बजनाइए मेटा गेल अछि! एहेन समाजमे नीक लोकक रहब केना सम्भव हएत? तँए छोड़ि कऽ पड़ा गेलौं। देहक सुखक पाछू सभ आन्हर भऽ गेल अछि।”

ब्रह्मचारीजीक बात सुनि रमाकान्तकेँ धनक प्रति मोह भंग हुअ लगलैन।

❑❑❑

❑❑

❑ **मौलाइल गाछक फूल (2009), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 78-82**

Notes